मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग ११

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(ग्यारहवाँ भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७

सर्वाधिकार सुरक्षित

चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : ७५-००

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अनुक्रम

दो शब्द ... २

१ 'शाबर-मन्त्र'-सम्बन्धी एक पत्र ... १०

श्री नवीनचन्द्र जोशी, हल्द्वानी, नैनीताल (उ. प्र.)

२ ज्योतिष के परिप्रेक्ष्य में शाबर मन्त्र ... १३

श्री बचुभाई डी. जोशी, जामनगर (गुजरात)

३ जन-कल्याणार्थ शाबर मन्त्र ... १७

पं. रामशङ्कर उपाध्याय, आथर, बक्सर (बिहार)

[१ कामाक्षा-मन्त्र, २ अक्षय धन - प्राप्ति मन्त्र, ३ बल-प्राप्ति का मन्त्र, ४ विद्या - प्राप्ति मन्त्र, ५ विद्या-स्मरण-मन्त्र, ६ नौकरी - प्राप्ति - मन्त्र, ७ महा - लक्ष्मी - मन्त्र, ८ अनायास धन-प्राप्ति, ९ विघ्न-नाशक, १० आय बढ़ाने का मन्त्र]

४ छत्तीसगढ़ के शाबर मन्त्र ... २३

श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा, बिलासपुर (म. प्र.)

[१-५ शत्रु-नाशक मन्त्र, ६-७ टोना-मन्त्र, ८ टोना लगाने का मन्त्र, ९ टोना फूंकने का मन्त्र, १० मूठ चलाने का मन्त्र, ११ शत्रु को देवी में चढ़ाने का मन्त्र, १२ बाण चलाने का मन्त्र, १३ बाण झारने का मन्त्र, १४ घर बाँधने का मन्त्र, १५ अभिचार-रक्षक शाबर-मन्त्र, १६ पेट-पीड़ा-नाशक मन्त्र, १७ उच्चाटन-मन्त्र, १८ मूठ बाँधने का मन्त्र, १९ सिद्ध वशीकरण - मन्त्र, २० शूकर-दन्त-वशीकरण-मन्त्र, २१ कामिया सिन्दूर-मोहन-मन्त्र]

५ सर्प-दंश-विषयक नाथ-पन्थी मन्त्र ... ३३

श्री अनिल गोबिन्द बोकील, हडपसर, पुणे

६ बराटी-विद्या ... ३५

['बराटी-विद्या' का अन्तरङ्ग-पक्ष, 'वीर-कङ्कन', बनाने की विधि, वीर - कङ्कन - सिद्धि, शामरी

वीर, गगना-सगना-हनुमान वीर, चौधरी वीर, कान्होयी वीर का मन्त्र, वीर-साधना-विषयक अन्य जानकारी, भूल-सुधार]

७ विशेष शाबर मन्त्र ... ४३

श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर

[१ विपरीत-चालन-मन्त्र, २ वशीकर मन्त्र, ३ शत्रु-नाशक मन्त्र, ४ शत्रु-पीड़क मन्त्र, ५ मशान-कीलन-मन्त्र, ६ सर्व-कीलन-मन्त्र, ७ भूत-प्रेत को बाँधने का मन्त्र, ८ हनुमान जी का मन्त्र, ९ काल-भैरव का मन्त्र, १० पसली-डबका-मन्त्र, ११ मिरगी-दौरा झारने का मन्त्र, १२ हूक बन्द करने का मन्त्र, १३ हनुमत्-उपासना की सिद्ध धूप]

८ पीड़ा-रोग-नाशक शाबर मन्त्र ... ४७

[१ पीली तैंतिया, २ लाल तैंतिया, ३ बिच्छू, ४ थनैला रोग, ५ मिट्ठा रोग, ६ आधा शीशी, पञ्चदशी-यन्त्र]

९ श्रीहनुमान वशीकरण मन्त्र ... ५२

श्री त्रिलोकचन्द्र नावेड़ा, खाचरौद, उज्जैन (म.प्र.)

१० उपयोगी शाबर मन्त्र ... ५३

श्री अशोककुमार वर्मा, हीदा की मोरी, जयपुर (राज.)

[१ वशीकरण मन्त्र, सट्टा-लाटरी जीतने का मन्त्र, ३ सङ्कट से रक्षा का मन्त्र, ४ एक शाबर टोटका, ५-६ वशीकरण-प्रयोग]

११ पैंतीस अक्षरी मन्त्र ... ५९

स्वामी साधनानन्द जी, ऊधमसिंह नगर (उ. प्र.)

१२ शाबर-मन्त्र-सर्वस्व ... ६२

पं. अरुणकुमार मिश्र, मलसा, गाजीपुर (उ. प्र.)

[१ परी-सिद्धि-मन्त्र, २ परी-वशीकरण का मन्त्र, ३ रास्ता बाँधने का मन्त्र, ४ डाइन-धरा-मन्त्र,

५ कब्र-सिद्धि-मन्त्र, ६ बांस के कइन से चोर का नाम निकालने का मन्त्र, ७ चोर के नाम पर पनही चलाने का मन्त्र, ८ चोर बांधने का मन्त्र, ९ सर्प चलाने का मन्त्र, १० बार से साँप बनाने का मन्त्र, ११ प्रेत-नाश-विधि, १२ टोना झारने का मन्त्र, १३ प्रश्न का उत्तर पाने का मन्त्र, १४ अघोर काली मन्त्र, १५ औघड़ - सिद्धि का मन्त्र, १६ पीलिया झारने का मन्त्र, १७ भूत-पिशाच-शैतान की साबर-मन्त्र-विद्या, १८ अघोरी-मन्त्र, भूल-सुधार, कुछ स्मरणीय बातें]

१३ बाबा नानकदेव जी का मन्त्र ... ७०

श्री टी. सी. मलतान, बेतिया (बिहार)

१४ राशियों के शाबर मन्त्र ... ७२

श्री स्वामी साधनानन्द जी, ऊधमसिंह नगर (उ. प्र.)

१५ सरल शाबर-मन्त्र-संग्रह ... ७३-१५९

श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह, जामनगर (गुजरात)

(१) शान्ति करने के मन्त्र—१ अरिष्ट-शान्ति अथवा अरिष्ट - नाशक मन्त्र, २ सर्व-शुभ-दायक मन्त्र, ३ अशान्ति-निवारक-मन्त्र, ४ शान्ति, सुख-प्राप्ति-मन्त्र, ५ खेत में उपद्रव - शान्ति करने का मन्त्र, ६ रोग-शान्ति-मन्त्र, ७ निद्रा - शान्ति का मन्त्र, ८ सर्व - उपद्रव - शान्ति - मन्त्र, ९ मानव-रचित भय-शान्ति का मन्त्र, १० ग्रह-बाधा-शान्ति-मन्त्र, ११ देव-बाधा-शान्ति मन्त्र ।

(२) रक्षा-विधान—१ विविध रक्षा-कारक-मन्त्र, २ शरीर-रक्षा-मन्त्र, ३ स्व-रक्षा और रोग-निवारण मन्त्र, ४ स्थान-रक्षा मन्त्र (हिसार), ५ अभिचार-नाशक-मन्त्र, ६ विघ्न-बाधा-नाशक मन्त्र, ७ किए-कराए को दूर करने का मन्त्र ।

(३) आयु - वृद्धि, रोग - निवारक मन्त्र—
१ आयु-वृद्धिकर अथवा रोगादि-निवारक मन्त्र, २ प्रत्येक रोग से बचानेवाला मन्त्र, ३ रोग-मुक्ति अथवा आरोग्य-प्राप्ति का मन्त्र, ४ असाध्य रोग-निवारक मन्त्र, ५ बच्चों के रोगों का मन्त्र, ६ उदर-पीड़ा-निवारक मन्त्र, ७ पेट-पीड़ा-नाशक मन्त्र, ८ अजीर्ण - निवारक मन्त्र, ९ अतिसार-मन्त्र, १० वायु-रोग दूर करने का मन्त्र, ११ वायु-गोला - नाशक मन्त्र, १२ वायु-विकार-निवारक मन्त्र, १३ शरीर-पीड़ा-निवारक मन्त्र, १४ वात-व्याधि दूर करने का मन्त्र, १५ मोच या चोट का पीड़ा-निवारक मन्त्र, १६ चोट की पीड़ा दूर करने का मन्त्र, १७ घाव मिटाने का मन्त्र, १८ स्तन-पीड़ा-मन्त्र, १९ थनैली झारने का मन्त्र, २० डबका मन्त्र, २१ पसली का दर्द मिटाने का, २२ डब्बा - पसली झाड़ने का मन्त्र, २३ नेत्र-पीड़ा-निवारण, २४ आँख का फोला झाड़ने का मन्त्र, २५ रतौंधी झारने का मन्त्र, २६ नाभि-उखड़ने का मन्त्र, २७ ज्वर - नाशन - मन्त्र, २८ एकान्तर - ज्वर - निवारक मन्त्र, २९ सीया-ज्वर का मन्त्र, ३० कँपकपी बन्द करने का मन्त्र, ३१ तिजारी झारने का मन्त्र, ३२ तिल्ली झारने का मन्त्र, ३३ फोड़े - फुन्सी का मन्त्र, ३४ अर्श-नाशक मन्त्र, ३५ खूनी बवासीर मन्त्र, ३६ पागल कुत्ते का विष उतारने का मन्त्र, ३७ दन्त-रोग-निबारक मन्त्र, ३८ शिर - दर्द - निवारक मन्त्र, ३९ आधा - शीशी का मन्त्र, ४० कण्ठ - माला झाड़ने का मन्त्र, ४१ कखलाई का मन्त्र, ४२ कर्ण-पीड़ा - निवारक मन्त्र, ४३ कमर-पीड़ा-निवारक मन्त्र, ४४ नहरुआ झाड़ने का मन्त्र, ४५ मघबाय, ४६ रींघन बाय का मन्त्र, ४७ जँभुवे (जमोगा)

का मन्त्र, ४८ मिर्गी - मूर्च्छा - नाशक मन्त्र, ४९ अदीठ का मन्त्र।

(४) भूत-विद्या-विषयक मन्त्र—१ बलाओं को दूर करनेवाला त्रिविध-ताप-हर मन्त्र, २ डाकिनी-शाकिनी को बकुराने का मन्त्र, ३ डाकिनी-भक्षित का मन्त्र, ४ भूत - प्रेत दूर करने का मन्त्र, ५ प्रेतादि-बलाओं को दूर करने का मन्त्र और तन्त्र, ६ डाकिनी को मूड़ने का मन्त्र।

(५) कुटुम्बोपयोगी मन्त्र—१ पति - पत्नी के मेल का मन्त्र, २ गृह - कलह - नाशक मन्त्र, ३ विवाह और सन्तान-प्राप्ति का मन्त्र, ४ सन्तान-प्राप्ति के मन्त्र, ५ मृत - वत्सा - दोष (रोग)-निवारक मन्त्र, ६ काक - बन्ध्या - दोष - शान्ति, ७ बन्ध्या-गर्भ-धारण-मन्त्र, ८ लड़के पैदा होने का मन्त्र, ९ बच्चों को लगी हुई नजर दूर करने का मन्त्र, १० रूठी हुई स्त्री का वशीकरण, ११ भाग्योदय हेतु अनुभूत मन्त्र, १२ शरीर की कान्ति बढ़ाने का मन्त्र, १३ सांसारिक कठिनाइयों को दूर करने का मन्त्र, १४ आपत्ति-निवारक मन्त्र, १५ चिन्ता दूर करने का मन्त्र, १६ मच्छर - विष - निवारक मन्त्र, १७ मक्खी भगाने का मन्त्र, १८ कीड़े - मकोड़ों का विष-निवारक मन्त्र, १९ वाजीकरण मन्त्र, २० नपुंसकीकरण मन्त्र, २१ स्त्री-द्रावण मन्त्र, २२ शिश्न-दृढ़ीकरण मन्त्र, २३ योनि - दृढ़ीकरण मन्त्र, २४ वीर्य-स्तम्भन मन्त्र।

(६) किसानोपयोगी मन्त्र—१ खेत में उपज बढ़ाने का मन्त्र, २ खेत की फसल नष्ट करने का मन्त्र, ३ खेत के कीड़े नष्ट करने का मन्त्र, ४ अनाज में कीड़ा न पड़ने का मन्त्र, ५ औषधि फूलने-फलने का मन्त्र, ६ टिड्डी का मन्त्र।

(७) **पशु-पालन हेतु उपयोगी मन्त्र**—१ पशु-संरक्षण मन्त्र, २ पशुओं के रोगों को भगाने का मन्त्र, ३ पशु के कीड़ा झारने का मन्त्र, ४ गाय-भैंस के कीड़े झारने का मन्त्र, ५ गाय - भैंस का दूध न देना, ६ खोई हुई वस्तु, जानवर, व्यक्ति को पुनः प्राप्त करने का मन्त्र।

(८) **सर्वोपयोगी मन्त्र**—१ शूकर-चूहा भगाने के मन्त्र, २ चूहा विष - नाशक मन्त्र, ३ चूहे के विष-निवारण व ४ चूहे भगाने के लिए टोटके।

(९) **आर्थिक उन्नति हेतु मन्त्र**—१ वैभव-दायक मन्त्र, २ धन-प्राप्ति के मन्त्र, ३ व्यापारिक घाटे को दूर करने का मन्त्र, ४ व्यापार - वर्धक मन्त्र, ५ व्यापार द्वारा धन-प्राप्ति।

(१०) **कुछ सरल मन्त्र-प्रयोग**—१ नौकरी-प्राप्ति साधना, २ परीक्षा में सफलता हेतु साधना, ३ त्रिविध कष्ट - निवारक साधना, ४ जीविका-प्राप्ति साधना, ५ उन्नति हेतु साधना, ६ धन-प्राप्ति साधना, ७ दरिद्रता - निवारक साधना, ८ अनुकूल बनाने की साधना, ९ जरा - मृत्यु-निवारक साधना, १० अप-मृत्यु-योग-निवारक साधना, ११ खोए हुए वैभव को प्राप्त करने की साधना, १२ बन्धन - मुक्ति - साधना, १३ विद्या-प्राप्ति-साधना, १४ त्रिकाल-ज्ञान-प्राप्ति-साधना, १५ कवित्व - शक्ति - प्राप्ति - साधना, १६ स्वप्न द्वारा भविष्य जानने की साधना, १७ वचन-सिद्धि-साधना, १८ विजय-प्राप्ति-साधना।

(११) **स्वप्न-विषयक मन्त्र**—१ स्वप्न में उत्तर-प्राप्ति हेतु मन्त्र, २ दुःस्वप्न-निवारक मन्त्र।

(१२) **विविध देवी - देवता मन्त्र**—१ श्री-कालिका-मन्त्र, २ श्रीहनुमान-मन्त्र, ३ श्रीगणेश-

मन्त्र, ४ मनोकामना - पूरक मन्त्र, ५ धन-धान्य की वृद्धि का मन्त्र, ६ अक्षय भण्डार का मन्त्र, ७ उच्छिष्ट - यक्षिणी का मन्त्र, ८ मन - चाही वस्तुओं का मन्त्र, ९ ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र ।

(१३) **विशेष मन्त्र-प्रयोग**—१ हमजाद अथवा छाया-पुरुष की साधना, २ अल्लाह की मेहरबानी का मन्त्र, ३ योजन - गन्धा योगिनी का मन्त्र, ४ झोटिङ्ग का मन्त्र, ५ वीरु चेटक का मन्त्र, ६ धान्य - चेचक का मन्त्र, ७ धनदा - साधना, ८ वैताल - साधना, ९ रुद्र - साधना, १० गणेश-साधना, ११ कर्ण-पिशाच की साधना, १२ कर्ण-पिशाचिनी की साधना ।

(१४) **श्रीभैरव-मन्त्र**—१ श्रीभैरव - जञ्जीरा, २ श्रीभैरव-कृपा-प्राप्ति मन्त्र, ३ श्रीभैरव-सिद्धि मन्त्र, ४ श्रीभैरव-चेटक मन्त्र, ५ भैरव जी की चौकी फूंकने का मन्त्र, ६ अरिष्ट-निवारक भैरव-मन्त्र, ७ भय-निवारक भैरव-मन्त्र, ८ शिशु-बाधा-निवारक भैरव-मन्त्र, ९ सर्व - विघ्न - निवारक मन्त्र, १० सिद्धि-प्रदायक महा-काल मन्त्र ।

(१५) **विविध मन्त्र-प्रयोग**—१ शस्युत्थापन-चेटक, २ अन्न की राशि उड़ाने का मन्त्र, ३ पैसा उड़ाने का मन्त्र, ४ पैसा रोपने का मन्त्र, ५ ढाल रोपने का मन्त्र, ६ तलवार की धार बांधने का मन्त्र, ७ कड़ाही बांधने का मन्त्र, ८ हांडी बांधने का मन्त्र, ९ कागज की कड़ाही में पुआ उतारने का मन्त्र, १० तुरही बाँधने का मन्त्र, ११ क्षुधा-नाशन मन्त्र, १२ जुआ जीतने का मन्त्र व तन्त्र, १३ अचानक द्रव्य-प्राप्ति का मन्त्र ।

१६ ज्योतिष-क्षेत्र में नजर लगना ... १५६

श्री अरविन्द जोशी, प्रेमनगर कालोनी, इन्दौर (म.प्र.)

'शाबर-मन्त्र' सम्बन्धी एक पत्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री नवीनचन्द्र जोशी

शक्ति-सदन लेन, नवाबी मार्ग, जे. आ. भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी,
जनपद–नैनीताल (उ. प्र.)

आप द्वारा प्रकाशित 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के १० वें भाग के पृष्ठ ६२ पर छपे श्री शर्मा जी द्वारा प्रेषित छः शाबर-मन्त्रों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सर्व-प्रथम आपको बधाई देनी है कि आपने भारत के विभिन्न क्षेत्रों के 'शाबर मन्त्रों' को सङ्कलित करके उन्हें १० भागों में छपाने का सराहनीय प्रयास किया है। उक्त मन्त्रों के लेखक महोदय ने इन मन्त्रों पर विचार करने का पाठक बन्धुओं से अनुरोध किया है।

मैं उसी क्षेत्र का मूल निवासी हूँ, जहाँ की भाषा तथा शब्दों का प्रयोग उक्त मन्त्रों में हुआ है। यद्यपि 'शाबर - मन्त्र - साधना' मेरा विषय नहीं है, फिर भी १० भागों को पढ़ने की इच्छा मैं दबा नहीं सका। मेरे पूर्वज 'शाबर-विद्या' के मन्त्रों द्वारा विभिन्न लौकिक कार्य सरलतापूर्वक सम्पादित करा लिया करते थे तथा यश-सम्मान अर्जित करते रहते थे। यह विद्या उन्हें 'कर्णात् कर्णोपदेशेन' विधि से प्राप्त होती रहती थी, जो अब लगभग लुप्त-प्राय हो चुकी है।

सन्दर्भित मन्त्रों की पाण्डुलिपि के लेखक श्री रुद्रदेव जी (पण्डित) श्री रुद्रदेव जोशी के नाम से लगभग २५० वर्ष पूर्व कुमायूँ मण्डलान्तर्गत जनपद अल्मोड़ा के 'जोशी' उप-जाति के ब्राह्मणों के पूर्वज रहे थे। पुराने समय में सामान्यतया कुमाउँनी ब्राह्मण अपना उप - नाम 'पण्डित' रखा करते थे। आप ज्योतिष-शास्त्र, हस्त-रेखा-विज्ञान के ही नहीं, वरन् 'काग-भाषा, शिवा - भाषा' तथा 'शुक - भाषा' के भी जानकार थे। बताया जाता है कि इनकी वाणी सिद्ध थी तथा जो कह देते थे, वही हो जाता था। आप तत्कालीन छोटी रियासतों के राजा - महाराजाओं, नवाबों के दरबार तक भी पहुँच रखते थे। सम्भवतया लेखक महोदय के पूर्वज भी विद्वान् रहे हों तथा ऐसे ही

विद्वज्जनों का सान्निध्य श्री रुद्रदेव जी को मिला होगा तथा श्री शर्मा जी के पूर्वजों के साथ किसी - न - किसी रूप में उनकी आत्मीयता व घनिष्ठता रही होगी और उन्होंने उक्त मन्त्र श्री शर्मा जी के पूर्वजों को दिए होंगे। अस्तु।

मैं यहाँ प्रथम मन्त्र की भाषा तथा शब्दों का अर्थ लिख रहा हूँ। इन मन्त्रों को ग्रहण, दीपावली तथा होली के दिन १०,००० (दश हजार) जप करके ही प्रयोग में लाया जाता है, परन्तु 'वामाचार' का ही मार्ग अपनाना होगा।

प्रयुक्त शब्द और उनके अर्थ इस प्रकार हैं—

(१) वाड़ी—क्यारी/खेत।
(२) दूदी नारसिंह—अल्मोड़ा - कूर्माञ्चल में यह मान्यता है कि वीर नारसिंह दो प्रकार का है। प्रथम—'दूदाधारी' अर्थात् दूध की धार से सन्तुष्ट होनेवाला अर्थात् दक्षिणाचार से उसकी पूजा की जाती है। द्वितीय—'मांसाहारी' अर्थात् शुद्धि-कारण से पूजित।
(३) घट—पनचक्की (पानी से चलनेवाली चक्की), इसे 'घराट' भी कहते हैं।
(४) दिटन्ति—घूमनेवाली।
(५) ल्यावो—लावो।
(६) गाई—गाय।
(७) वेहैल—बैल।
(८) डुकरन्ति—बैल की आवाज।
(९) आण—आन (शपथ)।
(१०) भाणों—बर्तन।
(११) चषकि—चाक (पीसनेवाली)।
(१२) वोट—पेड़।
(१३) टुका—किसी भी पौधे का अन्तिम (चोटी) का भाग।
(१४) हजारि—गेंदा का फूल/पत्ते।
(१५) विज—चीज—वस्तुएं।
(१६) ए—इस/इसे।

(१७) सुन्दाई—सुँघाई (सुँघाना)।
(१८) दिणु—दे या दिया करे।
(१९) मन्त्रलै—मन्त्र से।
(२०) वभूत—भस्म (राख)।
(२१) मन्त्रनौ मन्त्रित करे।
(२२) डालणा—डालना।

"सिन्दूर-तिलक से········सुन्वाइ दिणु" का अर्थ है : "सिन्दूर, तिलक-चन्दन, पनचक्की का बर्तन, चाक की मिट्टी, दाड़िम के पेड़ की चोटी के पत्ते तथा डाल—इन सबको जलाकर उस राख को ७ बार अभिमन्त्रित करके उसे किसी गुलाबी फूल में डालकर या हजारी के पत्तों में मिलाकर साध्य/साध्या को दिखाए, उसके सिर में डाल दे या उसे सुँघाए।"

इसी प्रकार पृष्ठ ६३ में जो सबसे ऊपर की पंक्तियाँ हैं, उनका अर्थ है : "इस मन्त्र से १०१ बार भस्म (वभूत) को अभिमन्त्रित करके शत्रु के सिर में डालना है।"

अन्त में निवेदन है कि पहाड़ी भाषा (कुमाउँनी भाषा) का ज्ञान न होने के कारण जीर्ण पाण्डु-लिपि के धूमिल शब्दों को पढ़ने या उतारने में कुछ त्रुटि हो गई होगी क्योंकि मुझे 'गाका-जोड़क' वाक्य में कुछ सन्देह है, जिसका अर्थ मैंने दाड़िम का पौधा लगाया है क्योंकि 'आकर्षण' के टोटकों में दाड़िम पञ्चाङ्ग के प्रयोग का विधान भी होता है। यदि पाण्डु-लिपि मिलती, तो यह शङ्का समाप्त हो जाती।

ज्योतिष के परिप्रेक्ष्य में :

शावर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री बचुभाई डी जोशी
टावर के पास, भाणवड, जामनगर (गुजरात)-३६०५१०
दूर-भाष : (२८८६) २३६४

शाबर मन्त्रों के सम्बन्ध में कुछ लोग यह कहते हैं कि उन्होंने शाबर-मन्त्र 'जप' किया, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। वास्तव में 'मन्त्र-सिद्धि' न हो, तो 'जप' दो बार या तीन बार करना चाहिए। फिर भी 'मन्त्र-सिद्धि' न हो, तो उसके लिए अन्य कारणों को खोजना चाहिए।

'मन्त्र - सिद्धि' न होने के बहुत से कारण हैं। एक कारण ग्रहों की दशा है। 'ज्योतिष - विद्या' के अनुसार ग्रहों की दशा ज्ञात करे। 'शाबर मन्त्र' का 'जप' किया जाए, तो साधना में सिद्धि अवश्य मिलती है। जिन लोगों को 'मन्त्र - साधना' में निष्फलता मिली है, उनके लिए तो 'ज्योतिष-विद्या' का अवलम्बन उपयोगी हैं ही, साथ ही जो लोग 'मन्त्र-साधना' करने के लिए उत्सुक हैं, वे भी 'ज्योतिष-विद्या' का अवलम्बन लेकर यदि साधना प्रारम्भ करें, तो उन्हें विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

अस्तु, 'साधना-काल' में 'जन्म-लग्न-चक्र' के अनुसार कौन 'ग्रह' अनुकूल है या कौन 'ग्रह' प्रतिकूल हैं, यह जानना बहुत महत्त्व - पूर्ण है। 'साधना' को यदि 'कर्म' समझा जाए, तो 'जन्म - चक्र' का 'दशम स्थान' उसकी सफलता या असफलता का सूचक है। प्रायः ज्योतिषी 'नवम-स्थान' को मुख्य मानकर 'साधना की सिद्धि या असिद्धि या उसका बलाबल' नियत करते हैं। स्वयं मेरा मानना है कि 'साधना' में चूंकि 'कर्म' अभिप्रेत है, अतः 'जन्म - चक्र' का 'दशम स्थान' का विचार करना चाहिए। वैसे कुछ लोग 'पञ्चम स्थान' को भी महत्त्व देते हैं।

'ज्योतिष' के नियमानुसार साधक के 'जन्म-चक्र' के 'नवम स्थान' में जिस 'ग्रह' का प्रभाव होता है, वैसी ही 'प्रकृति' वह धारण करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि साधक की प्रकृति सात्त्विक होगी या राजसिक या तामसिक।

'जन्म-चक्र' में यदि 'गुरु, बुध, मङ्गल' एक साथ होते हैं, तो साधक 'सगुण उपासना' में प्रवृत्त होता है। 'जन्म - चक्र' में 'गुरु' के साथ यदि 'बुध' है, तो साधक सात्त्विक देवी - देवताओं की उपासना में प्रवृत्त होता है। ऐसे ही यदि 'दशमेश' नवम स्थान में होता है, तो साधक सात्त्विक—देवोपासक बनता है।

'जन्म-चक्र' के आधार पर सात्त्विक उपासना के मुख्य-मुख्य योग इस प्रकार हैं—

१. 'दशमेश' उच्च हो और साथ में 'बुध' और 'शुक्र' हो।

२. 'लग्नेश' 'दशम स्थान' में हो।

३. 'दशमेश' 'नवम स्थान' में हो और पाप-दृष्टि से रहित हो।

४. 'दशमेश' 'दशम स्थान' या 'केन्द्र' में हो।

५. 'दशमेश' 'बुध' हो तथा 'गुरु' बलवान और 'चन्द्र' तृतीय हो।

६. 'दशमेश' व 'लग्न' की युति हो।

७. 'दशमेश' ब 'लग्नेश' का स्वामी एक ही हो।

८. 'दशमेश' यदि 'शनि' है, तो साधक तामसी बुद्धिवाला होता हुआ भी उच्च साधक व तपस्वी बनता है। यदि 'शनि', 'राहु' के साथ हो, तो रुचि तामसिक उपासना में अधिक लगेगी।

९. 'सूर्य', 'शुक्र' अथवा 'चन्द्र' यदि 'दशमेश' हों, तो जातक दूसरे की सहायता से ही उपासक बनता है।

१०. 'पञ्चम स्थान' परमात्मा से प्रेम का सूचक होता है। 'पञ्चम' और 'नवम स्थान' यदि शुभ लक्षणों से युक्त होते हैं, तो जातक अति सफल उपासक बनता है।

११. 'पञ्चम स्थान' में पुरुष ग्रहों का यदि प्रभाव रहता है, तो जातक पुरुष देव-देवताओं का उपासक बनता है। यदि स्त्री ग्रहों का विशेष प्रभाव होता है, तो जातक स्त्री-देवता या देवी की उपासना में रुचि रखता है। 'पञ्चम स्थान' में 'सूर्य' की स्थिति से यह ज्ञात होता है कि जातक शक्ति का कैसा उपासक बन सकता है।

१२. 'नवम स्थान' में या 'नवम स्थान' के ऊपर 'मङ्गल' की दृष्टि होती है, तो जातक भगवान् शिव की उपासना करता है। कुछ लोग 'मङ्गल' को हनुमान जी का स्वरूप मानते हैं। अतः इससे हनुमान जी की उपासना बताते हैं। ऐसे ही कुछ लोगों का मत है कि 'गुरु - ग्रह' के बल से शिव जी की उपासना में सफलता मिलती है। 'नवम स्थान' में 'शनि' होने से कुछ लोग तामसिक उपासनाओं में रुचि बताते हैं। मेरे अनुभव से यदि 'जन्म-चक्र' के 'नवम स्थान' में 'शनि' है, तो श्री हनुमान जी का सफल उपासक बना जा सकता है।

इस प्रकार 'ज्योतिष-शास्त्र' में उपासना - सम्बन्धी अनेक 'योग' हैं। 'शाबर मन्त्र' को सिद्ध करने में कौन-कौन से 'योग' महत्त्व - पूर्ण हैं, इसके बारे में भी मैंने कुछ चिन्तन किया है, जो इस प्रकार है—

● 'नवम स्थान' में 'शनि' हो, तो साधक 'शाबर मन्त्र' में अरुचि रखता है। अथवा वह 'शाबर - साधना' सतत नहीं करेगा। यदि वह 'शाबर - साधना' करेगा, तो अन्त में उसको 'वैराग्य' हो जाएगा।

● 'नवम स्थान' में 'बुध' होने से जातक को 'शाबर मन्त्र की सिद्धि' में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अथवा, 'शाबर मन्त्र की साधना में प्रतिकूलताएँ आएँगी।

● 'पञ्चम स्थान' के ऊपर यदि 'मङ्गल की दृष्टि' होती है, तो जातक कुल-देवता, कुल-देवी अथवा देवी का उपासक बनता है। 'पञ्चम स्थान' के ऊपर 'गुरु की दृष्टि' होती है, तो साधक को 'शाबर-साधना' में विशेष सफलता मिलती है। 'पञ्चम स्थान' में 'सूर्य की दृष्टि' हो, तो साधक सूर्य या विष्णु की उपासना में सफल होता है। यदि 'राहु की दृष्टि' होती है, तो वह 'भैरव-उपासक' बनता है। इस प्रकार के साधक को यदि पथ - निर्देशन नहीं मिलता, तो वह निम्न स्तर के देवी-देवताओं की उपासना करने लगता है।

● 'ज्योतिष-विद्या' का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जैमिनि-सूत्र' है। इसके प्रणेता महर्षि जैमिनि हैं। इस ग्रन्थ से उपासना-सम्बन्धी उत्तम मार्ग-दर्शन मिलता है। यथा—

(१) सबसे अधिक अंशवाले ग्रह को 'आत्मा-कारक ग्रह' कहते हैं। 'नवमांश' में यदि आत्मा - कारक 'शुक्र' होता है, तो जातक 'लक्ष्मी' की साधना करता है। ऐसे जातक को लक्ष्मी देवी के मन्त्र की साधना से लाभ-ही-लाभ मिलता है।

(२) 'नवमांश' में यदि आत्मा - कारक 'मङ्गल' होता है, तो जातक भगवान् कार्तिकेय की उपासना से लाभान्वित होता है।

(३) 'बुध' व 'शनि' से भगवान् विष्णु और 'गुरु' के बलाबल से भगवान् सदा-शिव की उपासना लाभ-दायक होती है।

(४) 'राहु' से तामसिक देवी - देवताओं की उपासना सिद्ध होती है।

(५) 'शनि' के उच्च - कोटि के होने पर साधक को उच्च-कोटि की सिद्धि सहज में मिलती है। इसके विपरीत यदि 'शनि' निम्न-कोटि का होता है, तो साधना की सिद्धि में विलम्ब होता है।

(६) 'जन्म - चक्र' में यदि द्वादश स्थान में 'राहु' होता है, तो साधक परमात्मा के साक्षात्कार हेतु उत्साहित रहता है। ऐसे बन्धुओं को 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र की सिद्धि' द्वारा भौतिक लाभ - प्राप्ति से दूर रहना चाहिए क्योंकि 'द्वादश स्थान' मोक्ष - प्राप्ति का सूचक है। 'द्वादश स्थान' में 'राहु' के होने से वह 'साधना की सिद्धि' में सहायक और लाभ-प्रद रहता है।

(७) 'दशम स्थान' में यदि 'सूर्य' हो, तो साधक को भगवान् राम की उपासना करनी चाहिए और 'दशम स्थान' में यदि 'चन्द्र' हो, तो कृष्ण की उपासना करनी चाहिए।

(८) 'दशम स्थान' में यदि 'गुरु' हो, तो साधक अन्तः - प्रेरणा या अन्तः-स्फुरण से उपासना करता है और सफल होता है।

जन-कल्याणार्थं शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं० रामशङ्कर उपाध्याय

भू० पू० डाकपाल, ग्राम–रैका, पो०–आथर
जि०-बक्सर (बिहार)–८०२१२६

[शाबर मन्त्रों का उद्देश्य जन-कल्याण करना है। 'सन्त कवि' तुलसीदास ने स्पष्ट ही लिखा है –

कलि बिलोकि जग-हित हर-गिरिजा।
शाबर - मन्त्र - जाल जिन्ह सिरिजा ॥

ऐसे मन्त्रों की सिद्धि के लिए विशेष प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है। जन-कल्याण की भावना से शुद्ध हृदय से प्रयोग करने मात्र से कार्य-सिद्धि हो जाती है। निर्लोभ मन से दूसरों के लिए किया गया मन्त्र-प्रयोग भी सफल होता है—यह मेरा निजी अनुभव है। मेरे पास देश के कई प्रान्तों से दैहिक, दैविक एवं भौतिक रोगियों के पत्र आते हैं और सबका समाधान करता हूँ। अभी तक पूर्ण सफलता मिलती आई है। आपसे निवेदन है कि आप भी दया - भाव से निःस्वार्थ 'शाबर'-मन्त्रों से सेवा करें। – प्रस्तुत-कर्त्ता]

(१) कामाक्षा-मन्त्र

ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा ॥

विधि : उक्त मन्त्र का किसी दिन १०८ बार जप कर, ११ बार 'हवन' करे। फिर नित्य एक बार जप करे। इससे सभी प्रकार की सुख-शान्ति प्राप्त होगी।

(२) अक्षय धन-प्राप्ति मन्त्र

प्रार्थना—हे मां लक्ष्मी, शरण हम तुम्हारी।
पूरण करो अब माता कामना हमारी ॥
धन की अधिष्ठाती, जीवन-सुख-दात्री।
सुनो-सुनो अम्बे ! सत् - गुरु की पुकार।

शम्भु की पुकार, मां कामाक्षा की पुकार ।।
तुम्हें विष्णु की आन, अब मत करो मान ।
आशा लगाकर हम देते हैं दीप - दान ।।

मन्त्र—ॐ नमः विष्णु-प्रियायै, ॐ नमः कामाक्षायै । ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्रीं क्रीं क्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा ।।

विधि : 'दीपावली' की सन्ध्या को पाँच मिट्टी के दीपकों में गाय का घी डालकर रुई की बत्ती जलाए। 'लक्ष्मी जी' को 'दीप-दान' करे और 'माँ कामाक्षा का ध्यान' कर उक्त प्रार्थना करे। मन्त्र का १०८ बार जप करे। 'दीपक' सारी रात जलाए रखे और स्वयं भी जागता रहे। नींद आने लगे, तो 'मन्त्र' का जप करे। प्रातः-काल दीपों के बुझ जाने पर उन्हें नए वस्त्र में बाँधकर 'तिजोरी' या 'बक्से' में रखे। इससे श्रीलक्ष्मी जी का उसमें वास हो जाएगा और धन-प्राप्ति होगी। प्रति-दिन सन्ध्या समय 'दीप' जलाए और पाँच बार उक्त मन्त्र का जप करे।

(३) बल-प्राप्ति का मन्त्र

प्रार्थना—शङ्कर-सुवन अञ्जनी-पूत बल-पति हनुमान ।
दया करो राम - भक्त वीर बलवान ।।
बल दो, बना दो काया बज्र के समान ।
तुम्हें राम की आन, तुम्हें सीता की आन ।।
रहो सदा दाहिने, सत - गुरु की है पुकार ।
दोहाई श्री कामाक्षा की, महिमा है अपार ।।

मन्त्र—ॐ श्रीमहा - वीराय नमः, ॐ श्रीकामाक्षायै नमः । ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा ।।

विधि : मङ्गलवार को प्रातः-काल स्नान कर व्रत रखे। काठ की गदा सामने रखकर, आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठे और उक्त प्रार्थना कर १०८ बार मन्त्र जपे। फ़िर प्रति - दिन स्नान कर

कम-से-कम एक बार उक्त मन्त्र अवश्य जपे। तब 'व्यायाम' करे। इससे विशेष रूप से बल की प्राप्ति होगी।

(४) विद्या-प्राप्ति मन्त्र

प्रार्थना–वन्दे श्रीसरस्वती, विद्या की स्वामिनी।
विनय सुनो दया-मयि, बुद्धि-ज्ञान-दायिनी ।।
दया करो––दया करो, दे दो मुझे विद्या-दान।
तुम महान् सत-गुरु खान, कामाक्षा का रख लो मान ।।

मन्त्र––ॐ विद्या-बुद्धि-दायिनी, सर्व-कला-स्वामिनी। श्रीं श्रीं सरस्वती-देव्यै नमः। ॐ ह्रीं ब्रीं श्रीं फट् स्वाहा ।।

विधि : शनिवार को स्नान कर किसी एकान्त कमरे में शान्त-चित्त बैठे। फिर श्रीसरस्वती देवी का ध्यान कर उक्त प्रार्थना कर १०८ बार मन्त्र जपे तथा सरस्वती देवी की विधि-वत् पूजा करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में किसी पुस्तक के पढ़ने के पहले ७ बार मन्त्र जपे। इससे जो पढ़ेंगे, कण्ठस्थ हो जाएगा।

(५) विद्या-स्मरण-मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमः सरस्वत्यै ह्रीं श्रीं हूँ। ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा ।।

विधि : शनिवार को स्नान कर 'शनि - देव' की पूजा करे। फिर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। इसके बाद ब्राह्मी बूटी और गोल मिर्च का चूर्ण ५ ग्राम एक गिलास जल में घोले और ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पिए। इससे कुछ ही दिनों में 'स्मरण-शक्ति' बढ़ जाएगी।

(६) नौकरी-प्राप्ति-मन्त्र

प्रार्थना–हे कामाक्षा ! हे शिव-शक्ति ! करते हैं हम भक्ति।
सुन लो भक्त की पुकार, बेड़ा है मँझधार ।।
चलाकर पतवार, लगा दो मां ! पार।
तुम्हें शङ्कर की आन, सत-गुरु का कहना मान ।।

सहारा दे दो मां, हम हो रहे बेकार।
निराशा का अन्धकार, दूर है किनार ॥
दया - दृष्टि फेरो अम्ब! बेड़ा करो पार।
दोहाई है, दोहाई है, तुम्हारे चरणों में माई!
दोहाई कामरूप दानी की, दोहाई हाड़ी दासी की ॥

(१) मन्त्र—नमः कामाक्षा ह्लीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा ॥

विधि : शनिवार को 'शनि देव' की पूजा कर उक्त प्रार्थना कर मन्त्र १०८ बार जपे। इसके बाद गो-माता को गुड़ खिलाकर गाय के गोबर का उपला बनाए। उसे दिन भर सुखाए और रात को जलाए। जब तक वह उपला जलता रहे, तब तक उक्त मन्त्र पढ़ता रहे। उपला जब जल कर भस्म हो जाए, तब उसे उठाकर मिट्टी के नए पात्र में रख दे। बाद में जब नौकरी, व्यापार या किसी कार्य के लिए यात्रा करनी हो, तो इस भस्म में से एक चुटकी लेकर, उसे उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर, ललाट पर तिलक लगाए। इससे कार्य व यात्रा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

(२) ॐ नमः भगवती पद्मावती ऋद्धि-सिद्धि-दायिनी, दुःख-दारिद्रय-हारिणी श्रीं श्रीं ॐ नमः कामाक्षायै नमः ह्लीं ह्लीं फट् स्वाहा ॥

विधि : शनिवार को 'शनि देव' की पूजा कर उक्त मन्त्र का १००८ बार जप करे। फिर नौकरी के लिए यात्रा करने के पहले सात बार उक्त मन्त्र का जप करे और चलते समय गो - माता को गुड़ खिला कर आगे बढ़े, तो निश्चित रूप में नौकरी की प्राप्ति होगी।

(७) महा-लक्ष्मी मन्त्र

मन्त्र—ॐ कमल-दल-निवासिनी, सदा सुहागिनी मां! चं चल स्थिरां, ह्लीं ह्लीं ॐ नमः कामाक्षायै, ह्लीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा ॥

विधि : शनिवार की आधी रात से उक्त मन्त्र का १०८ बार जप प्रारम्भ करे। फिर लगातार २२ दिनों तक प्रति-दिन आधी रात

को १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। ४३ वें दिन प्रातः-काल स्नान कर उक्त मन्त्र द्वारा १०८ 'आहुतियाँ' दे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में नित्य सोने के पूर्व २२ बार मन्त्र जपे। इससे घर में लक्ष्मी जी का निवास होगा और नित्य धन-वृद्धि होगी।

(८) अनायास धन-प्राप्ति-मन्त्र

यक्ष का भण्डार, कुबेर का भण्डार। रत्न से भरा हुआ, जहाँ हो गड़ा हुआ। दोहाई कामाक्षा की, दिखा दो वह स्थान। तुम्हें शङ्कर की आन, सत्-गुरु का कहना मान। तुम्हारी महिमा महान, आज है उसकी पहचान। तुम्हें शिव की कसम, सती धर्म की कसम।

मन्त्र—ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं श्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि : उक्त मन्त्र का जप शनिवार से प्रारम्भ करे। २२ दिनों तक प्रति-दिन १०८ बार जप करे। तेइसवें दिन पूजा समाप्त होने पर घर से बाहर निकले और जो आदमी सबसे पहले दिखाई दे, उसे आदर से ले आए तथा उसकी इच्छानुसार उसे भोजन कराए। रात को सोते समय कामाक्षा देवी का ध्यान कर उक्त मन्त्र का ७ बार जप करे। ऐसा नित्य करे। २२ दिन के अन्दर स्वप्न में अपार धन का भण्डार दिखाई देगा। फिर रात के समय उस स्थान पर पहुँच कर वहाँ की मिट्टी खोदकर धन ले आए।

(९) विघ्न-विनाशन-मन्त्र

मन्त्र—ॐ गं गणपतये नमः। ॐ सर्व-विघ्न-विनाशिनी कामाक्षायै नमः स्वाहा। ॐ गं गां गिं गीं ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

विधि : घर में श्रीगणेश जी की प्रतिमा स्थापित कर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे और गणेश जी की पूजा करे। इससे सभी प्रकार के विघ्न-बाधाएँ दूर होंगी, नित्य मङ्गल होगा।

(१०) आय बढ़ाने का मन्त्र

विष्णु-प्रिया लक्ष्मी ! शिव - प्रिया सती से प्रगट हुई कामाक्षा भगवती ! आदि-शक्ति युगल-मूर्ति महिमा अपार, दोनों की प्रीति अमर जाने संसार । दोहाई कामाक्षा की, दोहाई दोहाई । आय बढ़ा, व्यय घटा, दया कर माई ! ॐ नमः विष्णु-प्रियायै, ॐ नमः शिव-प्रियायै । ॐ नमः कामाक्षायै, ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

विधि : किसी दिन प्रातः स्नान कर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर ११ बार गाय के घी से 'हवन' करे । नित्य ७ बार जप करे । इससे शीघ्र ही आय में वृद्धि होगी ।

छत्तीसगढ़ के शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार 'कृष्णानन्द'
बी-३०, डी. कैम्प, एस. ई. सी. एल., कोरबा, पो. कोरबा,
जि. बिलासपुर (म. प्र.)-४९५६७८

[प्रस्तुत मन्त्रों को न मैंने सिद्ध किया है और न ही इनका प्रयोग किया है। अतः साधक बन्धुओं से निवेदन है कि अपने मार्ग - दर्शक गुरु से आज्ञा प्राप्त कर स्व-विवेक से निम्न-लिखित मन्त्रों का प्रयोग करें। सभी मन्त्र उग्र हैं, प्रयोग हेतु 'स्व-गुरु' की आज्ञा लेनी अनिवार्य है। विना मार्ग - दर्शक के, पुस्तक से मन्त्र पढ़कर प्रयोग करने से हानि की सम्भावना अधिक है। अतः विशेष सावधानी रखें। हानि के लिए प्रस्तुत-कर्त्ता उत्तरदायी नहीं है। – प्रस्तुत-कर्त्ता]

शत्रु-नाशक मन्त्र

(श्री छेदीलाल महन्त नामक 'बैगा' से प्राप्त)

(१) भैरव मन्त्र—ॐ काली कङ्काली महा-काली के पुत्र कङ्काल भैरव ! हुक्म हो हाजिर रहे, मेरा कहा करे। आन बाँधु, बान बाँधु। दसो सुर, नौ नाड़ी, बहत्तर कोठा बाँधु। फूल म भेजूँ, फूल म जाय। कोठे जी पड़े रहे। थर-थर काँपे, हल-हल हिले। मेरा भेजा भैरव सवा घड़ी, सवा पहर 'अमुक' शत्रु को बावला न करे, तो माता काली की सैय्या पर पग धरे। वाचा छोड़ कुवाचा करे, तो धोबी के नाँद, चमार के कुण्ड म पड़े। महा-देव की जटा टूट भूमि पर पड़े। माता पारबती के चीर पर चोट पड़े। मेरा हुक्म है अमुक शत्रु को मार प्राणों का हरण न करे, तो दुहाई है काली माता की, कामरू कामाख्या की।

समय और जप - संख्या : हरियाली अमावास्या, मौनी अमावास्या, दीपावली, चन्द्र एवं सूर्य - ग्रहण आदि पर १०८ बार जप करे।

सामग्री : २ लौंग, पान, सुपारी, नींबू, कपूर, धूप या लोह-बान, सिन्दूर, बताशा, लोहे का त्रिशूल, मद्य।

जप-विधि : श्मशान में नग्न होकर उक्त समय में मन्त्र का जप करे। पहले श्मशान भैरव की पूजा लौंग, पान, सुपारी से करे। लोहे के त्रिशूल पर सिन्दूर की सात बिन्दी लगाए। फिर इसमें भैरव की 'प्राण - प्रतिष्ठा' कर इसकी पूजा बताशा, मद्य और नींबू से करे। लोहबान का धूप दे तथा कपूर से आरती करे। तदनन्तर मन्त्र का जप करे।

प्रयोग-विधि : श्मशान की मिट्टी से सर्वाङ्ग - युक्त मूर्ति, शत्रु के बाएँ पैर की मिट्टी मिलाकर बनाए। इसकी छाती पर शत्रु का नाम सिन्दूर से लिखे। मद्य और नींबू का भोग लगाए। फिर २२ बार मन्त्र का जप करके त्रिशूल को मूर्ति की छाती पर गाड़ दे। शत्रु का नाश होगा।

(२) ॐ नमो महा-पङ्खी 'अमुकं' ग्राह-ग्राह कुरु-कुरु स्वाहा।

समय और जप-संख्या : ग्रहण, दशहरा, दीपावली, अमा-वास्या आदि पर रात्रि में १०८ बार।

विधि : पहले उक्त समय पर १०८ बार मन्त्र जप कर मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर प्रयोग के समय उल्लू के पङ्ख और सरसों से 'हवन' करे। 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारण करे।

(३) ॐ हंसकार, मांसकार, संसकार, 'अमुक' मारय हूं फट् स्वाहा।

विधि : क्रमाङ्क (२) के अनुसार।

(४) ॐ सुर-सुरे स्वाहा।

जप-संख्या : ग्रहण - काल में १०८ बार। अन्य दिनों में १००८ बार।

विधि : चिता की लकड़ी या बाँस से धनुष और कछुए की हड्डी से बाण बनाए। शत्रु के बाँएँ पैर की मिट्टी से शत्रु की मूर्ति बना कर सात बार पढ़कर शत्रु के घर में डाल दे।

(५) मन मना गुरु रतना, छपक देव हरताल, जगर-बगर तेंदुआ होय, बिजली चमके कोई घरी, कोई समय के बेर में। कोई हंसा ला हर बन्दन दे। जय चण्डी माता।

विधि : चिता की राख, हरताल और सरसों से १०८ बार उक्त मन्त्र जपते हुए 'हवन' करे तथा एक मुर्गे की 'बलि' दे। 'हवन' की राख शत्रु के सिर पर डालने से उसका नाश होगा।

(६) टोना-मन्त्र—गुरूद नाम, गुरूद गोली। छाती फोर करेजा खाबे, मूँड फोर गुदी खाबे। तब पारबती के अढाई आखर टोना नाम कहाबें। 'ओला' तीन खोल के साँधी म पाबे तभोले खाबे। लाखों बिधा होबे सहाय, अहो माता अन्ध-सैनी। स्वर-भैरवी जा मूँड फोर के गुदी ला खाबे।

विधि : उक्त मन्त्र का प्रयोग 'टोना'-विद्या जाननेवाले ही कर सकते हैं।

(७) सोन के चना रूपे के दाँत, चना चाबौं कट ले। जे पर सरसों छिटौं, वो मरे पट ले।

विधि : १००८ बार जप कर पहले मन्त्र को सिद्ध कर ले। तब सरसों को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के सिर पर डाले या फेंके।

(८) टोना लगाने का मन्त्र—(१) काली-काली महा-काली, आधी रात के आबे काली, जिहाँ पठौंवों तिहाँ जाबे। जा के काय खाबे, मूँड फोर गुदी ला खाबे, छाती फोर करेजा ल खाबे, नैन फोर पुतरी ल खाबे, जाँघ टोर कनिहा ला खाबे, मरूआ टोर बहियाँ ल खाबे, नाक

फोर नकडेंरा ला खाबे। जा फलाने/फलानी के छाती म चप जा।

(२) काली-काली महा-काली, इन्द्र की बेटी—इन्द्र की काली। रेंगत खाथस बुलत खाथस, भरे-पूरे म रक्त खाथस। मोर खाय गम नहीं पाय, उल्टा खाट मरघट ले जाय। 'अमुक' ल न लेगबे, सो चमार के नाद, धोबी के कुण्ड म पड़बे, सात जन्म ते नरक म पड़बे, जा रे तोर गोसाँई में लग जा।

विधि : 'हरियाली अमावास्या' या 'दीपावली' को उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर सिद्ध करे। फिर प्रयोग के समय उक्त मन्त्र को काले उड़द या नींबू पर ३ बार पढ़कर शत्रु के घर में फेंके।

(३) हर-हर; हर-हर पीपर करे, सेत बाग ल बैंगा धरे। माता गली म खप्पर ले के घुमत हें। आठ हाथ जीभ ल काढ़े, नौ हाथ के कत्ता ल धरे। हाथ के हथ-रेखा खड़, जोड़ी के सुत-रेखा खाँव। आँखी फोर, पानी पीवों। तीन दिन म तिज नहान, दस दिन म दस नहान करे। चल बहिनी, जाबो जादू सिखे। शनिचर रात्रि कुकूर पूँछी के बनाबो बाति। फोर के छाति करेजा खाबो, तब सोनईता वीर कहाबो। हाँक परे सोनईताँ वीर के जा, 'अमुक' के ऊपर चढ़ जा।

विधि : क्रमाङ्क (२) के अनुसार। उक्त मन्त्र से 'टोना' झारा भी जाता है। 'चढ़ जा' की जगह 'उतर जा' कहना पड़ता है। ३ बार पढ़कर फूंक मारे।

(४) टोना फूँकने का मन्त्र—हक नाम भाखों, तो पक नाम पड़े मिट्टी। पक नाम भाखों, तो टोंना नाम पड़े मिट्टी।

विधि : अगर किसी के ऊपर 'टोना' लगा हो, तो उक्त मन्त्र को ३ बार पढ़कर फूँक मारे।

(१०) मूठ चलाने का मन्त्र—अहो बहिनी, काय साग खाए। कैथ ला, चल कोला में झँपबो गँहू के दिया। रक्त के तेल उल्ट, सौ बान मार दे। चल मूठ चल, फलाने-फलानी की छाती पर चल।

विधि : उक्त मन्त्र ३ बार पढ़कर उड़द को शत्रु पर फेंके।

(११) शत्रु को देवी में चढ़ाने का मन्त्र—अहो झितरी टूटी, कहाँ जाबे? भितर द्वारी। भितर द्वारी म काय करबे? लहू चूहकबे। लहू चूहक के काय करबे? बोबरा बनइबे। बोबरा बना के काय करबे? माता के चौरा म दिहों चढ़ाय। छै आगर, छै कोरी। देवी जा, 'अमुक' ला, पा जा हंसा ल हर ले।

विधि : एक नींबू पर सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर और शत्रु का नाम लेकर उसे देवी-मन्दिर में चढ़ाए या काट कर शत्रु के घर में फेंके।

(१२) बाण चलाने का मन्त्र—(१) कनी मनी माला मुकुट नैना नर नारी, गुरू के वचन अगीन के झार। जब ठोंके, जब जागे। मईजपुर से लक्ष्मी बड़े, कौन खँचवा कौन पानी सनमुख लड़े जाय। एक बहाँचबे नाम में, काल कुदा के खाय। तैं बन ले ऊद, मैं बनिहों सेत। तैं बन सेत, मैं बनिहों मेक। हाँक परे गुरू के। सत गुरू, सत कबीर।

(२) बर-पीपर झाबड़ी माँज - माँज कोयलिया डार, जहाँ तोर बास हे चाँदधी मनिहार। अहो कौन आए, ओलहन जीत सम्हार। चटिया मटिया लेव, राम जोर बिहाव गोही के नार। अलख चन्दन सताए फिर मढ़ रब,

अहो मारते-मारते बचे आवे जी के सङ्ग। हसनापुर के गौरी-महेश, फिरी भौंव चिन्तापुर पद सम्हार। बिना गङ्गा-जमना के बीच चलो, सब देव मिलकर सो माँगो सो दिजिए, बल बवटीन की जय। चिमटी भर अमृत ले के, गौरी जीवत जगाय। सुध ले शरीर के, सरग ते आय। हाँक परे, दुजे चण्डी की।

विधि : पीली सरसों लेकर ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे, फिर उसे रात्रि के समय शत्रु के दरवाजे पर डाले।

(१३) बाण झारने का मन्त्र—अग्नी खम्हा, मोती के बाण। लोहा कुटी, लोहारिन सुसकी। चमारिन पातर भुँजिन, सँबरिन देवे बान। शरीर के अवकईसों बान, शान्त हो जा।

विधि : जिस पर बान लगा हो, उसके ऊपर १ सरसों, १६ राई और ३ डली नमक लेकर उबारे। ३ बार उक्त मन्त्र पढ़े तथा इसे जलती आग में डाल दे।

(१४) घर बाँधने का मन्त्र—बाँधों दस द्वारी। नाक बांधों, तिजरा बांधों, अऊ बांधों तिरिया। कहत में वीर बांधों जञ्जीर। कौन-कौन ला बांधों? उल्टा परेतिन बांधों, भैरों-भूत बाँधों। अरोड़ो बाँधो, करोड़ो बाँधो। लगे लगान चितो चितामन बाँधों, बाँधों ठाम टोनही। बाँधो रात कगेड़ी, बाँधो बेलाड़ी! बांधो खमेसरी, बाँधो ताले। बाँधो तोर घर, बाँधो दस द्वार बाँधो। खप्पर से भवानी बाँधो। बाँधो तैतिस कोरी नाग धरती म। तैतिस कोटी टोनही अधर म बाँधो। धरमदास के परे दुहाई, बावन लाख जञ्जीर म जावे बँधाई। सत् गुरू, सत् कबीर।

विधि : काला बच, काले केंवाच की जड़, पीली सरसों, उल्टा पङ्ख, मुर्गी का अण्डा, सिन्दूर, पान, मद्य–इन सब सामग्री को एकत्रित करके, मन्त्र द्वारा अभि-मन्त्रित करे और घर के आगे के दरवाजे तथा पीछे के दरवाजे के पास १ फुट गड्डा खोदकर गाड़ दे। इससे घर सभी प्रकार के अभिचार-कार्यों से सुरक्षित रहता है, कोई बाधा प्रवेश नहीं कर सकती। यदि घर में 'बाधा' या 'अभिचार - कर्म' किया हुआ होगा, तो वह भी इस प्रयोग से दूर हो जाएगा।

(१५) अभिचार-रक्षक शाबर - मन्त्र—**काली चौंसठ कलवा वीर, मेरा कलवा मन्धा तीर। जहाँ भेजों, वहाँ तैं जा। मांस-मछरी को छुवन न जाई, अपन मारे आप ही खा। चलत के बाण मारों, उलट-पुलट मूठ मारों। मार-मार कलवा, अमुक को मार। कलवा तेरी आस, चार चौमुखा दीया और बाती, जा मार ओकरे छाती। इतना काम मेरा न करें, तो मैं अपन दाई के सङ्ग हराम करे।**

विधि : उक्त मन्त्र ३ बार पढ़कर अपने शरीर पर फूंक मारे। सभी प्रकार के 'अभिचार' से रक्षा होगी।

(१६) पेट-पीड़ा-नाशक मन्त्र—**ॐ नमो काली कङ्का-लिनी, नदी पार बसे इस्माइल जोगी। लोहे का कठौता, काटि-बाटि लोहे का गोला। काट-काट पेट की पीड़ा। न काटे, तो इस्माइल जोगी लजाए। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फूरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।**

विधि : पहले उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर सिद्ध करे। फिर प्रयोग के समय भूमि पर चाकू से ३ आड़ी रेखाएँ खींचे और फिर मन्त्र पढ़ते हुए उन रेखाओं को सात बार काटे तथा वहाँ की मिट्टी को रोगी के पेट पर मले।

(१७) उच्चाटन-मन्त्र—**ॐ गिलो स्वाहा।**

विधि : पहले उक्त मन्त्र को 'दशहरा' में ९ दिन तक १०८ बार नित्य जप कर सिद्ध करे। फिर प्रयोग के समय 'भरणी' नक्षत्र में

उल्लू का आधा पङ्ख लेकर उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार पढ़कर अभि-मन्त्रित करे तथा उसे शत्रु के दरवाजे पर गाड़ दे।

(१८) मूठ बाँधने का मन्त्र—पर्वत-पर्वत अञ्जनी पुत्र जने, हनुमन्त लँगोट दरियाहि खावे। लौंग, सुपारी, जाय-फल, पान का बीड़ा लगावे। तेल का सिन्दूर बांध मूठ करे। काया बदल दे, माया औसान। दुहाई माता अञ्जनी की। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरू।

विधि : किसी नदी के किनारे चाँदनी रात में 'साधना' करे। अपने सामने एक 'गोल चक्र' बनाकर, उसमें हकीक के ३०१ दाने रखे। प्रत्येक दाने पर मन्त्र पढ़े। ऐसा ५१ दिन करे। जप-समाप्ति के बाद प्रत्येक दिन नदी में स्नान करे। ५१ दिन की उक्त 'साधना' के बाद हकीक के ३०१ दानों की 'माला' बना कर पहन ले। इस 'माला' के प्रभाव से किसी भी प्रकार के 'मूठ' का प्रभाव नहीं होगा और चलाया गया 'मूठ' बँध जाएगा।

(१९) सिद्ध वशीकरण - मन्त्र—बारा राखौं, बरैनी, मुँह म राखौं कालिका। चण्डी म राखौं मोहिनी, भुजा म राखौं जोहनी। आगू म राखौं सिलेमान, पाछे म राखौं जमादार। जाँघे म राखौं लोहा के झार, पिण्डरी म राखौं सोखन वीर। उल्टन काया, पुल्टन वीर, हाँक देत हनुमन्ता छुटे। राजा राम के परे दोहाई, हनुमान के पीड़ा चौकी। कीर करे बीट बिरा करे, मोहिनी-जोहिनी सातों बहिनी। मोह देबे जोह देबे, चलत म परिहारिन मोहों। मोहों बन के हाथी, बत्तीस मन्दिर के दरबार मोहों। हाँक परे भिरहा मोहिनी के जाय, चेत सम्हार के। सत गुरू साहेब।

विधि : उक्त मन्त्र स्वयं सिद्ध है और मेरे द्वारा अनुभूत है। फिर भी शुभ समय में १०८ बार जपने से विशेष फल-दायी होता है। १ नारियल, २ नींबू, अगर-बत्ती, सिन्दूर और गुड़ का भोग लगा कर १०८ बार मन्त्र जपे। मन्त्र का प्रयोग कोर्ट-कचहरी, मुकदमा-विवाद, आपसी कलह, शत्रु-वशीकरण, नौकरी-इण्टरव्यू, उच्च अधिकारियों से सम्पर्क करते समय करे। यदि आपके ऊपर कोई 'मुकदमा' चल रहा हो, तो उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए इस प्रकार अदालत जाएँ कि मन्त्र की समाप्ति ठीक जज के सामने हो या शत्रु के सामने हो अथवा अधिकारियों के सामने हो। इससे फैसला आपके पक्ष में होगा। मेरा अनुभूत मन्त्र है।

(२०) शूकर-दन्त-वशीकरण-मन्त्र—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं वाराह-दन्ताय भैरवाय नमः।

विधि : 'शूकर-दन्त' को अपने सामने रखकर उक्त मन्त्र का होली, दीपावली, दशहरा आदि में १०८ बार जप करे। फिर इसकी 'ताबीज' बनाकर गले में पहन ले। 'ताबीज' धारण करनेवाले पर जादू-टोना, भूत-प्रेत का प्रभाव नहीं होगा। लोगों का 'वशीकरण' होगा। मुकदमें में विजय - प्राप्ति होगी। रोगी ठीक होने लगेगा। चिन्ताएँ दूर होंगी और शत्रु परास्त होंगे। व्यापार में वृद्धि होगी।

(२१) कामिया सिन्दूर-मोहन-मन्त्र—

हथेली में हनुमन्त बसे, भैरू बसे कपार।
नरसिंह की मोहिनी, मोहे सब संसार।
मोहन रे मोहन्ता बीर, सब बीरन में तेरा सीर।
सबकी नजर बाँध दे, तेल सिन्दूर चढ़ाऊँ तुझे।
तेल सिन्दूर कहाँ से आया ? कैलास-पर्वत से आया।
कौन लाया, अञ्जनी का हनुमन्त, गौरी का गनेश लाया।
काला, गोरा, तोतला—तीनों बसे कपार।
बिन्दा तेल सिन्दूर का, दुश्मन गया पाताल।

दुहाई कमिया सिन्दूर की, हमें देख शीतल हो जाए ।
सत्य नाम, आदेश गुरू की । सत् गुरू, सत् कबीर ।

विधि : आसाम के 'काम-रूप कामाख्या' - क्षेत्र में 'कामीया सिन्दूर' पाया जाता है । इसे प्राप्त कर लगातार सात रविवार तक उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे । इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा । प्रयोग के समय 'कामिया सिन्दूर' पर ७ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अपने माथे पर टीका लगाए । 'टीका' लगाकर जहाँ जाएँगे, सभी वशीभूत होंगे ।

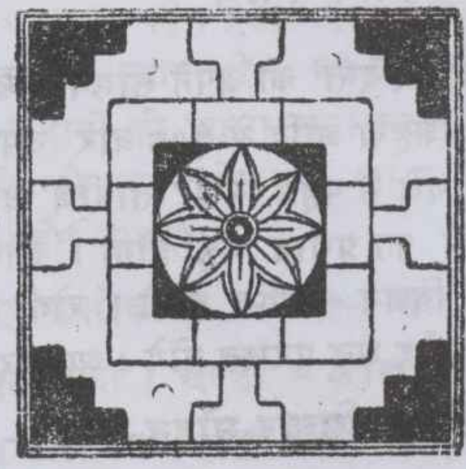

सर्प-दंश-विषयक नाथ-पन्थी मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील

१८/१ ड, गोंधळेनगर, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)–४११०२८

['सर्प' कई प्रकार के पाए जाते हैं। कुछ 'सर्प' जहरीले विष-धारक होते हैं, जिनके दंश से व्यक्ति मृत होता है। बहुत से 'सर्प' विषैले नहीं होते। कभी-कभी खेतों, पहाड़, जङ्गल आदि में या रात्रि में 'सर्प' पर अचानक पैर पड़ने से वह दंश करता है और व्यक्ति को यह बात ज्ञात भी नहीं होती कि उसे 'सर्प'-दंश हुआ है। फिर २-३ वर्ष बाद उसके पैरों में सूजन आने लगती है। सिर - दर्द से भी वह परेशान होने लगता है। उत्साह-हीनता (आलस्य) बढ़ती है। डाक्टरों से इलाज नहीं हो पाता। ऐसे में मन्त्र-शक्ति के साथ जड़ी - बूटी का प्रयोग कर 'विष का निवारण' किया जा सकता है। यहाँ इसी की जानकारी 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के पाठकों को दी जा रही है। इसका प्रयोग कोई भी व्यक्ति कर सकता है। 'अर्थार्जन' के उद्देश्य से इस विधान का उपयोग कदापि न करे, यह 'नाथों का आदेश' है।

—प्रस्तुत-कर्त्ता]

मन्त्र—कहे खुदा, सुन महम्मद ! ओ स्थापन का बी जैसा, जहाँ रहता, वह घर कैसा ? जहाँ रहना, वह घर कैसा ? अम्बल-चम्बल मद-मच्छर ठहराव कैसा ? हाथ को मारो, बीर को उतारो। राय राय भिसमिल्ला, फाक जाय तल्ला। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥

मन्त्र-सिद्धि—इसके लिए 'मोहरम' (मुहर्रम) का दिन उपयुक्त है। इस दिन 'कत्ल की रात' होती है। इस रात्रि में उक्त मन्त्र को १०५ बार जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में इसका प्रयोग निम्न-विधि से करे—

फा० ३

प्रयोग-विधि—पहले 'मिरची कन्द' को बाजार से जड़ी-बूटी की दूकान से खरीद लाए। फिर 'कड़वे नीम की डाली' हाथ में लेकर उक्त मन्त्र ७ बार पढ़े तथा जिसे 'सर्प-दंश' हुआ है, उसके सिर से पाँव तक स्पर्श-पूर्वक झाड़े। ऐसा ३ बार करे। इस प्रकार कुल २१ बार मन्त्र पढ़ा जाएगा। विष उतर जाएगा। २१ बार मन्त्र पढ़ने के बाद 'मिरची कन्द' का एक टुकड़ा उस व्यक्ति को खाने के लिए दे। उस व्यक्ति को यह खोबरे (सूखा नारियल) जैसा मीठा लगेगा। फिर दूसरा टुकड़ा दे। ऐसा ९-१० बार करे। धीरे-धीरे 'कन्द' उसे कड़वा लगने लगेगा। अन्त में इतना कड़वा लगेगा कि वह खा नहीं सकेगा। तब विष का निवारण पूर्णतः हो गया है, यह समझे और 'कन्द' खाने से उसे प्यास लगेगी, अतः उसे जितना चाहे, उतना पानी पीने को दे। वह बार-बार पानी पिएगा और उसे उल्टी भी होगी। इससे घबराए नहीं। इसी से वह स्वस्थ होगा। कोई भय नहीं है, यह पक्का समझे।

यदि 'सर्प का दंश' अनजाने में हुआ हो तथा जैसे लक्षण बताए गए हैं, दिख रहे हों, तो उस व्यक्ति को 'मिरची कन्द' के ८-१० टुकड़े एक-के-बाद एक खाने को दे। अन्त में जब वह कड़वा लगने लगे, तब समझे कि उसके विष का निवारण हो गया है और वह अच्छा हो जाएगा। इस समय 'मन्त्र-प्रयोग' करने की आवश्यकता नहीं।

कुछ लोग कड़वे नीम की पत्ती, मिरची, नमक आदि चीजें 'सर्प'-दंश से पीड़ित व्यक्ति को खाने के लिए देते हैं, परन्तु 'मिरची कन्द' से जितनी अचूक परीक्षा होती है और पीड़ा-निवारण होता है, उतना इन चीजों से नहीं होता।

यदि कोई बन्धु उक्त प्रयोग को करें व इससे लाभ हो, तो अपने अनुभव अवश्य लिखें।

बराटी-विद्या

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ में 'बराटी-विद्या' के कुछ अंश दिए गए थे। तभी से कई पाठक-बन्धुओं ने 'बराटी-साधना' करने की चाह व्यक्त की है। प्रस्तुत ११ वें भाग में 'बराटी-विद्या'-विषयक कुछ अच्छे विधान रहस्य-सहित दिए जा रहे हैं। आशा है, पाठक - बन्धु लाभ उठाएँगे।

'बराटी' का अर्थ है 'वीर'। 'बराटी-विद्या' का अर्थ है 'वीरों की विद्या'। इस विद्या को 'गुरु - मुख' से प्राप्त करना चाहिए। वीर— 'उप - देवता' हैं, इनके द्वारा सभी व्यावहारिक कार्य होते हैं, परन्तु अहङ्कारी बनकर इन वीरों को ही सर्वस्व समझ कर उच्च श्रेणी के देवी-देवताओं की साधना की ओर ध्यान न देना ठीक नहीं है। इस वृत्ति से बचना चाहिए।

कुछ मान्त्रिक 'अभिचार-कर्मों' में निष्णात होते हैं। 'वीरों' द्वारा इन अभिचारों का निवारण करना हितकर होता है। उच्च श्रेणी के देवी - देवताओं द्वारा भी यह कार्य किया जा सकता है, किन्तु 'उच्च साधना' या अपनी 'मूल साधना' का व्यय इस प्रकार न हो, तो ही उचित है। इससे 'मूल साधना' सुरक्षित रहेगी तथा उस पर ब्याज भी बढ़ता जाएगा, जो 'इष्ट'-प्राप्ति व 'साक्षात्कार' में सहायक होगा।

यहाँ जो भी 'विधान' दिए जा रहे हैं, वे सभी पूर्ण - रूप में हैं। 'वीर-कङ्कन' बनाने का 'विधान' भी पूर्ण है। पाठक - बन्धु कृपया प्रस्तुत-कर्त्ता से 'वीर - कङ्कन' की माँग न करें। इसे स्वयं ही बनाएँ और इस 'वीर-विद्या' का उपयोग 'क्षुद्र स्वार्थ' हेतु न करें। न ही इसे 'धनार्जन' या 'उप-जीविका' का साधन बनाएँ। जिन्हें 'वीर' - जैसी अमानवी शक्ति का प्रत्यक्षीकरण भयावह लगता है, वे बन्धु 'वीर-साधना' न करें।

कुछ पूछना हो, तो जवाबी लिफाफा भेज कर 'प्रस्तुत - कर्त्ता' से पूछा जा सकता है। धन्यवाद।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

'बराटी-विद्या' का अन्तरङ्ग-पक्ष

'बराटी-विद्या' में कुल ५२ 'वीर' होते हैं। कुछ 'वीर'—'बाम-मार्ग' से सिद्ध होते हैं, तो कुछ 'दक्षिण-मार्ग' से। यहाँ 'दक्षिण-मार्ग' से सिद्ध होनेवाले कुछ विधान दिए जा रहे हैं। 'हनुमान वीर', 'नर-सिंह वीर' आदि की सिद्धि अलग से भी की जा सकती है, जो 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ में दी जा चुकी है। 'वीर - कङ्गन' बनाकर भी 'बराटी-विद्या' सिद्ध होती है, जो यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। 'कङ्गन' की विधि सुलभ है। उसके द्वारा 'दक्षिण - मार्ग' से २१ 'वीर' सिद्ध किए जा सकते हैं—(१) तन्ट्या वीर, (२) हनुमान वीर, (३) शामरी वीर, (४) कान्होय्रा वीर, (५) मेमजा वीर, (६) नरसिंह वीर, (७) सङ्गणा वीर, (८) चौधरी वीर, (९) जयतमाल वीर, (१०) बाक्कु वीर, (११) ताट्या वीर, (१२) शनसर वीर, (१३) काल वीर, (१४) भैरव वीर, (१५) सोना वीर, (१६) गरुड़ वीर, (१७) गगना वीर, (१८) नागार्जुन वीर, (१९) वैष्णव वीर, (२०) चामरी वीर, (२१) महिषासुर वीर।

'वीरों का उक्त क्रम' ध्यान में रखना चाहिए।

'वीर-कङ्गन' बनाने की विधि—'वीर-कङ्गन'-'पञ्च-धातु' का बनवाना चाहिए। पञ्च-धातुएँ इस प्रकार हैं—१ सुवर्ण, २ रजत, ३ ताम्बा, ४ पीतल तथा ५ कांस्य। 'कङ्गन' इतना बड़ा बनवाना चाहिए, जिसे अपने हाथ में पहन सके।

'कङ्गन' बनवाने के लिए किसी भी 'पूर्णिमा' या 'अमावास्या' को चुने।

'वीर-कङ्गन' तैयार करते समय विवस्त्र रहे। हथौड़ी का प्रहार सिर्फ 'कङ्गन' पर ही करे। हथौड़ी का स्पर्श 'ऐरण' तथा जमीन को न करे। ऊपर वीरों के नाम दिए हुए हैं, प्रत्येक 'वीर' की छोटी-सी प्रतिमा प्रतीक-स्वरूप बनाकर वृत्ताकार 'कङ्गन' पर 'श्रीगणेश जी' के बाद क्रम-पूर्वक लगाए। इसके लिए 'सोल्डरिङ्ग' करना होगा। 'कङ्गन' बनाने का सम्पूर्ण कार्य विवस्त्रावस्था में ही होना चाहिए। इस प्रकार 'कङ्गन' तैयार होने पर उस पर प्रत्येक 'वीर' की 'प्राण-प्रतिष्ठा' करे। फिर विविध कार्यों हेतु 'वीर-कङ्गन' को निम्न प्रकार से सिद्ध करे। यथा—

वीर-कङ्कन-सिद्धि

'सिद्धि' हेतु ७ दिनों का विधान है। सुबह स्नानादि के बाद पूजा-स्थान में आसन ग्रहण करे। सवा मीटर कोरा (नया) वस्त्र लेकर, उस पर 'ताम्र - कलश' व 'नारियल' रखे। 'ताम्र - कलश' के सामने वस्त्र पर 'वीर-कङ्कन' रखकर पञ्चोपचारों से उसकी पूजा करे। फिर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए २१ वीरों पर (या कङ्कन के गणेश - स्थान पर) जल छोड़े—

गणा गणा कमरी गणा। पाया-मध्यें सोन्या-सुवर्णाच्या वहाणा। वहाण गेलो, अग्नी निघाली। वट्टीवर होता कोल्हचासर दैत। जागती ज्योत, जागत रहो। खेत देव दैत २१ वीर। सिद्धयांशी गुरू छूः। बादशहा पुरी।

उक्त मन्त्र पढ़कर कुल २१ बार जल छोड़े। ऐसा ७ दिन करे। ७ वें दिन २१ वीर साधक के सामने प्रत्यक्ष होंगे, उनसे आशीर्वाद माँगे तथा ३ बार वचन ले कि जब भी बुलाया जाएगा, तब वे प्रत्यक्ष होकर कार्य करेंगे।

७ वें दिन 'होम' भी करे। 'होम' के लिए 'सिरस' की समिधाएँ तथा निम्न सामग्री एकत्रित करे—

(१) सवा सेर गो - घृत, (२) २१ नारियल, (३) २१ नग कपूर, (४) ९ प्रकार के धान्य (प्रत्येक सवा सेर), (५) ९ बादाम, (६) ९ सुपारी, (७) ९ हलदी, (८) खोपरे (सूखा नारियल) के ९ अर्ध-गोल।

'होम' करते समय उक्त 'मन्त्र' में जहाँ 'खेत' शब्द है, वहाँ एक-एक 'वीर' का नाम लेकर प्रत्येक को २१ आहुतियाँ दे। यथा—

'तन्टचा वीर' के लिए

गणा गणा कमरी गणा। पाया-मध्यें सोन्या-सुवर्णाच्या वहाणा। वहाण गेली, अग्नी निघाली। वट्टीवर होता कोल्हचासर दैत। जागती ज्योत, जागत रहो। 'तन्टचा वीर' देव दैत २१ वीर। सिद्धयांशी गुरू छूः। बादशहा पुरी॥

इस प्रकार से प्रत्येक वीर की २१ अर्थात् कुल २१×२१=४४१ आहुतियाँ होंगी।

'होम' के बाद अपने गुरु को ६ धान्य—१ गेहूँ, २ चावल, ३ जवार, ४ उड़द, ५ मूंग, ६ हरबरा (चना), ७ चवली, ८ तूर, ९ मोहरी (सरसों) का 'दान' दे। प्रत्येक धान्य सवा सेर होगा। यथा-शक्ति श्रद्धा-पूर्वक गुरु-दक्षिणा भी दे।

अब जब भी कार्य करना हो, तब पहले 'कङ्कन' की 'पूजा' करे। फिर 'कङ्कन' हाथ में लेकर, जिस 'वीर' की आवश्यकता है, उसका मन्त्र पढ़े। इससे वह 'वीर' सामने आकर कार्य पूछेगा। उसे कार्य बताए। कार्य होने पर उसे मिठाई दे। इससे वह शान्त होकर गुप्त हो जाएगा।

प्रत्येक 'वीर' का कार्य अलग-अलग होता है। नीचे कुछ वीरों के मन्त्र, वीरों के कार्य आदि पर विवेचन किया जा रहा है। 'मन्त्र' पढ़ने की पद्धति, उपयोग करने की विधि आदि बातें दी जा रही हैं, जिन्हें भली-भाँति हृदयङ्गम करे। यथा—

(१) दसुत की उलटी सन्धान, असत् का पूत। खडे-खडे कावड करे। 'अमुक' जगह पर जाकर, 'अमुक' कार्य करे।' दौड लगे भागो-भागो रे वीर, पल्लो वीर! पोहचाऊँ शामरी वीर का साण्ड। सव्वा सुत समान गुरू गोरखनाथ, मच्छिन्द्रनाथ तेरी दुवाई। फुल मन्त्र फटकारा, गुरू का मन्त्र पुरा।

विशेष विधि—उक्त मन्त्र 'शामरी वीर' का है। इस 'मन्त्र' में पहले 'अमुक'-शब्द के स्थान पर जहाँ कार्य करवाना है, उस जगह का नाम ले तथा दूसरे 'अमुक कार्य करे' के स्थान पर 'कार्य' कहे।

'शामरी वीर' भिन्न- भिन्न स्थान पर जाकर कार्य करके वापस आता है। 'वीर - कङ्कन' हाथ में लेकर, उक्त मन्त्र पढ़ने से 'शामरी वीर' सामने आकर कार्य पूछेगा।

(२) गगना वीर चले, सगना धोबी चले। चले लंके के वीर। हनुमान जती-सती, पापन की खटी राखी-राखी।

दसर बसर, बसर मनका, सव्वा मनका। लंके के दरबार में आयरने कायरने, खलखल करे, फुलफुल करे। करे सो बायना जीत उनकी। पाँव की बेड़ी खुले, अष्ट-भैरव को छोड़ दे। अमुक जगह पर जाकर, अमुक कार्य करे। मेरे गुरू की शिकाई, मेरी गवाई। चलो मन्त्र, बादशहा पुरी।

विशेष विधि—उक्त मन्त्र से 'गगना', 'सगना' तथा 'हनुमान वीर' प्रत्यक्ष होते हैं। 'मन्त्र' में 'अमुक जगह पर जाकर, अमुक कार्य करे' के स्थान पर पिछले 'मन्त्र' की भाँति कार्य/जगह कहे। ये तीन वीर अत्यन्त सामर्थ्य-शाली हैं। प्रचण्ड शक्ति का सामना कर, शक्ति का निवारण, उच्चाटन या नाश करना, इनके लिए कठिन कार्य नहीं है। 'हनुमान जती' तो स्वयं 'ईश्वर' ही हैं। 'नाथ - पन्थ' में इनका स्थान बहुत ऊँचा है।

(३) दो दे वीर, चौधरो वोर, हाती रवेथ बाण। ६ मण पयनी बाँध, १० मण का सोजा बाँध। आग बाँध, आगीन बाँध, आकाश जोगनी बाँध, पाताल की बाँध। ६४ फुट की जोगनी बाँध। बाँध - बाँध रे 'शिवार्या', दाई दहा धरतीची दुवाई, पाँची पाण्डवाञ्ची दुवाई। फुल मन्त्र फट्कारा, गुरू का मन्त्र पुरा।

विशेष विधि—उक्त मन्त्र 'चौधरी वीर' का है। इसमें जहाँ 'शिवार्या'-शब्द है, उस स्थान पर जिसका 'बन्धन' करना है, उसका या उस जगह का नाम ले। इससे 'बन्धन' होगा।

(४) राम चले, लक्ष्मण चले। अमुक जगह पर, अमुक कार्य करे। रावण चले, हाकालते वीर चले, जगह पर चले। जगह पर जाकर, मार्ग धसाडा। गंगना वीर, संगना वीर, तुम जागत रहो। फुल मन्त्र फटकारा, गुरू का मन्त्र पुरा।

विशेष विधि—उक्त मन्त्र स्व-संरक्षण का है। इसके द्वारा किसी दूसरे का संरक्षण न करे। अन्यथा 'गङ्गना वीर' व 'सङ्गना वीर'—दोनों हाथ से जाएँगे। 'अमुक जगह पर, अमुक कार्य करे' के स्थान पर, जगह का नाम व कार्य कहे। यथा—'रायपुर में गुप्त धन के स्थान पर मेरा संरक्षण करे।' आदि।

(६) आवता झाड, पवता झाड, कान्होर्या वीर 'अमुक बात बता'। शेण्डी फोड कर, फडी मार कर, जगह पर चले जा। फुल मन्त्र फटकारा, गुरू का मन्त्र पुरा।

विशेष विधि—उक्त मन्त्र 'कान्होर्या वीर' से इच्छित जानकारी प्राप्त करने का है। 'अमुक बात बता' के स्थान पर कार्य/जानकारी का स्वरूप कहे। यथा—'धन की जगह बता' या 'खोए व्यक्ति का ठिकाना बता।' आदि।

(६) गरुड वीर कहा 'जान लगे', दौड लगे। ताटी काट, बेन्धा काट। जा सर्प को उठा ले। उसी का कलेजा खा। पेट फोड के कलेजा खा। न लगे, सर्प को मारने लगे, मार के शिडी बनने लगे। शिडी बन के सर्प को पहुँचाने लगे। कार पिल्ले का मानता लेनता। मेरे गरुड वीर, मेरे पास तू आहेस ना? फुल मन्त्र फट्कारा, गुरू का मन्त्र पुरा।

विशेष विधि—उक्त मन्त्र में 'जान लगे' के स्थान पर, जगह का नाम कहे। 'गरुड वीर', वहाँ जाकर सर्प - विष का निवारण कर 'सर्प' को मार डालता है।

(७-८) 'हनुमान वीर' तथा 'नरसिंह वीर' के मन्त्र 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ १००, १०१ व १०२ पर दिए गए हैं। वहाँ विधि-विधान भी दिया गया है। वहाँ 'आक' और 'आपटे' के पेड़ का विधान है, वह यहाँ करने की आवश्यकता नहीं है। 'वीर कङ्गन' पर ही इन दोनों वीरों का स्थान होगा। 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ में दोनों के दो-दो मन्त्र हैं। दोनों वीर अति-सामर्थ्यवान हैं।

विशेष कार्य कैसे करें ?

जहाँ काम करना है, वहाँ जाकर 'वीर-कङ्कन' का पूजन करे। फिर कङ्कन हाथ में पहने। अब 'गणा गणा ········ बादशहा पुरी'—इस मन्त्र से सभी २१ वीर जागृत करे। वे कार्य पूछेंगे, तब उनसे वहाँ उपस्थित सभी का संरक्षण करने को कहे।

सर्व-प्रथम 'कान्होर्या वीर' को इच्छित जगह पर भेजे। वहाँ की पूर्ण जानकारी वह देगा। फिर 'गगना, सगना, हनुमान' व 'भैरव वीर' को वहाँ भेजकर वहाँ की शक्तियाँ नष्ट करने—धोखे दूर करने को उन्हें कहे।

फिर 'शामरी वीर' को वहाँ भेजकर इच्छित कार्य, यथा—वस्तु लाना, धन लाना, औषधि लाना आदि पूर्ण करवा ले।

साधक अप्रत्यक्ष रूप में भी वीरों से कार्य करा सकता है। 'कङ्कन' कान को लगाकर इच्छित वीर का मन्त्र पढ़ने से वह वीर उसके साथ कानों में बातें कर मार्ग-दर्शन करता है, कार्य भी करता है। ऐसे अप्रत्यक्ष प्रयोगों के समय साधक को चाहिए कि पहले वह वीर के सम्मान हेतु अपने सिर पर वस्त्र (फेटा, टोपी आदि) बाँधे। तब उक्त प्रकार कार्य करे।

साधक अपनी रुचि के अनुसार कार्य निर्धारित कर सकता है। कार्य के अनुसार मन्त्र का उच्चारण होगा। मेरे एक मित्र वीरों द्वारा 'गुप्त धन' प्राप्त करना चाहते थे, किन्तु केवल वीरों से यह कार्य होना कठिन है क्योंकि कुछ धन-रक्षक वीरों की शक्ति के परे होते हैं। यथा—'भुजङ्ग', बेताल को भी भारी पड़ता है। ऐसे रक्षक अन्य मन्त्रों द्वारा नष्ट किए जाते हैं। यह 'गुप्त-धन' का विषय बड़ा विस्तृत है—जो मेरे पाठक बन्धु 'चण्डी' वर्ष ५६ से प्रारम्भ 'श्रीराम-कल्पतरु' के अन्तर्गत क्रमशः पढ़ेंगे।

विशेष सूचना—'कङ्कन' की पूजा में तेल+सिन्दूर अवश्य ले। 'वीर-कङ्कन' को पूजा-स्थान में ही रखे। हर पूर्णिमा व अमावास्या को उसमें तेल+सिन्दूर लगाए। ग्रहण-काल में सभी मन्त्र १०८ बार जप से सिद्ध करे तथा हर ग्रहण के समय कुछ जप अवश्य करे।

'वीर-साधना'-विषयक अन्य जानकारी

कुछ मान्त्रिक अँगूठी में वीर सिद्ध करते हैं। अन्यों को भी ऐसी वीर - अँगूठी बनाकर देते हैं। ऐसे साधकों से मेरी विनती है कि वे अपना ज्ञान बहु-जन-लाभार्थ प्रकाशनार्थ अवश्य दें।

शनि - अमावास्या को यदि घोड़े की नाल अचानक मिले, तो उसका 'कङ्कन' बनाकर उसमें 'वीर' की विद्या या अन्य कोई भी विद्या सिद्ध की जा सकती है। यदि कोई बन्धु इसके विधि - विधान का ज्ञाता हो, तो कृपया अपना ज्ञान प्रकाशनार्थ दें।—धन्यवाद।

भूल-सुधार

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ ८५ पर 'तान्त्रिक - सुधार' की सामग्री में क्रम अशुद्ध छपा है। शुद्ध क्रम इस प्रकार से है —१ कपूर, २ सफेद चन्दन व लाल चन्दन-चूरा, ३ गुग्गल व राल, ४ देशी खाण्ड, ४ जटा-मांसी और राई। 'सफेद व लाल चन्दन-चूरा' को तथा 'गुग्गल व राल' को एक ही सामग्री समझें।

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १४७, पंक्ति २० में 'तब' के स्थान पर 'प्रयोग के समय' पढ़े। पंक्ति २४ में 'बाँध' के स्थान पर 'बांधू' पढ़े। पृष्ठ १४८, पंक्ति ७ में 'हन' के स्थान पर 'हून' और पृष्ठ १४६, पंक्ति १५ में 'चर्ण' के स्थान पर 'चूर्ण' समझे।

विशेष शावर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा
१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)--२४१००१

(१) विपरीत-चालन-मन्त्र

(१) वज्र ओढ़े, वज्र पहने, वज्र - धरो मुख आगे। हनुमान जोधा पीठ पीछे, भीमसेन मुख आगे। जो मेरी जान का बुरा ताके, चक उल्टा उसी की जान को धक्के। उल्टा बज्र जिन्हीं भेज्या, उसी को जा, जिन्हीं भेज्या उसी को खा। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(२) एक ठो सरसों, सोल-सोला राई। मोरो पट-वर कोरी जाई। खाय-खाय पड़े, भार जेते मरे, उल्ट विद्या ताहि परे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। तो हनुमान का मन्त्र साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाचा।

(२) वशीकरण मन्त्र

या उस्ताज, बैठ पास। उस्ताज की लकड़ी, भगीरथ ने पकड़ी। उस्ताज पीर मददत गीर, मदद करनेवाला अल्लाह तू ही है। लोंगा-लोंग सलाई। लोंग - लोंग ने दी नाहर, उसके (नाम) तन - मन लगे सारी रात। उसे (नाम) बैठे चैन न उसे चैन, बिन देखे मेरे नैन दुहाई। बुलले गुरु की दुहाई। अञ्जनी के जाये की दुहाई। हनुमान दुहाई। हजरत सुलेमान पैगम्बर के तख्त की दुहाई। जो इन दच··· सेटल के जा, नौ-नौ देवी चमारी के नरक-कुण्ड में पड़े।

(२) बिस्मिल्लाह कर बैठिए, बिस्मिल्लाह कर बोल। बिस्मिल्लाह कुञ्जी कुरान की, जो चाहे सो खोल। धरती माता तू बड़ी, तुझसे बड़ा खुदाय। पीर-पैगम्बर औलिया, सब तुझमें रहे समाएँ। डाली-से-डाली झुकी, झुका झुका फूल-से-फूल। नर बन्दे तू क्यों नहीं झुकता, झुक गए नबी रसूल। गिरा पसीना नूर का, हुआ चमेली फूल। गुन्द-गुन्द लावने मालिनी पहिरे नबी रसूल।

(३) शत्रु-नाशक मन्त्र

जगती-जोत ब्रह्म-पुत्री, जत-सत की पूरी। निराधारों की आधार, पहाड़ों की सरदार, दुखियों के दुःख को कारनहार। नाम की रख

लज्जा, बहुड़ आए तो बीच मैदान और की मुश्किल करे…। वक्त पे तुझे सुमरु, कारज मेरे करे सवार दे, गोरख जाति सती गान्धारी को वर दियो। दुर्गा सी भवानी मित्र को रखनी, दुश्मन को मारनी, मुखड़ा - मन मोड़ कलेजा चढ़ जा। बैठ दुश्मन की छाती पर खून पीकर आए। देखूँ माता, साहाब की चौकी चढ़ाई, गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

(४) शत्रु-पीड़क मन्त्र

रण्डुवा - मण्डुवा जल भरा, धोबी कुण्ड में पड़ा। या कहार की चार मार। या कहार, या कहार, या कहार।

(५) श्मशान-कीलन-मन्त्र

ॐ मसान के मसान बाँधौ, चुड़ैल की चुड़ैल को बाँधौ, भूत को बाँधौ। दोहाई हिंगलाज की, दोहाई सैय्यद पीर की दुहाई।

(६) सर्व-कीलन-मन्त्र

कच्चा कलुवा कपला बाग, बावन जपे मसान, जपे - जपाजप करावे, भरा कटोरा रक्त मँगवाए। ढडिया तारा, सब पुरी माँगे, माँगे मद धार। जड़ाऊ-आढ़ बाँधू, पिछाड़े बाँधू, आढ़े बाँधू, इन्द्र का इन्द्रासन बाँधू, सात परदे धरती बाँधू, चौथा आसमान बाँधू, सौ-सौ कोस की विद्या बाँधू। मेरी कीलन टूटे, महादेव जी की आन—जटा टूटे। गोरखनाथ जी की दुहाई।

(७) भूत-प्रेत को बांधने का मन्त्र

काली-काली महा-काली, इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली, खड़ा-खड़ा मसान बजावै ताली, जा बैठी पीपल की डाली। बारह भट्टी मद की पीवै, सोलह बकरे खाए, आत्मा दौड़ी मरघट पर जाए। भूत-प्रेत को बाँध, जिन्द को जिन्नात को बाँध, डङ्कनी-सङ्कनी को बाँध, चुड़ैल बाँध, मैदाग्न को बाँध, चौराहे की कालिका को बाँध, भद्र-काली को बाँध, सूखिए मसान को बाँध, ललता को बाँध, घाल को बाँध, हड़प्पा को बाँध, मरघट की कालिका को बाँध, महा-माई को बाँध, दरिया को बाँध, नृसिह ढोडिया को बाँध, नृसिह को बाँध, इन्द्र - परियों को बाँध। जादू को बाँध, टूना को बाँध, मूठ को बाँध ना लाए, तो दुहाई गुरु गोरख जी की। तीन बार चली आवे, मरघट को मार - मार

करती हुई, हल्ला - हुल्ल मचाती हुई, दूसरे की चौकी उठाती हुई, अपनी चौकी दैठाती हुई। ना इतना काम करे, तो गुरु गोरखनाथ जी की दुहाई।

(८) हनुमान जी का मन्त्र

हनुमाव पहलवान बारह वर्ष का जवान, हाथ में खण्डा मुख में पान, खेल - खेल मठ लङ्का चौहान। अञ्जनी का पुत्र राम का दूत, क्षण में कीलो नो खण्ड का भूत। जाग-जाग हुङ्काला, ताती लोहा लङ्का ला, शीश डमरु गाजे। वज्र की कोठी वज्र का ताला, आगे अर्जुन पीछे भीम। वीर नस पे नसीर। अजरा झरे झरिया झरे, इह पिण्ड की रक्षा हनुमान करे।

(९) काल-भैरव का मन्त्र

ॐ नमः काल-भैरो, कपाल भैरो, कङ्काल भैरो, तू ही काशी का कोतवाल। हनुमान की मोहिनी, नारसिंह को कड़ो, ता सुमरो ता हाजिर खड़ो।

(१०) पसली-डबका-मन्त्र

समुद्र किनारे सुरा गाय, सुरा गाय के पेट में बच्चा, बच्चे के पेट में डिब्बा। डिब्बा कटे सरकण्डा बढ़े। दोहाई लोनिया चमारी की दूं।

(११) मिरगी-दौरा झाड़ने का मन्त्र

अजर नाम सबसे निज सारा, ये शब्द जीव उभारा। करम-भरम भया सब दूर, सद्-गुरु शब्द रहा भरपूर। मृत्यु रोग मिरगी का होय, अजर नाम सब दिना खोय। दौरा जाय साफ, निज शब्द जपे जो जाप, मिट गई मिरगी - रोग। असाध्या कहे कबीर - प्रतीति, ये ही मारा, ये सब जो जीव उभारा, दौरा जाए जल्दी। गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

(१२) हूक बन्द करने का मन्त्र

ॐ नमो सार की छूरी, धार का बानें, हूक न लले रे मौहम्मदा जवान की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

सभी मन्त्र मेरे हस्त-लिखित ग्रन्थ-संग्रह से प्रस्तुत हैं। इन मन्त्रों की साधना विधि-प्रयोग प्राप्त नहीं हो सके। 'विपरीत चालन' के

दूसरे मन्त्र के विषय में लिखा है कि राई, नमक, सरसों व कडुवे तेल से शत्रु का ध्यान करते हुए 'हवन' करे। 'वशीकरण' के दूसरे मन्त्र के विषय में लिखा है कि इस मन्त्र को बहते पानी के समीप एक सौ एक दाने की माला से प्रातः व सायं इक्कीस माला, इकतालीस दिन तक जपे। इकतालीसवें दिन सायं को हलवा प्रसाद ले आए। मन्त्र-जप के बाद कुछ हलवा पानी में छोड़ दे और शेष बच्चों में बाँट दे। जब किसी पर 'प्रयोग' करना हो, तो मन्त्र को कागज पर केसर-स्याही से लिखे। 'नर बन्दे' के स्थान पर उसका नाम लिखे। मन्त्र को पानी में घोल कर साध्य व्यक्ति को पिलावे, तो 'वशीकरण' हो। 'पसली-डबका-मन्त्र', 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ६६ में भी प्रकाशित है। यहाँ प्रयोग में कहा गया है कि 'जड़'-युक्त चौदह अंगुल का एक सरकण्डा लेकर, जड़ की ओर से मन्त्र पढ़ते हुए व रोगी को सरकण्डे से स्पर्श करते हुए फूँक मारे और प्रति बार यदि 'सरकण्डा' बढ़ जाए, तो उसे उतना ही काट कर निकाल दें। ऐसा तीन दिन तक करे।

शेष मन्त्रों की विधि प्राप्त नहीं।

(१३) हनुमत्-उपासना की सिद्ध धूप

हनुमत् - उपासना में 'धूप' का बड़ा विशेष महत्त्व है। कोई भी हनुमान जी का 'शाबर-मन्त्र' या 'हनुमान चालीसा', 'बजरङ्ग-बाण' अथवा साङ्गोपाङ्ग रूप की साधना हो, तो 'धूप' का प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए। इससे 'वायु - मण्डल' तो शुद्ध स्वच्छ होगा ही, हनुमान जी की कृपा से साधना भी सिद्ध-सफल होगी, विशेष फल की प्राप्ति होगी।

मङ्गलवार के दिन स्नानादि करके स्वच्छ हो भगवान् राम व सीता जी का पूजन अथवा स्मरण करके ही 'धूप' बनाए। देशी अज-वायन तीन तोले, कोड़िया लोहबान ढाई तोले, सिन्दूर तीन माशे, लाल-चन्दन का चूरा डेढ़ तोले, इन्द्र-जौ एक तोला, गुग्गल डेढ़ तोले, पुराना गुड़ ढाई तोले और तुलसी के पाँच-छः पत्ते। इन सबको कूट-छान कर गौ-घृत में मिला ले। घृत की मात्रा आवश्यकतानुसार ही ले। इस प्रकार जब 'धूप' तैयार हो जाए, तो 'साधना-काल' में शुद्ध अङ्गारे पर धूप जलाए।

पीड़ा-रोग-नाशक शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा
१५५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)-२५१००२

१. पीली तेंतिया—पीली तेंतियें, वो गई सीता की वाड़ी, मैंने उसकी लहर चटक उतारी। वाचा-वाचा सद्-गुरु का वाचा। मेरे गुरु का वचन साँचा। नूना देवी चमारी की आन। साबो चूढ़ी की दुहाई।

२. लाल तेंतिया—लाल तेंतिया, विष का भैय्या, विष ने बाँधा जोर। जहाँ तेंतिया लड़ता देखूँ, दोही मुण्डियाँ तोड़। वाचा-वाचा सद् - गुरु का वाचा, मेरे गुरु का वचन साँचा। नूना देवी चमारी की आन। साबो चूढ़ी की दुहाई।

३. बिच्छू—काला बिच्छू, पीला बिच्छू है कँकरि-याला, हरी पूँछ—सोने का पतनाला। इतना विष कहाँ से लाया ? वाचा - वाचा सद् - गुरु का वाचा, मेरे गुरु का मन्त्र साँचा। नूना देवी चमारी की आन। साबो चूढ़ी की दुहाई।

४. थनैला रोग—भुरे मन का भोर भुसैला, भूरे लड्डू खायें। मैं चूची झाड़ू आपनी, थनैला अमुक का जाए। वाचा - वाचा सद् - गुरु का वाचा, मेरे गुरु का मन्त्र साँचा। नूना देवी चमारी की आन। साबो चूढ़ी की दुहाई।

५. मिट्ठा रोग—काली चिड़िया चोंचली, कजले वन को जाए। कजले वन से क्या लाए? कोयला लाए। कोयला लाकर क्या करे? माना लोहार को दे। माना लोहार क्या करे? पतन छूड़ी गड़ाए। वाचा-वाचा सद्-गुरु का वाचा, मेरे गुरु का मन्त्र साँचा। नूना देवी चमारी की आन। साबो चूढ़ी को दुहाई।

६. आधा शीशी—काली चिड़िया चोंचली, विष की गोप खाए। उठ कर बामन झाड़ दे, आधा शीशी जाए। वाचा-वाचा सद्-गुरु का वाचा, मेरे गुरु का मन्त्र साँचा। नूना देवी चमारी की आन। साबो चूढ़ी की दुहाई।

विधान व प्रयोग—प्रस्तुत सभी मन्त्र विशेष अनुभूत फल-प्रद हैं। सभी मन्त्रों में आन-दुहाई एक समान है। किसी विशेष पर्व पर इष्ट-देव की यथोपचार-पूजा कर, ११ माला मन्त्र - जप करे। गुग्गल की धूनी का प्रयोग मन्त्र-जप तक अवश्य करे।

पहले तीनों मन्त्रों के प्रयोग के लिए अप्रैल-मई में 'आम की बौर' को अपने दोनों हाथों में रगड़ ले। २५ दिन ऐसा करे। इसके रस का प्रभाव विष-निवारण में एक वर्ष तक रहता है। तेंतिए के विष-निवारण में व्यक्ति के दंश-स्थान पर भभूत से ११ या २१ बार झाड़े। पीड़ा का उसी समय निवारण होगा। बिच्छू - विष - निवारण में 'नीम' की टहनी का उपयोग करे। व्यक्ति के दंश - स्थान पर अपने हाथ का स्पर्श अवश्य कराता रहे।

चौथे मन्त्र का प्रयोग इस प्रकार है कि जिस औरत की छाती में थनैला हो, वह औरत 'नमक' की सात डलियों को, जिस छाती में थनैला हो, उससे सात बार छुआ करके झाड़नेवाले को दे दे। झाड़ने-वाला 'नमक' की इन डलियों को लेकर अपनी छाती पर झाड़ दे। यदि औरत की दाईं छाती में थनैला हो, तो बाँईं छाती झाड़े और यदि बाँईं छाती में थनैला हो, तो दाईं छाती झाड़े। ऐसा तीन दिन करे। प्रत्येक दिन नमक की डलियों को 'आक' के पौधे पर छोड़ आए।

पाँचवें मन्त्र के प्रयोग में रोगी बच्चे को तीन दिन तक प्रातः व सायं चाकू से झाड़ दे। छठे मन्त्र के प्रयोग में रोगी को 'भभूत' से झाड़े। इसका प्रभाव शनिवार-रविवार में विशेष होता है।

'पंचदशी-यन्त्र'

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ ८२ में 'अम्बिका-मन्त्र' प्रकाशित है। प्रस्तुत-कर्त्ता पं. रामलखन उपाध्याय जी ने इसके प्रयोग का आधार 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ५५, मन्त्र-संख्य १० से लिया है। इस मन्त्र में कई रहस्य-मय बातें हैं, जिनको प्रकट करने का प्रयास नहीं हुआ है।

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ में प्रकाशित 'चौंतीसा - यन्त्र' वास्तव में 'षोडशी यन्त्र' है, जिसकी अधिष्ठात्री देवी राज-राजेश्वरी भगवती षोडशी हैं। 'बीसा-यन्त्र' की अधिष्ठात्री देवी भगवती मङ्गल-चण्डिका एवं जैन-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध '६५ वें यन्त्र' की अधिष्ठात्री देवी पद्मावती हैं। 'पञ्चदशी-यन्त्र' की अधिष्ठात्री देवी भगवती अन्न-पूर्णा हैं। 'दीपावली'-महा-पर्व पर यह 'पञ्चदशी-यन्त्र' व्यापारिक स्थानों एवं घरों में लिखा-पूजा जाता है।

देखने में 'पञ्चदशी-यन्त्र' नौ कोष्ठकों का यन्त्र है, जिसमें एक से लेकर नौ अङ्कों का विशेष क्रम है और इन अङ्कों का खड़ा-पड़ा-तिरछा जोड़ 'पन्द्रह' होता है। इसलिए इसे 'पञ्चदशी-यन्त्र' कहते हैं। यदि हम 'पञ्चदशी-तन्त्र' के श्लोक ६ पर ध्यान दें, तो 'पञ्चदशी - यन्त्र' में 'नौ अङ्कों के प्रयोग' का आधार स्पष्ट होता है। यथा—

चन्द्र - नेत्रे तथा वह्निर्वेद - बाण - रसास्तथा।
मुनि-नाग-ग्रहा ज्ञेयाः, पञ्चदश्यास्तु मध्यमाः॥

अर्थात् १-चन्द्र, २-नेत्र, ३-वह्नि, ४-वेद, ५-बाण, ६-रस, ७-मुनि, ८-नाग, ९-ग्रह है। 'चन्द्र' एक है, 'नेत्र' दो हैं, दावानलादि 'वह्नि' तीन हैं, 'वेद' चार हैं, 'बाण' पाँच हैं, 'रस' छः हैं, 'मुनि' (ऋषि) सात हैं, 'नाग' (वसु) आठ हैं और 'ग्रह' नौ हैं।

उक्त 'पञ्चदशी - यन्त्र' के आधार पर 'नौ ग्रहों के यन्त्रों का निर्माण' भी होता है। यन्त्र के नौ भावों से ग्रहों का सम्बन्ध है। नौ ग्रहों के यन्त्रों से स्पष्ट है कि अङ्क एक से 'सूर्य' का, दो से 'चन्द्रमा' का, तीन से 'मङ्गल' का, चार से 'बुध' का, पाँच से 'गुरु' का, छः से 'शुक्र' का, सात से 'शनि' का, आठ से 'राहु' का और अङ्क नौ से आरम्भ करने पर 'केतु' के यन्त्र का निर्माण होता है।

'पञ्चदशी-यन्त्र' में राशियों तथा ग्रहों की दिशाएँ भी निश्चित हैं। उनके तत्त्व भी निश्चित हैं। जिस प्रकार 'ग्रह'—राशि-विशेष में ऊँच या नीच का प्रभाव देते हैं, उसी प्रकार 'तत्त्व-परिवर्तन' में 'यन्त्र का प्रभाव' भी परिवर्तित हो जाता है। 'यन्त्र' की चाल से ग्रहों व शक्तियों का स्थान निश्चित होता है। चाल से अङ्क तो बदलते हैं, किन्तु अङ्कों का प्रभाव नहीं बदलता। जिन कोष्ठकों में जिन अङ्कों को स्थापित करेंगे, वे अङ्क भावाधिपति देवता या शक्ति का प्रतिनिधित्व करेंगे। वे कोष्ठक (या भाव) इन ग्रहों के 'स्थिर भाव' कहे जाएँगे। 'तत्त्व-परिवर्तन' से 'यन्त्र'—मारण-मोहनादि कार्य करते हैं। किसी 'ग्रह के कुफल का स्तम्भन' भी 'यन्त्र' की दिशा - परिवर्तन से हो सकता है। उच्च दिशा में कर उस 'ग्रह को बल' भी दे सकते हैं।'

जिस प्रकार 'चौंतीसा-यन्त्र' के प्रत्येक भाव पर षोडश मातृकाओं का प्रभुत्व है, उसी प्रकार नौ कोष्ठकों के 'पञ्चदशी-यन्त्र' में नौ दुर्गाओं का अधिकार है। दूसरे शब्दों में नौ अङ्कों तथा भावों (कोष्ठकों) का स्वभाव नौ दुर्गा-शक्तियों से मिलता है।

नव-दुर्गा एवं पञ्च-दशी यन्त्र

महा-गौरी ८	शैल-पुत्री १	कात्यायनी ६
चन्द्र-घण्टा ३	स्कन्द-माता ५	काल-रात्रि ७
कूष्माण्डा ४	सिद्धि-दात्री ९	ब्रह्म-चारिणी २

पञ्च-दशी यन्त्र में ग्रहों का क्रम

राहु ८	सूर्य १	शुक्र ६
मङ्गल ३	गुरु ५	शनि ७
बुध ४	केतु ९	चन्द्र २

श्री भैरवानन्दनाथ जी ने जो 'पञ्च-दशी - मन्त्र' प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार का मन्त्र मेरे हस्त-लिखित ग्रन्थ-संग्रह में निम्न प्रकार है—

अष्ट (८) कला परमेश्वरी, एको (१) पुरुष प्रवान,
षड (६) दर्शन को सेविए, तीनों (३) भए सुजान।
पञ्च (५) भुवा मैं सिद्ध करूँ, सत्य (७) धर्म की बात,
चार (४) द्वीप, नव (९) खण्ड, दो (२) चन्द्र - सूरज
की साख।

उक्त मन्त्र में अनेक रहस्य-मय बातें हैं। स्थूल रूप में 'मन्त्र' के शब्द अङ्क - सूचक हैं, परन्तु सूक्ष्म - रूप में इनका विशेष महत्त्व है। 'अष्ट-कला' अष्ट शक्तियों का समूह है, जिसका सञ्चालन एक ही 'परमात्मा' (तत् पुरुष) करते हैं। उनको प्राप्त करने के लिए 'षड्-दर्शन शास्त्र' पृथक्-पृथक् विधान बताते हैं। 'षड् - दर्शन' के सेवन से तीनों सुजान होते हैं—१-ब्रह्म, २-माया, ३-प्रकृति; १ सत्, २ रज, ३ तम; १-आधि-दैविक, २-आधि-भौतिक, ३-आध्यात्मिक; १ इच्छा, २ क्रिया, ३ ज्ञान। इस प्रकार 'पञ्चदशी-यन्त्र' का बहुत व्यापक अर्थ है, जो चार द्वीप, नव - खण्ड में विद्यमान है और जिसकी सिद्धि में 'चन्द्रमा' एवं 'सूर्य' साक्षी हैं।

मन्त्र के इन भावों में 'साधना' का सुन्दर सङ्कल्प गर्भित है। पं. रामलखन उपाध्याय जी ने मात्र मन्त्र के भावों से प्रकट अङ्कों को क्रमानुसार कोष्ठकों में भरने को कहा है। इससे 'पञ्चदशी-यन्त्र' न तो अनुलोम रीति से निर्मित हो सकता है और न ही विलोम रीति से। केवल अङ्कों का पंक्ति-बद्ध निर्माण होगा, जो अप्रामाणिक व अनुचित है। 'विधि' अशुद्ध है, तो फल भी शून्य ही होगा। आधार-हीन प्रयोग से हानि की सम्भावना भी रहेगी। अतः 'अम्बिका मन्त्र', 'पञ्चदशी-यन्त्र' के स्वरूप को कण्ठस्थ कराता है, किन्तु यदि इस मन्त्र से 'यन्त्र की रचना' करेंगे, तो 'यन्त्र-निर्माण' के समय अनुलोम - विलोम का प्रश्न साधक को सन्देह की स्थिति में रखेगा।

अतएव मेरे विचार से 'पञ्चदशी - यन्त्र' का 'निर्माण व प्राण-प्रतिष्ठा' शास्त्रीय रीति से करना चाहिए। 'षट्-कर्म प्रयोग-साधन' के लिए 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ या 'पञ्चदशी-तन्त्र' का अनुसरण

करना चाहिए। प्रत्येक कर्म में 'यन्त्र' के साधन का पृथक् - पृथक् विधान है।

'पञ्चदशी-यन्त्र' का अन्य 'शाबर-मन्त्र' इस प्रकार है—

अष्ट (८) भुजी परमेश्वरी, एक (१) पुरुष भगवान्,
षट् (६) रस को सुमर के, सुमरट तीनों (३) भए सुजान।
पाँच (५) भूत बस में करे, कहो सत् (७) धर्म की बात,
चार (४) युग, नव (९) खण्ड, दो (२) चांद-सूरज प्रकाश।

श्रीहनुमान वशीकरण-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : त्रिलोकचन्द्र नावेड़ा
खाचरौद, उज्जैन (म. प्र.)

ॐ राई वर राई पचरसी। बारह सरसू तेरह राई। नव्वे दिन मङ्गलवार को ऐसी भाऊ, पराई स्त्री (साध्या का नाम) को भूल जाए घर-बार। घर छोड़, घर की डेरी छोड़। छोड़ माँ - बाप और छोड़ घर का साथ, हो जा मेरे साथ। दुहाई तुझे हलाहल हनुमान की। मेरा काम जल्दी कर, नी करे तो माँ अञ्जनी के सेज पर पाँव धरे। तेरी माता का चीर फाणीने लँगोट करे। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को पहले 'नवरात्र' या 'ग्रहण' में सिद्ध करे। 'नवरात्र' में मङ्गल और शनिवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाए और प्रति-दिन हनुमान जी की मूर्त्ति के समक्ष १०८ बार 'जप' करे। 'जप' के समय अपने पास 'राई' और 'सरसों' रखे। मन्त्र पढ़कर इन्हें अभिमन्त्रित करे। बाद में आवश्यकतानुसार 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' के समय चतुराई से तेरह राई 'साध्या' की डेहरी पर डाले और बारह सरसों उसके घर पर फेंके।

उपयोगी शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अशोककुमार वर्मा
हल्दुन्या भवन, बी. २२६, सीतारामपुरी, हीदा की मोरी,
जयपुर (राजस्थान)–३०२००३

[यहाँ कुछ 'शाबर-मन्त्र' जन-हितार्थ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इनमें से कुछ मन्त्र 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के पूर्व-प्रकाशित भागों में प्रकाशित मन्त्रों से मिलते-जुलते हैं। ये मन्त्र मुझे सन् १९८० में विज्ञ-जनों से प्राप्त हुए थे। पहली बार यहाँ प्रस्तुत हो रहे हैं।

इसके साथ ही, समस्त सम्माननीय साधकों एवं पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' से मन्त्रों का चयन करके 'साधना' या 'अनुष्ठान' किया है या कर रहे हैं, वे अपने अनुभव 'चण्डी-कार्यालय', प्रयाग-राज–६ को प्रेषित करने की कृपा करेंगे, जिससे उपयोगी मन्त्रों की जानकारी का विवरण तैयार हो सके। इससे हमें 'शाबर'-मन्त्रों के शोध-कार्य में बहुत सहायता मिलेगी।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

(१) वशीकरण मन्त्र

(१) धूल-धूल—तू धूल की रानी, जगमोहन सुन मोर बानी। जल से धुला आन पढ़ूँ, तब पार्वती वरदान धूलि पड़ि। तू अमुकी अङ्ग, जो जलती आती उमङ्ग, उसका मन लावे निकाल, हमारी वश्यता करे स्वीकार॥

विधि : सिद्धि हेतु 'होली' की रात्रि में ११ माला जप करे। प्रयोग के समय साध्या के बाँएँ पैर की मिट्टी लेकर उसे उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करे। मन्त्र में 'अमुकी' - शब्द के स्थान पर साध्या का नाम कहे। फिर एक चुटकी मिट्टी साध्या के सिर पर सावधानी-पूर्वक डाले।

(२) ॐ नमो आदेश गुरु का, धूली - धूली विकट चाँदनी पर मारु धूली। फिर दिवाना महल तजे, घर-

दुआर तजे, ठाठा भरतार तजे। देवी - दिवानी एक सठी फलवान, तू नरसिंह वीर ! अमुकी को उठाय ला। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

विधि : 'सिद्धि' हेतु किसी 'शनिवार' से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। जप २१ दिन तक करे। जिस स्त्री की मृत्यु शनिवार को हुई हो, श्मशान-क्रिया के पश्चात् उसके पैर की ओर का अङ्गार (कोयला) लाए तथा चौराहे की चुटकी भर धूल लेकर उसमें कोयले को पीस कर मिलाए। फिर उक्त मन्त्र से उसे ७ बार अभिमन्त्रित कर युक्ति-पूर्वक साध्या के शरीर पर डाले।

(३) **ॐ नमः धूली धूलेश्वरी, मातु प्रमेश्वरी, चञ्चती जय इनारन। चोप भरे छार-छारते में हटे, देता घर-बार, करे तो मशान लौटे। जीवे तो पाव लौटे। वचन बाँधो। अमुकी को धाई लाव, मातु धूलेश्वरी। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ठः ठः स्वाहा ॥**

विधि : सिद्धि हेतु ७ शनिवार (केवल शनिवार-शनिवार को) उक्त मन्त्र १४४ बार जपे। १४४ की संख्या को ध्यान में रखे, कम या ज्यादा न जपे। अन्तिम ७ वें शनिवार को जप कर, 'रविवार' के दिन जो स्त्री मरे व जिसका रविवार को ही दाह - कर्म हो, उसकी चिता से तीन चुटकी राख लेकर उसमें चौराहे की थोड़ी धूल मिलाए। फिर उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर 'साध्या' पर डाले। मन्त्र में 'अमुकी' के स्थान पर साध्या का नाम ले।

(४) **खरी सुपारी. टाम नगारी। राजा परजा, खरी पियारी। मन्त्र पढ़ लगाऊ, तो रहिया कलेजा लावे दौड़, जीवित चाटै पग-तली। मूवे सेवे मसान या शब्द की मारी, न लावे तो जयी हनुमन्त की आन। शब्द साँचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥**

विधि : पहले 'सूर्य या चन्द्र - ग्रहण' में ३ माला जप करे। फिर सामान्य दिनों में 'शनिवार' से जप प्रारम्भ करे तथा नित्य २१

दिन तक एक माला जप करे। प्रयोग के समय सुपारी पर उक्त मन्त्र सात बार पढ़कर फूँक मारे और साध्या को खाने के लिए दे।

(२) सट्टा-लाटरी जीतने का मन्त्र

ॐ मणि-नद चित-कार ! सरवार्थ सिद्ध कर। सपने में सट्टे का अङ्क दरश-दरश स्वाहा।।

विधि : रात्रि में उक्त प्रयोग करे। अपने पास पाँच उड़हुल फूल (गुड़हल) तथा एक लोटा जल रखे। पूर्वाभिमुख हो धूप - बत्ती जला कर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। एक बार मन्त्र जपे और अनामिका अँगुली से जल के छींटे फूलों पर डाले। इस तरह १०८ बार जपे और १०८ बार फूलों पर जल के छींटे लगाए। जप के पश्चात् पाँचों फूलों को अपने सिरहाने रख कर सो जाए। सपने में अङ्क दिखाई देंगे या आवाज सुनाई देगी। एक दिन में ऐसा न हो, तो विश्वास न छोड़े तथा प्रयोग को लगातार तीन दिन तक करे। सफलता अवश्य मिलेगी :

(३) सङ्कट से रक्षा का मन्त्र

हनुमान हठीला लौंग की काट, बजरङ्ग का टीला ! लावो सुपारी। सवा सौ मन का भोगरा, उठाए बड़ा पहलवान। आस कीलूँ—पास कीलूँ, कीलूँ अपनी काया। जागता मसान कीलूँ, बैठूँ जिसकी छाया। जो मुझ पर चोट-चपट करें, तू उस पर बजरङ्ग ! सिला चला। ना चलावे, तो अञ्जनी मा की चीर फाड़ लँगोट करें, दूध पिया हराम करें। माता सीता की दुहाई, भगवान् राम की दुहाई। मेरे गुरु की दुहाई।।

विधि : हनुमान जी के प्रति समर्पण व श्रद्धा का भाव रखते हुए शुभ मङ्गलवार से उक्त मन्त्र का नित्य एक माला जप ६० दिन तक करे। पञ्चोपचारों से हनुमान जी की पूजा करे। इससे मन्त्र में वर्णित कार्यों की सिद्धि होगी एवं शत्रुओं का नाश होगा तथा परिवार की सङ्कटों से रक्षा होगी।

(४) एक शाबर टोटका

शनिवार के दिन यदि किसी की मृत्यु हो और उसी दिन उसका श्मशान में दाह-कर्म किया जाए, तो एक मिट्टी की हांडी में खिचड़ी बनाकर श्मशान - भूमि में ले जाए। जिस स्थान में मुर्दा जलाया जाए, वहाँ पर उस खिचड़ी को जमीन में बिखेर दे। दूर बैठ जाए और जब शव-यात्रा के लोग लौट कर चले जाएँ तथा बिखरी हुई खिचड़ी को कौवे खाने लगें, तब हँडिया में जो कुछ खिचड़ी बच जाय, उस हँडिया को उठाकर चल दे। पीछे न देखे, पूरी क्रिया सम्पन्न होने तक मौन रहै। मार्ग में जो भी नीम का वृक्ष मिले, उसी के तने पर हांडी को दे मारे। इससे हांडी के कुछ चावल जमीन पर गिर जाएँगे, कुछ चावल नीम के तने में चिपक जाएँगे। सावधानी-पूर्वक दोनों चावलों को एकत्रित कर ले। चिपके चावलों को अलग बाँधे और जमीन पर गिरे चावलों को अलग बाँधे। दोनों पोटलियों को गुग्गल की धूनी देकर, जहाँ सुविधा हो, एकान्त में गाड़ दे। गाड़े हुए स्थान पर निशान लगा दे तथा शनि-वार को उस स्थान पर भोग चढ़ाए। भोग में एक बताशा, गुग्गल, मद्य चढ़ाए। ऐसा ७ शनिवार करे। जब सात शनिवार पूरे हो जाएँ, तब भूमि खोद कर उन चावलों को निकाल ले व घर आ जाए तथा उन्हें सुरक्षित स्थान पर रखे। जब कभी 'वशीकरण' का कार्य हो, तब नीम से चिपके हुए चावलों में से दो-चार चावल साध्य के शरीर पर फेंके। कार्य पूरा होने के बाद यदि आपको

उसकी आवश्यकता न हो, तो जमीन पर गिरे हुए चावलों में से दो-चार चावल उसको किसी भी वस्तु के माध्यम से खिलाए । इससे वह आपसे कौवे की तरह मुँह फेर लेगा अर्थात् आपसे दूर हो जाएगा ।

उक्त टोटका बिना मन्त्र का 'वशीकरण' है, परन्तु इसकी क्रिया उग्र व कठिन है। इससे 'वशीकरण' अचूक होता है। साधक-गण अपनी शरीर-रक्षा का विधान करने के बाद ही सावधानी-पूर्वक साहस के साथ इसका प्रयोग करें ।

(५) ॐ नमो काला भैरव ! काली रात, काला आया आधी रात । चले कतार बांधि तू बावन वीर ! पर-नारी सों राखे सीर । छाती धरि के वाको लावे । सोती होय, जगाय लावे । बैठी होय, उठाय लावे । सत्य-नाम आदेश गुरू का ।

विधि : यदि 'रविवार' को 'होली' या 'दिवाली' हो, तो रात्रि में लाल एरण्ड का छोटा-सा पौधा बाँएँ हाथ से एक झटके में उखाड़ कर ले आए। एक दिन पहले शनिवार को उसको लाने के लिए निमन्त्रण भी दे और उसको पीसकर रुई की बत्ती में लपेट ले। 'तेल के दीपक' में इसी बत्ती को जलाए तथा एक कोरी सराई इसकी लौ के ऊपर किसी आधार पर रखे। उक्त मन्त्र का ७ माला जप करे। 'वशीकरण'-प्रयोग के समय सराईवाले काजल को अँगुली पर लेकर उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके, साध्या के वस्त्र या शरीर पर युक्ति-पूर्वक लगाए ।

(६) ॐ नमो काला कलवा ! काली रात, निस की पुतली, मांझी रात । काला कलवा ! घाट-बाट सूती को जगाई लाव, बैठी को उठाइ लाव, बेगी घरघा लाव । मोहिनी - जोहिनी ! चल राजा की ठाउ, अमुकी के तन में

चटपटी लगाव, जी पाले तोड़। जो कोई खाइ हमारी इलायची। कभी न छोड़े हमारा साथ। घर को तजे, बाहर को तजे, और कने जाय, तो छाती फाट तुरन्त मर जाय। सत्य नाम आदेश गुरू का। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। ईश्वर महादेव की वाचा, वाचा टरे, तो कुम्भी नरक में पड़े॥

विधि : उक्त मन्त्र का २१ दिनों तक नित्य १०८ बार जप करे। प्रयोग करते समय 'अमुकी' के स्थान पर साध्या का नाम ले और २१ बार २ इलायचियों को अभिमन्त्रित कर खिलाए।

पैंतीस अक्षरी मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : स्वामी साधनानन्द जी
ऊधम सिंह नगर (उ. प्र.)

[प्रस्तुत 'पैंतीस अक्षरी' मन्त्र पञ्जाबी भाषा का है। पञ्जाबी सन्त पूज्य श्री सदानन्द जी ब्रह्मचारी की कृपा से यह प्राप्त है। इस मन्त्र का प्रभाव अद्भुत है। 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ७०-७१ में यह मन्त्र छापा गया था, किन्तु 'मन्त्र' अधूरा था। मन्त्र में ३५ अक्षरों के स्थान पर केवल ३० अक्षर छपे थे। पञ्चम में **'ता था दा धा ना'** नहीं था। 'पूर्ण मन्त्र' के लिए हमने 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ ११ पर लिखा था। दैव - योग से स्वामी साधनानन्द जी, ऊधम सिंह नगर (उ. प्र.) को एक पाण्डु-लिपि में 'पूरा मन्त्र' देखने को मिला और उन्होंने वह 'पूरा मन्त्र' हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा। हम सभी उनके इस सहयोग के लिए आभारी हैं। अब पूरा मन्त्र यहाँ पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि पाठक बन्धु इससे लाभान्वित होंगे।—सम्पादक]

।। ॐ एक ओङ्कार श्रीसत्-गुरु प्रसाद ॐ ।।

ओङ्कार सर्व - प्रकाशी । आतम शुद्ध करे अविनाशी ।।
ईश जीव में भेद न मानो । साद चोर सब ब्रह्म पिछानो ।।
हस्ती चींटी तृण लो आदम । एक अखण्डत बसे अनादम् ।।

ॐ आ ई सा हा

कारण करण अकर्ता कहिए। भान प्रकाश जगत ज्यूँ लहिए ।।
खान - पान कछु रूप न रेखं । विविकार अद्वैत अभेखम् ।।
गीत गाम सब देश देशन्तर । सत करतार सर्व के अन्तर ।।
घन की न्याईं सदा अखण्डत । ज्ञान बोध परमातम पण्डत ।।

का खा गा घा ङा

चाप ङ्यान कर जहाँ विराजे । छाया द्वैत सकल उठि भाजे ।।
जाग्रत स्वप्न सखोपत तुरीया । आतम भूपति की यहि पुरिया ।।

झुणत्कार आहत घनघोरं। त्रकुटी भीतर अति छवि जोरम् ।।
आहत योगी ञा रस-माता। सोऽहं शब्द अमी-रस-दाता ।।
चा छा जा झा ञा

टारनभ्रम अघन की सेना। सत-गुरु मुकुति पदारथ देना।।
ठाकत द्रुगदा निरमल करणं। डार सुधा मुख आपदा हरणम् ।।
ढावत द्वैत हन्हेरी मन की। णासत गुरु भ्रमता सब मन की ।।
टा ठा डा ढा णा

तारन, गुरु बिना नहीं कोई। सत सिमरत साध बात परोई ।।
थान अद्वैत तभी जाई परसे। मन-वचन-करम गुरु-पद दरसे ।।
दारिद्र रोग मिटे सब तन का। गुरु करुणा कर होवे मुक्ता ।।
धन गुरुदेव मुकुति के दाते। ना - ना - नेत बेद जस गाते ।।
ता था दा धा ना

पार ब्रह्म सम्माह समाना। साद सिद्धान्त कियो विख्याना ।।
फाँसी कटी द्वात गुरु पूरे। तब वाजे सबद अनाहत धत्तूरे ।।
वाणी ब्रह्म साथ भये मेल्ला। भङ्ग अद्वैत सदा ऊ अकेल्ला ।।
मान - अपमान दोऊ जर गए। जोऊ थे सोऊ फुन भये ।।
पा फा बा भा मा

या किरिया को सोऊ पिछाना। अद्वैत अखण्ड आपको माना ।।
रम रह्या सबमें पुरुष अलेखं। आद अपार अनाद अभेखम् ।।
ड़ा ड़ा मिति आतम दरसाना। प्रकट के ज्ञान जो तब माना ।।
लवलीन भए आदम पद ऐसे। ज्यूँ जल जले भेद कहु कैसे ।।
वासुदेव बिन और न कोऊ। नानक ॐ सोऽहं आत्म सोऽहम् ।।
या रा ला वा ड़ा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लूं श्री-सुन्दरी-बालायै नमः ।।

।। फल-श्रुति ।।

पूरब मुख कर करे जो पाठ। एक सौ दस औ ऊपर आठ ।।
पूत लक्ष्मी आपे आवे। गुरु का वचन न मिथ्या जावे ।।
दक्षिन मुख घर पाठ जो करै। शत्रू ताको तच्छिन्न मरै ।।
पच्छिम मुख पाठ करे जो कोई। ताके बस नर-नारी होई ।।

उत्तर दिसा सिद्धि को पावे। ताके वचन सिद्ध होइ जावे ॥
बारा रोज पाठ करे जोई। जो कोई काज होवे सिद्ध सोई ॥
जाके गरभ-पात होइ जाई। मन्त्रित कर जल-पान कराई ॥
एक मास ऐसी विधि करे। जनमे पुत्र फेर नहिं मरे ॥
अठराहे दाराऊ पावा। गुरु - कृपा ते काल रखावा ॥
पति बस कीन्हा चाहे नार। गुरु की सेवा माहि अधार ॥
मन्तर पढ़ के करे आहुती। नित्य-प्रति करे मन्त्र की रुती ॥
॥ ॐ तत्सत् ब्रह्मणे नमः ॥

विशेष : 'फल-श्रुति' का पाठ 'जप' के अन्त में एक बार करे। 'फल - श्रुति' के अनुसार नित्य १०८ बार पूर्व की ओर मुँह कर इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी एवं पुत्रादि की प्राप्ति होती है। दक्षिण की ओर मुँह कर जपने से शत्रुओं का नाश होता है। पश्चिम की ओर जप करने से नर-नारी वशीभूत होते हैं। उत्तर की ओर मुँह कर जप करने से वाणी सिद्ध हो जाती है। १२ दिन लगातार पाठ करने से कार्य-सिद्धि होती है। जिस किसी को गर्भ - पात होता हो, उसे इस से अभिमन्त्रित जल को एक मास पिलाने से पुत्र की प्राप्ति होती है। विशेष लाभ के लिए मन्त्र के जप के साथ-साथ नित्य हवन करे।

शाबर-मन्त्र-सर्वस्व

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० अरुणकुमार मिश्र
संस्कृत-प्रवक्ता, शि० पू० इ० का० मलसा, गाजीपुर (उ. प्र.)

(१) परी - सिद्धि - मन्त्र—वास वरहा देहु गिराई डाइन बान्हों। पाँहुच लाई जाय करौ मैं दुर्गा माई। गाढ़े दुर्गा होहु सहाई। ओढ़हुल फूल फुले टहकार, ताहा सम्मे करे सिङ्गार। मारे-मारे कहे, निर्मल पल्हार। कै परी ? लवङ्ग परी, फूल परी, तक्षक परी, दरवानी परी, शीत परी, नूड़ परी, जहूर परी की बन्दी पाँव। ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती दोहाई। सिद्ध गुरु की बन्दगी, मन्त्र पूर। भूत-प्रेत टोना छूटे जरूर ॥

विधि : उक्त मन्त्र को वृहस्पतिवार या शुक्रवार को रात्रि में ८ बजे से २ बजे तक श्वेत वस्त्र धारण कर, सुगन्धित सामग्री इत्र आदि लगाकर, ७ ओढ़हुल का फूल सामने रखकर, एकाग्र चित्त से जप करे। ऐसा ४० दिन तक करे, तो परी प्रकट होंगी। उससे जो इच्छा हो, माँग ले।

(२) परी-वशीकरण का मन्त्र—ॐ ह्रीं कनक परी स्वाहा ॥

विधि : शनिवार की रात में शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहन कर, अपने पास चमेली का फूल, सुगन्धित सामग्री रखकर चमेली के तेल का दीपक जलाए और उक्त मन्त्र का १०,००० बार जप करे। 'जप' के बाद 'मद्य' से १०८ आहुतियाँ दे। ऐसा ८ दिन तक करे। साधना-काल में ब्रह्मचर्य का पालन करे एवं एक बार भोजन अथवा दुग्ध-पान करे, तो अति उत्तम। इससे परी सिद्ध होती है और उचित कार्य सम्पन्न होते हैं।

(३) रास्ता बाँधने का मन्त्र—हाट चलत, हाट बान्हों। बाट चलत, बाट बान्हों। माई-बेटी दाइन बान्हों। बापा पुता, ओझा बान्हों। ओझा क ओझाई बान्हों। दोहाई ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती क।

विधि : पहले 'ग्रहण' आदि में उक्त मन्त्र का जप करे। फिर यदि कभी रास्ते में भूत-प्रेतादि से भेंट हो, तो उक्त मन्त्र ७ बार पढ़-कर धूल आगे-पीछे फेंके। भूत-प्रेत सामने से भाग जाएँगे।

(४) **डाइन-धरा-मन्त्र**—डाइन डुइन सुतार पात। खोटार चोटे करै लाग नास। एदि के राम, ओदि के सीता। माझे तार डाइ-नेर मत्था, खोटार घाए मांथा फाटे। शिर कुइड़ा रक्त छोटे। अमुकेर अङ्गे जे करे छे दृष्टि। तार परे नाइरिष्टि आय। शीघ्र आय, आय आय नैलेर। रुद्र देवेर जटा पड़े रुद्रानिर पाय। ओं लूं ह्रीं लूं फट् स्वाहा ओं फू: ॥

विधि : उक्त मन्त्र बँगला भाषा में है, जिसे मैंने नागरी लिपि में ऊपर लिखा है। इसकी विधि भी बँगला में है, जिसे मैं नागरी लिपि में लिख रहा हूँ। बँगला भाषा के किसी ज्ञाता-बन्धु द्वारा इससे लाभ उठा सकते हैं। यथा—"तिन हस्त परिमान एकटी वास, एई मन्त्र पूतः करत मृत्तिकाय पुतिया, ताहाते सिन्दुर ओ जाफरान (केसर) भाखाइया दिवे। एवं तुमि जानू पातिया वसिया मने मने एक रात अष्ट बार एई मन्त्र (यन्त्र) आओ डाइबे। ताहा हइले डाइन आसिया सम्मुखे उपस्थित हइबे।

(५) **कब्र-सिद्धि-मन्त्र**—वीर चले, बन-वीर चले। पीर मक-दुम चले, सहसर सो योगिनी चले। थुका हाभ जाहो घर मोरा, इसभ कार ना माने, तो बीबी जमाली के दुध हराम होय, तोबा तोबा।

विधि : ४० दिन शीरनी रखकर, कोड़िया लोहबान का दशाङ्ग देकर, मुस्लिम विधि से पश्चिम होकर, जिसकी मृत्यु शनिवार को हुई हो, उसकी कब्र के पायताने में ८ बजे से ४ बजे तक उक्त मन्त्र का जप करे। इससे कब्र-सिद्धि होती है।

(६) **बाँस के कइन से चोर का नाम निकालने का मन्त्र**—राजा अर्जुन के प्रतापी, जाके हाथ परच दुइ फाकी। चोर के नाम पर सट जाय। साहु के नाम पर दूर हो जाय। दोहाई राजा अर्जुन की। दोहाई पाँचों पाण्डव की।

विधि : 'रविवार' या 'मङ्गलवार' को प्रातः बाँस की कइन बीच से फाड़कर दो आदमी को पकड़ा दे। इसके बाद मन्त्र-ज्ञाता

हाथ में पीली सरसों एवं मूषक के बिल की माटी लेकर उस पर फेंके, तो कुछ देर बाद कइन चोर के नाम पर सट जाएगी एवं साहु के नाम पर छूट जाएगी।

(७) चोर के नाम पर पनही चलाने का मन्त्र—रावण चले, महिरावण चले। चोर के नाम पर पनही चले। दोहाई ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती के। दोहाई नोना चमाइन के।

विधि : जिन पर चोरी करने की शङ्का हो, उनके नाम अलग-अलग कागज के टुकड़ों पर लिखकर पास में रखे। इसके बाद चमड़े का जूता, जो बिल्कुल चमड़े का बना हो, उसे एक आदमी लोहे के तकुवे पर उलट कर रखे तथा उसके ऊपर कागज की चिट को रखे। मन्त्र पढ़कर उस पर धूल फेंके, तो जूता चोर के नाम पर चलने लगेगा।

(८) चोर बाँधने का मन्त्र—उचकल पुचकल तेल क घरिया, चोरवा क बान्हो। पीपर क उढ़िया, चोर क कमाई जोहे बाट। एही ठहर से चोर निर फल जाय। दोहाई ईश्वर महादेव के, दोहाई नैना योगिन क ॥

विधि : रात्रि में उक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ घर के चारों ओर मिट्टी छिड़के। इससे चोर का भय नहीं रहेगा।

(९) सर्प चलाने का मन्त्र—(१) जा रे जा रे काली नागिनी, कपूत तोके खेदे। गरुड जा फलाने के पास, काट-काट विष चितो का। दोहाई भट्टा अनन्त देवता क ॥

विधि : उक्त मन्त्र को 'ग्रहण', 'दीपावली', 'होली' या 'विजयादशमी' की रात्रि में एकासन से धूप देता हुआ १५००० जप करे, तो सिद्धि होगी। इसके बाद मन्त्र के सर्प को जिसके पास भेजना हो, उसका नाम एवं पिता का नाम 'फलाने' के स्थान पर ले।

(२) भागु-भागु रे नाग, पतिनी आवत है। गरुड जागु-जागु, जा फलाने के पास। डसु-डसु भक्षु-भक्षु तोके, दोहाई ईश्वर महादेव क ॥

विधि : उक्त मन्त्र का ५६००० बार जप करे। दशांश हवन करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। प्राचीन प्रतियों में १४०० जप लिखा है, किन्तु मेरे विचार से चौगुना जप ५६०० करना आवश्यक है।

(१०) **बार से साँप बनाने का मन्त्र**—बार - बार महा-बार, एक बार शिव क जटा। दूजे बार जती-सती। तीजे बार नाग बार। जागु - जागु बार, साँप होय। 'फलाने' के पास जाय, तोके दोहाई ॥

विधि : रविवार को रात्रि में सेमल के वृक्ष के नीचे बैठ-कर उक्त मन्त्र का १५०० जप करे। दशांश हवन करे, इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। फिर अपनी शिखा में से तीन बार (केश) उखाड़ कर उस पर उक्त मन्त्र का १००१ जप करे। 'फलाने' की जगह पर जिसके यहाँ सर्प भेजना हो, उसका नाम पढ़े। इससे वह बार 'सर्प' होकर उस व्यक्ति के यहाँ भय हेतु पहुँच जाता है।

विशेष—उक्त तीनों मन्त्र प्राचीन प्रतियों से उद्धृत हैं। इनका प्रयोग लोकोपकार की भावना से आततायियों के भय हेतु करे।

(११) **प्रेत-नाश-विधि**—वीरी अ मसान-योगिनी खप्पड सिंह-वाहिनी, या दो मन्त्र चलें। जहाँ 'क' हो, तहाँ जाइ। दोहाई नृसिंह के, दोहाई अम्बिका देवि के। भूत-प्रेत, शिव की झोरी ॥

विधि : १ सुकर नख, २ गोरैया पक्षी का पङ्ख, ३ मुर्गी का पङ्ख—इन तीनों के ऊपर उक्त मन्त्र पढ़कर १००० बार रेड़ी के तेल से होम करे, तो प्रेत-नाश होता है।

(१२) **टोना झारने का मन्त्र**—लोहे का खम्भा, बजर केवाड़। दीठ-मूठ मर-मसान, भूत-प्रेत बाँधो दश वार। तप ते ब्राह्मण सेंज पार झार खण्ड कहाँ गइल ? कोइला काटे। कोइला काट का करे ? टोना काटे, टोन मत काटे, काट-पीट हनिवन्त का हवाला करे। दोहाई ईश्वर महादेव, दोहाई गउरा पार्वती क दोहाई ॥

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए कुशा या लोहे से २१ बार झारे, तो टोना आदि दूर होता है।

(१३) **प्रश्न का उत्तर पाने का मन्त्र**—ॐ बं काली, दूनो हाथ बजावे ताली, वचन न मेरा जावे खाली। ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की साली। जहाँ का हाल चाहो, वहाँ का हाल बताउ-बताउ-बताउ ॥

विधि : (१) ११ शनिवार को १ मिट्टी के बर्तन में दूध और जल डालकर रखे तथा ११ माला जप करे।

(२) त्रिकोण-आसन बनाकर २१ दिन तक प्रति - दिन २१ माला जप करे। इसके बाद व्यक्ति जो प्रश्न करे, उसका उत्तर मिलेगा।

(१४) अघोर काली मन्त्र——ॐ गाँव के पच्छिम पीपर के गाछ, ताहि चढ़ि काली करे हाँक। नगन में पूजै चक्र, महा-मांस भखै। आपन जियावे, पराया खाय। एनैकर दीठ, ओने कर पीठ। बाँएँ चारों काली। सत्य छोड़ असत्य भाखै, असिया कोट नरक में परइ। सत्य प्रत्यक्ष ॥

विधि : चार मुख का दीपक, गेहूँ के पिसान (आटे) की रोटी, सिन्दूर, काजल, चोटी, टिकुली, डिबिया, ११ लाल चूड़ी, मांस, मद्य, मछली, कङ्घी - ऐना, पञ्चमेवा, बरा - दही, पूरी-गुड़, गुलगुला, लाल फूल की माला, लाल घुघुची, गुग्गुल, कपूर, धूप - बत्ती, गोल चौका, अबीर – यह सभी सामान सामने रखकर २१ दिन रात्रि में उक्त मन्त्र का जप करे। एक बार हविष्यान्न भोजन करे। मङ्गलवार अमावास्या की रात्रि से जप का प्रारम्भ करे, तो २१ वें दिन आकाश-वाणी के द्वारा कार्य-सिद्धि की सूचना मिलेगी। जप रात्रि में ८ बजे से प्रातः ४ बजे तक करे।

(१५) औघड़-सिद्धि का मन्त्र——आडू देश से चला अघोरी, हाथ लिए मुरदे की झोली। खड़ा होय बुलाय लाव, सोता होय जगाय लाव। तुझे गुरु अपने की दोहाई, बाबा मनसाराम की ॥

विधि : अर्द्ध-रात्रि में ४० दिनों तक प्रति-दिन १२१ बार उक्त मन्त्र का जप एकान्त में करे। पास में सामने गाँजा, मद्य, सफेद फूल की माला, इत्र का फाहा, दही-बड़ा, सादा बड़ा, दालमोट, सेवड़ा नमकीन एवं पाँच प्रकार की मिठाई रखे। लोहबान की धूनी दे। अघोरी स्वयं आएगा और साधक जो कहेगा, उसे करेगा। अथवा साधक उससे वचन ले ले कि मैं जब आपको बुलाऊँगा, आप आइएगा। अघोरी से काम लेने से पूर्व उसे एक मिट्टी के पुरवे में मद्य चढ़ाए।

(१६) पीलिया झारने का मन्त्र——मेरे आँगन कवल का बिरवा, मृगा चरि-चरि जाय। तेल पानी कवल क, सासुर झारा करै दूर। दोहाई ईश्वर महादेव की, दोहाई गौरा पार्वती की ॥

विधि : पहले मन्त्र को 'ग्रहण' आदि में जप कर सिद्ध करे। फिर रविवार या शनिवार को प्रातः-काल काँसे की थाली में तेल, दूब, पानी—इन सबको रोगी के सिर पर धर के घोटे। इससे पीलिया दूर होगी और थाली के तेल में थक्का हो जाएगा।

(१७) भूत-पिशाच-शैतान की साबर-मन्त्र-विद्या––

पाँचो नाथ, पाँचो नाथ अघोरनी के पूत ! एक हाथ काती, एक हाथ सूत। मारो काती, पिएले धूर। फूल - फूल अढ़हुल के फूल, ले फूल, पकड़ भूत। भूत छिपो पकड़ में, आ देवता छिपो पर बोध ले। भूत-बैताल छीपो, तो भुसुक बान दे के धाव मेरे मूठ। दोहाय बाबा पाँचों नाथ के ॥

विधि : फूल पर उक्त मन्त्र से ५ बार पढ़कर झारे।

(१८) अघोरी-मन्त्र––ॐ ह्रीं क्रीं फट् स्वाहा। अल बाँधो, थल बाँधो, बाँधो राई-छाई। गुनिया क गुन बाँधो, ओझा क ओझाई। कागज के धार चल, नयना के साथ चल। माँ के आँचल परी के साथ चल, रक्त रक्त के धार चल। उमा के हाथ चल, माँ कमैच्छा के धार चल। बात बान चल, रथ के साथ चल। जै रे माँ तारा, ॐ परी के हाथ चल ! नैना योगिनी की विद्या, माँ कमैच्छा की दुहाई। गुरु उस्ताद का वचन, खाली न जाय। कीनोर जहन्नुम रेखालेउद्दीन आली मुरतजा जीव मतवाला झगड पाद पजे मतवाला ॥

विधि : हमारे पास प्राप्य हस्त-लिपि में २१ बार १ सप्ताह मन्त्र-जप हेतु लिखा है।

भूल-सुधार

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री जयपाल सिंह, पुत्र श्री रामसरन

रेलवे क्रॉसिङ्ग सं. १४ के निकट, कचहरी-चाँदपुर मार्ग,
बुलन्दशहर (उ. प्र.)-२०३००१

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १० के पृष्ठ ३८ पर मेरे द्वारा प्रस्तुत 'अनुभूत मन्त्र-प्रयोग' प्रकाशित हुए हैं। इनमें कुछ अशुद्धियाँ हैं, जिन्हें निम्न प्रकार संशोधित कर लेना चाहिए। यथा—

(२) वशीकरण प्रयोग (१)—धोती बांधने की जो विधि बताई है, उसे 'अहरान बाँधना' कहते हैं। इसे किसी हाजी से या किसी सुलझे हुए हाफिज से अधिक विस्तार से जान लेना चाहिए।

वशीकरण प्रयोग (२)—छठी पंक्ति में दाहिने हाथ में आम की लकड़ी का कोयला छपा है, जो अशुद्ध है। दाहिने हाथ में 'माला' रहेगी।

(३) रक्षा-प्रयोग—चौथी पंक्ति में, '**धर्म पास**' लिखा है, जो अशुद्ध है। सही शब्द 'धर्मदास' है।

(५) सर्व-कार्य-सिद्धि जञ्जीरा-मन्त्र—पाँचवीं पंक्ति में, छठे शब्द 'दिन' की जगह देव, छठी पंक्ति में दूसरे शब्द 'त्रिरोम' की जगह त्रिशेम, सातवीं पंक्ति में 'चाक' की जगह धाक करें।

(६) हनुमान जी के वीर की साधना—इस साधना में कुछ बातें विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं। यथा—जब हनुमान जी का दर्शन हो तथा वे गोला (नारियल) माँगें, तो उनसे यह शर्त मनवा लेनी चाहिए कि आज तो यह नारियल दे रहा हूँ, भविष्य में जब कोई कार्य करवाऊँगा, तो चने दूँगा। साथ ही सदा मेरे साथ रहना होगा और जो कार्य मैं बताऊँगा, उसे करना होगा। जब वे 'हाँ' कहें, तो आधा नारियल उन्हें दे दे। चने की बात कहते समय चने की मात्रा भी निश्चित कर देनी चाहिए। यथा—एक मुट्ठी, दो मुट्ठी या आधा

मुट्ठी। चने की मात्रा निश्चित करना आवश्यक है। जब कोई कार्य कराना हो, तो उसके बाद उतनी मात्रा में चना अवश्य देना चाहिए। अतः भुने हुए फीके चने (बिना नमक के) सदा साथ रखे। जब कभी एकान्त का कार्य हो, जैसे पत्नी के साथ एकान्त का कार्य हो, तो अनुमान से कुछ देर के लिए दूर चले जाने के लिए कह दे।

वैसे मेरा निजी परामर्श है कि जब हनुमान जी दर्शन दें, तो शर्त में हर समय साथ रहने की बात नहीं कहनी चाहिए। अपितु यह कहना चाहिए कि जब स्मरण करूँ, तभी आकर मेरा कार्य करते रहिए। याद करने के लिए कोई अति आसान उपाय या नाम पूछ लें, जिससे याद करते ही उपस्थित हो जाया करें।

कुछ स्मरण रखने योग्य अति आवश्यक बातें

बाजार में 'तन्त्र' - सम्बन्धी अनेक पुस्तकें बिक रही हैं। बिना सोचे - समझे कुछ साधक प्रयोग करने लगते हैं। कुछ बातों का वे पालन नहीं करते हैं, जिनके अभाव में साधक के घर में अनेक प्रकार की विपत्ति, बीमारी, उपद्रव आदि प्रवेश कर जाते हैं। अतः निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

(१) यदि किसी प्रयोग में श्मशान की राख, मिट्टी, कङ्कड़ी, हड्डी, खोपड़ी, जली या बिना जली लकड़ी, कोयला या श्मशान की कोई भी वस्तु की आवश्यकता पड़े, तो पहले 'शरीर-रक्षा' का प्रयोग करे। तब श्मशान जाए तथा लौटते समय पीछे मुड़ कर कदापि न देखे। जहाँ पीछे देखने या लौटने का विधान हो, वहीं देखे तथा उपर्युक्त वस्तु लाकर सीधे घर में न रखे। घर से बाहर कहीं एकान्त में सुरक्षित रखे तथा घर से बाहर ही कहीं वस्त्र धोकर स्नान कर पवित्र होकर घर में प्रवेश करे।

घर में कोई वस्तु तभी लाए, जब घर में लाने का विधान हो और किसी प्रकार से अहित होने की सम्भावना न हो।

(२) 'श्मशान' की भाँति मुसलमानों के 'कब्रिस्तान' तथा 'चौराहे' की मिट्टी, कङ्कड़ी आदि भी घर में नहीं लानी चाहिए और उक्त सभी सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए।

(३) मरा हुआ या जीवित उल्लू या उसकी हड्डी, पङ्ख आदि कोई भी अङ्ग घर में नहीं रखना चाहिए। ● ●

बाबा नानकदेव जी का मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री टी० सी० मलतान
चर्च मार्ग, बेतिया (बिहार)–८४५४३८

ॐ इक ओङ्कार, सत नाम करता पुरुष निर्भै निर्वैर। अकाल मूर्ति अजूनि सैभं गुर प्रसादि जप आदि सच, जुगादि सच है भी सच, नानक होसी भी सच—

मन की जै जहाँ लागे अख, तहाँ-तहाँ सत नाम की रख। चिन्तामणि कलपतरु आए कामधेनु को सङ्ग ले आए, आए आप कुबेर भण्डारी साथ लक्ष्मी आज्ञाकारी, बारां ऋद्धां और नौ निधि वरुण देव ले आए। प्रसिद्ध सत-गुरु पूर्ण कियो स्वार्थ, आए बैठे बिच पञ्ज पदार्थ। ढाकन गगन, पृथ्वी का बासन, रहे अडोल न डोले आसन, राखे ब्रह्मा-विष्णु-महेश, काली-भैरों-हनु-गणेश। सूर्य-चन्द्र भए प्रवेश, तेतीस करोड़ देव इन्द्रेश। सिद्ध चौरासी और नौ नाथ, बावन वीर यति छह साथ। राखा हुआ आप निरङ्कार, थुड़ो गई भाग समुन्द्रों पार। अटुट भण्डार, अखुट अपार। खात-खरचत, कछु होत नहीं पार। किसी प्रकार नहीं होवत ऊना। देव दवावत दून चहूना। गुर की झोली, मेरे हाथ। गुरु - बचनी पञ्ज तत, बेअन्त-बेअन्त-बेअन्त भण्डार। जिनको पैज रखी करतार, नानक गुरु पूरे नमस्कार।

अन्नपूर्णा भई दयाल, नानक कुदरत नदर निहाल।

ऐ जप करने पुरुष का सच नानक किया बखान,

जगत उद्धारण कारने धुरों होआ फरमान। अमृत-वेला सच्च नाम जप करिए। कर स्नान जो हित चित कर जप को पढ़े, सो दरगह पावे मान। जन्म-मरण-भौ काटिए, जो प्रभ सङ्ग लावे ध्यान। जो मनसा मन में करे, सो पूरन करे भगवान्। ऐ निश दिन जप जपदा रहे, दास नानक दीजे दान॥

विधि : उक्त मन्त्र मुझे एक सिद्ध सन्त द्वारा प्राप्त हुआ था। जन-कल्याणार्थ मैं इसे यहाँ प्रकाशित कर रहा हूं। इस मन्त्र का जप किसी भी 'साधना' के पहले और अन्त में करने से 'साधना' में सफलता मिलती है।

एक अनुरोध !

प्रिय सम्पादक जी,

ईश्वर-स्मरण !

'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के १० भाग प्रकाशित करने के लिए बधाई और आगामी प्रकाशनों के लिए ईश्वर से प्रार्थना।

सभी अङ्क निःसन्देह बहुत उपयोगी हैं। अब इन सभी अङ्कों में से वे मन्त्र छाँट कर 'शाबर - शब्द - कोष' सहित अलग से प्रकाशित करने चाहिए, जो अनुभूत हैं और जिनको सिद्ध करने एवं प्रयोग करने की पूर्ण विधि दी गई है।

साथ ही साधकों को प्रेरणा भी दी जानी चाहिए कि उन अङ्कों में से अपनी-अपनी रुचि, सुविधा और व्यवस्था के अनुरूप कुछ मन्त्रों का 'प्रयोग' करें और परिणाम 'चण्डी' - कार्यालय को सूचित करें। इससे व्यापक स्तर पर अनुसन्धान-कार्य होगा, इसमें सन्देह नहीं।

मैंने भी कुछ मन्त्रों को चुना है। इन पर मैं कार्य कर रहा हूँ। यथा-समय परिणाम के बारे में सूचित करूँगा।

—स्वामी साधनानन्द, राजनाँदगाँव (म. प्र.)

राशियों के शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' स्वामी साधनानन्द
प्रवास : राजनांदगांव (म. प्र.)

१. मेष : ॐ ऐं क्लीं सौः ।
२. वृषभ : ॐ ऐं क्लीं श्रीं ।
३. मिथुन : ॐ क्लीं ऐं सौः ।
४. कर्क : ॐ ऐं क्लीं श्रीं ।
५. सिंह : ॐ ह्रीं श्रीं सौः ।
६. कन्या : ॐ श्रीं ऐं सौः ।
७. तुला : ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ।
८. वृश्चिक : ॐ ऐं क्लीं सौः :
९. धनु : ॐ ह्रीं क्लीं सौः ।
१०. मकर : ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः ।
११. कुम्भ : ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं ।
१२. मीन : ॐ ह्रीं क्लीं सौः ।

उक्त मन्त्रों में कुछ राशियों के मन्त्र एक ही हैं, जैसे 'मेष' और 'वृश्चिक', 'वृषभ' और 'कर्क', 'धनु' और 'मीन'। ये मन्त्र मुझे कुछ साधकों से मिले थे। एक-एक राशि के लिए अलग-अलग साधकों ने जो मन्त्र दिए थे, उनमें से अधिकतर जो 'समान मन्त्र' मिले, वही यहां दिए गए हैं। फिर भी इन पर 'शोध', 'प्रयोग' की आवश्यकता है। आशा है, साधक-पाठक बन्धु प्रयोग करेंगे।

उपयोग : उक्त मन्त्रों का उपयोग प्रत्येक राशिवाले के अरिष्ट-निवारण के लिए किया जाता है।

विधि : पहले 'शाबर-मन्त्र' सिद्ध करने की किसी भी विधि से अभीष्ट मन्त्र को पीड़ित व्यक्ति सिद्ध करे। फिर उस मन्त्र का १००८ 'जप' प्रति-दिन करे।

सतत अभ्यास से प्राप्त
बहु-जन-हिताय लोक-कल्याण हेतु

सरल शाबर-मन्त्र-संग्रह

[खण्ड (१) से (५)]

संरक्षक-संग्राहक : श्री चन्दूलाल गण्डालाल शाह
एम. ए., बी. एड्. (ऑनर्स)
द्वारा श्री अमीलाल गण्डालाल शाह, ताकफरी, बनियावाड़,
नेमेश्वरदेश स्ट्रीट, जामनगर (गुजरात)–३६१००१

(१)
शान्ति करने के मन्त्र

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १०, पृष्ठ १६०, मन्त्र (२) देखें। इसी प्रकार के कुछ अन्य मन्त्र यहाँ दिए जा रहे हैं।]

१ अरिष्ट-शान्ति अथवा अरिष्ट-नाशक मन्त्र---१ ह्लीं ह्रीं ह्लीं, २ ह्लीं ह्लीं ह्लीं, ३ ॐ ह्लीं फ्रीं ख्रीं, ४ ॐ ह्लीं श्रीं फ्रीं ह्लीं।

विधि : उक्त मन्त्रों में से किसी भी एक मन्त्र को सिद्ध करे। मन्त्र को ५० बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में सङ्कट के समय मन्त्र का जप करने से सभी सङ्कट समाप्त हो जाते हैं।

२ सर्व-शुभ-दायक मन्त्र---ॐ ख्रीं छ्रीं ह्लीं श्रीं फ्रीं ह्लीं।

विधि : उक्त मन्त्र का सदैव स्मरण करने से सभी प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं। अपने हाथ में रक्त पुष्प (कनेर या गुलाब) लेकर

उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर अपनी इष्ट-देवी पर चढ़ाए। अथवा अखण्ड भोज-पत्र पर उक्त मन्त्र को दाड़िम की कलम से चन्दन-केसर से लिखे और शुभ-योग में उसकी पञ्चोपचारों से पूजा करे।

३ अशान्ति-निवारक-मन्त्र---ॐ क्षौं क्षौं।

विधि : उक्त मन्त्र के सतत जप से शान्ति मिलती है। कुटुम्ब का प्रमुख व्यक्ति करे, तो पूरे कुटुम्ब को शान्ति मिलती है।

४ शान्ति, सुख-प्राप्ति-मन्त्र---ॐ ह्रीं सः ह्रीं ठं ठं ठं।

विधि : शुभ योग में उक्त मन्त्र का १२५ माला जप करे अथवा १२,५०० बार जपे। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। बाद में दूध से १०८ आहुतियाँ दे, तो शान्ति, सुख, बल-बुद्धि की प्राप्ति होती है।

५ खेत में उपद्रव - शान्ति करने का मन्त्र---ॐ नमो नगरनाथाय हर हर, शिलि शिलि, सर्वेषां प्राणीनां तुण्डं बन्धन कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र को पहले किसी 'पर्व - काल' में जप कर सिद्ध करे। फिर चन्दन के बुरादे को उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर खेत में डाले। इससे फल - फूल - धान्य की फसल अच्छी होगी। कीड़ों-जन्तुओं से फसल की रक्षा होगी।

६ रोग-शान्ति-मन्त्र---ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्।

विधि : उक्त मन्त्र का ५०० बार जप करने से रोग-निवारण होता है। प्रति - दिन जप करने से सु-स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। कुटुम्ब में रोग की समस्या हो, तो कुटुम्ब का प्रधान व्यक्ति उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को रोगी के रहने के स्थान में छिड़के। इससे रोग की शान्ति होगी। जब तक रोग की शान्ति न हो, तब तक प्रयोग करता रहे।

७ निद्रा-शान्ति का मन्त्र---ॐ शुद्धे शुद्धे महा-योगिनी महा-निन्द्रे स्वाहा।

विधि : महा-निन्द्रा-यक्षिणी के उक्त मन्त्र को ३०० बार जप कर श्मशान की को गो-मूत्र में मिलाकर रोगी के शयन-स्थान में डाले या छिड़के। इससे निद्रा-रोग की शान्ति होती है।

८ सर्व-उपद्रव-शान्ति-मन्त्र---ॐ घण्टा-कारिणी महा-वीरी सर्व-उपद्रव-नाशनं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : पहले इष्ट-देवी को पूर्वाभिमुख होकर धूप-दीप-नैवेद्य अर्पित करे। फिर उक्त मन्त्र का ३५०० बार जप करे। बाद में पश्चिमाभिमुख होकर गुग्गुल से १००० आहुतियाँ दे। ऐसा तीन दिन तक करे। इससे कुटुम्ब में शान्ति होगी।

९ मानव-रचित भय-शान्ति का मन्त्र—(१) ॐ ह्रीं क्षां क्षां क्षां क्षां क्षें क्षौं क्षौं क्षः। (२) ॐ क्रीं क्षीं क्षं क्षं क्षें क्षैं क्षः।

विधि : पवित्र होकर किसी मन्दिर में जाए और सूर्य के सामने होकर उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का १० हजार जप करे। इससे ज्वर-ग्रह की शान्ति भी होती है।

१० ग्रह-बाधा-शान्ति-मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दह दह।

विधि : सोम-प्रदोष से ७ दिन तक, माल-पुआ व कस्तूरी से उक्त मन्त्र से १०८ आहुतियाँ दे। इससे सभी प्रकार की ग्रह-बाधाएँ नष्ट होती हैं।

११ देव-बाधा-शान्ति-मन्त्र—ॐ सर्वेश्वराय हुम्।

विधि : सोमवार से प्रारम्भ कर नौ दिन तक उक्त मन्त्र का ३ माला जप करे। बाद में घृत और काले तिल से 'आहुति' दे। इससे दैवी-बाधाएँ दूर होती हैं और सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

(२)

रक्षा-विधान

१. विविध-रक्षा-कारक-मन्त्र—श्रीरामचन्द्र - दूत हनुमान ! तेरी चोकी—लोह का खोला, भूत का मारूँ पूत। डाकिन का करु दाण्डीया। हम हनुमान साध्या। मुडदां बाँधु। माणस बाँधु। बाँधु नगर की नाई। भूत बाँधु।

पलित बाँधु। उघ मतवा ताव से तप। घाट पन्थ की रक्षा—राजा रामचन्द्र जी करे।

बावन वीर, चोसठ जोगणी बाँधु। हमारा बाँधा पाछा फिरे, तो वीर की आज्ञा फिरे। नूरी चमार की कुण्ड माँ पड़े। तू ही पीछा फिरे, तो माता अञ्जनी का दूध पीया हराम करे। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र का प्रयोग कृष्ण-पक्ष की चतुर्दशी को ही करे। प्रयोग 'हनुमान जी' के मन्दिर में करे। पहले धूप-दीप-अगर-बत्ती-फल-फूल इत्यादि से पूजन करे। सिन्दूर लगाए। फिर गेहूँ के आटे का एक बड़ा रोट बनाए। उसमें गुड़ व घृत मिलाए। साथ ही इलायची-जायफल-बादाम-पिस्ते इत्यादि भी डाले तथा इसका भोग लगाए। 'भोग' लगाने के बाद मन्दिर में ही हनुमान जी के समक्ष बैठकर उक्त मन्त्र का १२५ बार 'जप' करे। 'जप' के अन्त में हनुमान जी के पैर के नीचे जो तेल होता है, उसे साधक अँगुली से लेकर स्वयं अपने मस्तक पर लगाए। इसके बाद फिर किसी दूसरे दिन उसी समय ऊपर की तरह पूजा कर, काले डोरे में २१ मन्त्र और पढ़कर २१ गाँठ लगाए तथा डोरे को गले में धारण करे। मांस-मदिरा का सेवन न करे। इससे सभी प्रकार के वाद-विवाद में जीत होती है। मनोवाञ्छित कार्य पूरे होते हैं तथा शरीर की सुरक्षा होती है।

२. शरीर-रक्षा-मन्त्र—छोटी-मोटी थमन्त बाँधे। वार को वार बाँधे। पार को वार बाँधे। मरघट-मसान बाँधे। जादू-वीर बाँधे। टोना-टम्बर बाँधे। दीठ-मूठ बाँधे। चोरी-छीना बाँधे। भेड़िया-बाघ बाँधे। लखूरी स्यार बाँधे। बिच्छू और साँप बाँधे। लाइल्लाह का कोट, इल्लिल्लाह की खाई, मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी, हजरत अली की दुहाई।

विधि—शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग २, पृष्ठ २२-२३ में जो विधि प्रकाशित है, उसके अनुसार करे। अथवा निम्न विधि से करे—

शुक्रवार को स्नानादि कर स्वच्छ वस्त्र धारण करे। रात्रि में पश्चिम की ओर मुँह कर दिया जलाए और लोबान की धूनी करे। १००८ बार या १०८ बार उक्त मन्त्र जपे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर जब कभी अपरिचित स्थान में रात्रि में रुकना पड़े या सोना पड़े, तब उक्त मन्त्र को ७-७ बार पढ़कर अपने दोनों हाथ घुटने के ऊपर ठोंके। बाद में धरती के ऊपर मन्त्र पढ़ते हुए गोल घेरा बनाए। इसमें रहने या सोने से मन्त्र में वर्णित बातों से रक्षा होती है।

३. स्व-रक्षा और रोग-निवारण मन्त्र

[ऊपर का प्रकाशित प्रयोग भिन्न तरह से भी प्राप्त है। 'शाबर' का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। यह मन्त्र रोग-निवारण इत्यादि में भी उपयोगी है।—लेखक]

छोटी - मोटी थमन्त—वार को वार बाँधे, पार को पार बाँधे। मरघट मसान बाँधे, जादू बार बाँधे। टोना टम्बर बाँधे, दीठ और मूठ बाँधे। चोरी - छार बाँधे, चिडिया और बाघ बाँधे। ला इलाह का कोट, इल्लिल्लाह की खाई। मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी, हजरत अली की दुहाई।

विधि : शुक्र की मध्य-रात्रि (अन्य मत से गुरुवार) में किसी भी पुराने पीर की मजार पर जाए। पश्चिम की ओर मुँह कर धूप व बत्ती लगाए। लोबान की धूनी करे। पीर साहब को मिठाई चढ़ाए। १००८ या १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' पूरा हो, तब चढ़ाई हुई मिठाई में से थोड़ी वहीं छोड़ दे और शेष घर ले आए। प्रातः-काल शेष मिठाई को बच्चों में बाँटे। इस तरह करने से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

बाद में भय-निवारण के लिए साधक मन्त्र पढ़कर अपनी हथेली के ऊपर फूंक लेकर अपना हाथ अपने मुँह के ऊपर फिराए। दूसरी

बार मन्त्र पढ़ फूँक लेकर अपने हाथ को हाथ के ऊपर फिराए। तीसरी बार पैर के ऊपर, बाद में क्रमशः छाती, पीठ और पेट के ऊपर और अन्त में ७ वीं बार मन्त्र पढ़ हथेली के ऊपर फूँके। इस प्रकार पैर से मस्तक तक अपना हाथ फिराए। प्रति-दिन इस तरह प्रातः-सायं करने से साधक निर्भय हो जाता है। रोग, शत्रु, विषैले जीव-जन्तु, जङ्गली पशु उसका कुछ नहीं कर सकते। उसकी सुरक्षा सदैव बनी रहती है और रोगों से भी छुटकारा मिलता है।

रोगी, बाधा-ग्रस्त, भय या कल्पना से पीड़ित व्यक्ति को स्वच्छ जल के ऊपर ११ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूँके तथा जल पिलाए, तो सभी प्रकार के कष्ट से उसकी मुक्ति होगी और सुरक्षा होगी।

४. स्थान-रक्षा मन्त्र (हिसार)—परी जबर फुफ्कार, एक खाई दूसरी अगिन पसार, गिर्द-बगिर्द भला यक असवार। दायाँ दस्त रखे जिब्राइल, बाँयाँ दस्त रखे मिकाइल। पीठ रखे इसराभील, पेट रखे इजराईल। दस्त चय हसन वस्तरास्त हुसेन। पेशवा मुहम्मद इर्द व गिर्द—अली लाइल्लाह का कोटि इल्लिलाह की खाई। हजरत अली की चौकी बैठ, मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

विधि : 'ग्रहण' के समय उक्त मन्त्र का १ से २० माला 'जप' करे। बाद में पश्चिमाभिमुख बैठकर उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर अपने चारों ओर हाथ घुमाए और हवा में घेरा-जैसा कल्पित वृत्त बनाए एवं चुटकी बजाए। अथवा बैठने के स्थान में या स्थान के चारों ओर जल छिड़के। इससे सभी प्रकार के उपद्रव, विघ्न या बाधाएँ समाप्त होती हैं। स्थान व शरीर की सुरक्षा होती है। 'साधना' न भी करे, केवल मन्त्र-स्मरण से 'सुरक्षा' का अनुभव होता है और शान्ति मिलती है।

विशेष—उक्त मन्त्र में किन्हीं बन्धु को कोई अशुद्धि दिखाई दे, तो 'भूल-सुधार' लिख कर भेजने की कृपा करेंगे।

५. अभिचार-नाशक-मन्त्र—ॐ आहूता मन्दरश्स् यजा ज्वल्यं जम जम जम ॐ गाहि गाहि गाहि।

विधि : रविवार या मङ्गलवार को उक्त 'प्रयोग' प्रारम्भ करे। पहले १०८ बार मन्त्र का 'जप' करे और 'जप' के साथ - साथ १०८ मन्त्र - सहित लोबान की आहुतियाँ दे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में अभिचार-निवारण के लिए धतूरे के बीजों को उक्त मन्त्र पढ़ता हुआ अग्नि में डाले। ७ बार मन्त्र पढ़कर ७ आहुतियाँ इस प्रकार डाले कि अभिचार-ग्रस्त को धुआँ लगे। इससे अभिचार का कुप्रभाव दूर हो जाएगा। जब सब प्रकार के उपद्रव शान्त हो जाएँ, तब यथा-शक्ति परमार्थ करे।

६. विघ्न-बाधा-नाशक मन्त्र—ॐ सत नाम आदेश गुरु का। आदेश पावन पानी का। नाद अनाहद दुन्दुभी बाजे, जहाँ बैठी जोगमाया साजे। चोसठ योगिनी बावन वीर, बालक की हरे सब पीर। आगे जात शीतला जानिए, बँध बँध बारे जाय मसान। भूत बँध, प्रेत बँध। छल बँध, छिद्र बँध। सबको मार कर भस्मन्त। सत-नाम, आदेश गुरु को।

विधि : पहले 'ग्रहण' के समय जितना हो सके, 'जप' करे। बाद में १०८ बार और मन्त्र जपकर २७ आहुतियाँ लोबान की दे। इस तरह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में रोगी या कष्ट-ग्रस्त व्यक्ति को लोबान की धूनी देकर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए ७ बार झाड़े। इससे वह सभी बाधाओं से मुक्त होगा।

७. किए-कराए को दूर करने का मन्त्र—ॐ वज्र में कुआँ, वज्र में ताला। वज्र में बँध्या दश द्वारा, तहाँ वज्र का लग्या किवाडा। वज्र में चौखट, वज्र में कील। जहाँ से आया, तहाँ ही जाए। जा ने भेजा—जा कूँ खाए, हम कूँ फिर न सूरत दिखाए। हाथ कूँ-नाक कूँ-कान कूँ-सिर कूँ-पीठ कूँ-कमर कूँ-छाती कूँ जो जोखो पहुँचाए, तो गुरु गोरखनाथ की आज्ञा फुरे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र को 'ग्रहण' के समय में सिद्ध करे। आवश्यकता पड़ने पर ७ कुओं का जल लाए। यदि कुआँ न हो, तो ७ वाटर-पम्प का जल लाए। जल को एक बर्तन में एकत्र कर १०८ बार उक्त मन्त्र 'जप' कर 'जल' को अभिमन्त्रित करे। फिर बाधा-ग्रस्त को एकान्त स्थान में निर्वस्त्र करवा कर अभिमन्त्रित जल से स्नान कराए। इससे सभी प्रकार का किया-कराया वापस चला जाता है। १ से ३ बार तक ऐसा किया जाए, तो ठीक लाभ मिलता है।

(३)

आयु-वृद्धि, रोग-निवारक मन्त्र

१ आयु-वृद्धिकर अथवा रोगादि-निवारक मन्त्र (कालाग्नि-रुद्र का मन्त्र—ॐ श्रीं ह्लीं ऐं क्लीं ह्यौं सौं क्रौं क्रौं क्रौं क्लीं क्रों क्रौं क्रौं क्रौं ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीकालाग्नि-रुद्राय नमः।

विधि : प्रातः-काल नित्य-कर्म से निवृत्त हो, स्नानादि कर मन्त्र का १०८ बार जप करे। 'नित्य जप' करने से भगवान् रुद्र शत्रुओं पर विजय देते हैं तथा 'जप'-कर्त्ता की रक्षा करते हैं। 'जप'-कर्त्ता के आयुष्य की वृद्धि भी होती है।

विशेष—उक्त मन्त्र बड़ा है। यदि याद न हो सके, तो एक अच्छे कागज पर लिखकर शीशे में मढ़वाकर रखे तथा उसे देखते हुए १०८ बार नित्य जपे। 'जप' - कर्त्ता की रक्षा, शत्रु के ऊपर विजय-प्राप्ति और आयुष्य की वृद्धि हेतु इस मन्त्र को सर्वोत्तम माना गया है। समय का अभाव न हो, तो मन्त्र का 'जप' सदैव करे।

२ प्रत्येक रोग से बचानेवाला मन्त्र—या हफीजन या हफीजन या हफीज।

विधि : उक्त मन्त्र को सादे कागज के ऊपर २५०० बार लिख कर जल में बहाए। कथित संख्या से कुछ ज्यादा ही लिखे, कम न लिखे। कुछ व्यक्तियों का भाग्य ऐसा होता है कि एक रोग ठीक होता

है, तो दूसरा रोग घेर लेता । ऐसे रोगी के लिए मन्त्र उपयोगी होता है। यदि रोगी स्वयं अनपढ़ हो, तो सूझ-बूझ से करे। उदाहरणार्थ दूसरों से लिखवा कर मन्त्र का स्मरण करते हुए कागज को जल में बहाए। एक बार में लाभ न हो, तो दुबारा या तिबारा करे। यदि फिर भी लाभ न हो, तो यह प्रयोग छोड़ दे और अन्य उपाय करे।

३ रोग - मुक्ति अथवा आरोग्य - प्राप्ति का मन्त्र—मां भयात् सर्वतो रक्ष, श्रियं वर्धय सर्वदा। शरीरारोग्यं मे देहि, देव-देव ! नमोऽस्तु ते ॥

विधि : 'दीपावली' की रात्रि या 'ग्रहण' के समय उक्त मन्त्र का जितना हो सके, उतना जप करे। कम-से-कम १० माला जप करे। बाद में एक बरतन में स्वच्छ जल भरे। जल के ऊपर हाथ रखकर उक्त मन्त्र का ७ या २७ बार जप करे। फिर जप से अभिमन्त्रित जल को रोगी को पिलाए। इस तरह प्रति-दिन करने से रोगी रोग से मुक्त हो जाता है। जप विश्वास और शुभ सङ्कल्प-बद्ध होकर करे।

४ असाध्य रोग - निवारक मन्त्र—ॐ ह्लीं ह्लीं क्लीं क्लीं काली कङ्काली महा-काली-खपरवाली अमुकस्य अमुकं व्याधि नाशय-नाशय शमनय स्वाहा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र का १२,५०० जप कर मन्त्र को सिद्ध करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग करे। उदाहरणार्थ कभी ऐसा प्रतीत हो कि रोगी मरणोन्मुख है और औषधियाँ काम नहीं दे रही हैं तथा बचने का कोई उपाय नहीं है, तब इस मन्त्र का प्रयोग करे। रोगी को तीन दिन तक १०८ मन्त्र-जप से अभिमन्त्रित जल से झाड़े। इससे असाध्य-से-असाध्य रोग में भी शान्ति प्राप्ति होती है। 'अमुकस्य' के स्थान में रोगी का नाम और 'अमुकं' के स्थान पर 'रोग' या 'व्याधि' का नाम लेकर जल को अभिमन्त्रित करना चाहिए।

५ बच्चों के रोगों का मन्त्र

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ २३ पर गण्डा देने का मन्त्र है। यह मन्त्र यहाँ भिन्न शीर्षक से सामान्य पाठ - भेद व विधि - भेद-सहित प्रस्तुत है। विधि - भेद को विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए। इसी प्रकार अन्य मन्त्रों का प्रयोग लोक-कल्याण की दृष्टि से किया जा सकता है।—लेखक]

बन्ध तो बन्ध, मौला मुर्तुजा अली का बन्ध, कीड़े और मकोड़े का बन्ध, ताप और तिजारी का बन्ध, जुड़ी और बुखार का बन्ध, नजर और गुजर का बन्ध, दीठ और मूठ का बन्ध, किए और कराए का बन्ध, भेजे और भिजवाए का बन्ध, नौबत पर तान का बन्ध, बन्ध तो बन्ध—मौला मुर्तुजा अली का बन्ध, राह और बाट का बन्ध, जमीन और आसमान का बन्ध, घर और बाहर का बन्ध, पवन और पानी का बन्ध, कुँआँ और पनघट का बन्ध, लोहे और कलम का बन्ध, बन्ध तो बन्ध---मौला मुर्तुजा अली का बन्ध।

विधि : उक्त मन्त्र की सिद्धि अपने घर, चौराहे, पीर की दरगाह या सन्त की समाधि के पास बैठकर करनी चाहिए। जहाँ बैठना हो, वहाँ भूमि को शुद्ध कर बैठना चाहिए। बैठनेवाले स्थान को सुगन्ध-मय रखना चाहिए। पश्चिम की ओर मुख रखना चाहिए। यदि हो सके, तो 'लोबान' की धूनी करनी चाहिए। 'पर्व' या 'ग्रहण-काल' में उक्त मन्त्र का १००८ जप करना चाहिए तथा नित्य मन्त्र-सिद्धि हेतु पवित्र किए हुए स्थान पर १० माला जप करना चाहिए। इस तरह जप करने से मन्त्र की सिद्धि होती है। फिर रोग से पीड़ित, बाधा - ग्रस्त, निर्बल बालक को लेकर जब उसके माता-पिता आएं, तब उनको गण्डा बनाकर दे। गण्डा कैसे बनाए, इसकी विधि इस प्रकार है—

पहले मौली या पञ्च - वर्णी डोरे को बटकर एक पक्का लम्बा डोरा बनाए। फिर बालक के सिर से पैर के अंगुष्ठ तक की नाप का डोरा ले। इस डोरे को बटकर इस प्रकार बनाए कि यह बालक के गले में पहनने योग्य रहे। फिर ७ बार मन्त्र पढ़कर डोरे में एक गाँठ बीचो-बीच दे। पुनः उसके आस-पास तीन - तीन गाँठ एक - एक बार मन्त्र पढ़कर दे। कुल ७ गाँठें होंगी और मन्त्र-संख्या १३ होगी। बाद में ७ बार और मन्त्र पढ़कर, लोबान की धूनी देकर डोरे को बच्चे के गले में पहनाए। बच्चे के माता-पिता द्वारा बच्चों को मिठाई बँटवाए।

विशेष—बच्चा यदि खतरनाक रोग से पीड़ित हो, तो दवा के साथ-साथ प्रयोग करे। लाभ होगा।

६ उदर-पीड़ा-निवारक मन्त्र

[उदर-पीड़ा-निवारक मन्त्र 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ३, पृष्ठ ६३, मन्त्र ७। भाग ६, पृष्ठ ५०, मन्त्र ६। भाग ८, पृष्ठ ५१, मन्त्र ८ और पृष्ठ ५६, मन्त्र १३ प्रकाशित हो चुके हैं। यहाँ कुछ अन्य मन्त्र दिए जा रहे हैं।—लेखक]

(१) ॐ नमो इट्ठो मिट्ठो भस्मं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : पहले १२,५०० 'जप' कर मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में स्वच्छ जल को २१ या २७ बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित कर पिलाए, तो पेट का दर्द दूर होता है। ऐसा कम-से-कम ७ दिनों तक करे।

(२) ॐ यो यो हनुमन्त फल-फलित धग-धगित आयु-राषः वरुडाह ॥

विधि : उक्त मन्त्र को प्रति-दिन ११ बार पढ़ने से उदर - रोग की शान्ति होती है।

(३) ॐ नूब तूं सिन्धू नून सिन्धुवाया, नून मन्त्र महा-देव रचाया। महेश के आदेश, गुरु मोहि सिखाया। गुरु ज्ञान से हम देउँ पीर न गाया। आदेश देवी कामरूँ

कामाक्षा माई। आदेश हानी (हाँडी) रानी चण्डी की दोहाई।

विधि : दाहिने हाथ से एक चुटकी भर सेंधा नमक उठाए। इस सेंधा नमक को ३ बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे। अथवा ३ बार मन्त्र पढ़कर सेंधा नमक पर फूके। फिर इस नमक को रोगी को खिलाए। उदर-पीड़ा शान्त होगी। कुछ लोग 'नभक' को शुद्ध घृत में मिलाकर खिलाते हैं।

विशेष—जिन रोगियों को 'नमक' खाना मना हो, उन्हें 'नमक' नहीं खिलाना चाहिए। अतः इस सम्बन्ध में पूछ - ताछ कर प्रयोग करना चाहिए।

७ पेट-पीड़ा-नाशक मन्त्र—पेट-व्यथा, पेट-व्यथा ! तुम हो बल-वीर। तेरे दर्द से पशु व मनुष्य नहीं स्थिर। पेट पीर लेवो पल में निकार, दो फेंक सात समुद्र के पार। आज्ञा कामरूँ कामाक्षा होई, आज्ञा हाडी दासी की। चण्डी की दोहाई।

विधि : रोगी को चारपाई या धरती पर लिटाए। फिर उसके दर्दवाले स्थान को बाँएँ हाथ की चुटकी से पकड़ कर उक्त मन्त्र पढ़े। मन्त्र पूरा पढ़ने पर चुटकी छोड़ दे और पेट के ऊपर हाथ फिराए। इस प्रकार कुल ७ बार झाड़े और ३ या ७ दिन तक प्रयोग करे।

८ अजीर्ण-निवारक मन्त्र—अगस्त्यं कुम्भकर्णं च, शनिं च बडवानलम्। भोजनं पाचनार्थाय, स्मरेत् भीमं च पञ्चकम्॥

विधि : भोजन के बाद अपना बाँयाँ हाथ अपने पेट पर फिराते हुए उक्त मन्त्र को ३ बार पढ़े। ३ बार से अधिक बार पढ़ें, तो भी कोई हानि नहीं। पाचन-शक्ति सुधर जाती है।

९ अतिसार - निवारक मन्त्र—ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी, तहाँ क्षीर-सागर के बीच उपजा पानी। अरे रक्त - पेचिश, तोर कौन ठिकाना! 'अमुक' के उदर

खोंचा जो रहा चलाय। नरसिंह बरसे क्षण में चला जाय, 'अमुक' के अङ्ग में नहीं रोग—नहीं पीर। गुरु ने बाँध दिया जञ्जीर। आज्ञा हाडी दासी की, दोहाई चण्डी की। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

विधि : जब भी रोगी आए, तब साधक पीपल के वृक्ष के पास जाय और मन्त्र का स्मरण करते हुए तीन बड़े पत्ते तोड़े। पत्तों को घर लाकर, रोगी के सामने रखे। पत्ते को दोना जैसा बनाए और उसमें स्वच्छ जल लेकर उक्त मन्त्र तीन बार पढ़कर फूंके। फिर जल को रोगी को पिलाए। इसी प्रकार शेष दो पत्तों में जल लेकर पिलाए। यह क्रिया ३ या ७ दिन तक करे। इससे अतिसार, पेचिश, आँव या संग्रहणी जैसे रोगों में लाभ होता है। 'अमुक' के स्थान में रोगी का नाम लेना चाहिए। रोग की तीव्रता के अनुसार प्रयोग के साथ-साथ आवश्यक परहेज, दवा भी करना चाहिए।

१० वायु - रोग दूर करने का मन्त्र—ॐ नमो अजब कङ्कोल। गठीया वाय किरङ्ग, रगत वाय चेपियो वाय। अनन्त सर्व वाय—नाशय-नाशय। दह-दह पच-पच भख-भख हन-हन, ॐ फट् स्वाहा।

विधि : पहले पर्व-काल में उक्त मन्त्र का १२,५०० जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में पञ्च-वर्णी धागे को उक्त मन्त्र से १०८ बार जप कर एक गाँठ लगाए। फिर उसे रोगी के गले में बाँधे या पहनाए।

११ वायु-गोला-नाशक मन्त्र—ॐ नमो काली कङ्का-लिनी, नदी पार बसे इस्माइल जोगी। लोहे का कसौटा काटि-काटि, लोहे का गोला काटी काटी। हो शब्द साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : मङ्गलवार के दिन रोगी को सामने बिठाए। फिर उक्त मन्त्र पढ़कर चाकू से रोगी के पेट का स्पर्श करे, धरती पर एक

रेखा खींचे। इस प्रकार २१ बार मन्त्र पढ़कर भूमि पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ एक दूसरे को काटती हुई खींचे। ऐसा ७ दिनों तक करे।

१२ वायु-विकार-निवारक मन्त्र---ॐ वं बज्र-हस्ताभ्यां नमः।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को 'सूर्य - ग्रहण' में जप कर सिद्ध करे। बाद में प्रयोग करे। 'प्रयोग' हेतु जल या चीनी के ऊपर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर अभिमन्त्रित करे। अभिमन्त्रित जल या चीनी को रोगी को पीने या खाने को दे। शीघ्र लाभ होगा।

१३ शरीर-पीड़ा-निवारक मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग २, पृष्ठ ३८; भाग ६, पृष्ठ ३४; भाग ८ पृष्ठ ५०, ५७; भाग ६, पृष्ठ ८६, ६३, ६७ पर शरीर-पीड़ा-निवारक मन्त्र प्रकाशित हैं। यहाँ एक दूसरा मन्त्र कुछ पाठ-भेद के साथ प्रस्तुत है।—लेखक]

उस पार से आती बुढिया छुतारी, तिसकै काँधै पै सरके पिटारी। कौन-कौन शर बाण, सु शर कु पौरा शर समान। 'अमुक' के अङ्ग की कथा तन-पीर, लौटि गिरै उसके कलेजे-तीर। आज्ञा पिता ईश्वर महा-देव की दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : बाँएँ हाथ की अँगुली से जितना नमक उठा सके, उतना उठाए। उसके ऊपर उक्त मन्त्र पढ़कर रोगी को खिलाए। 'अमुक' के स्थान में जो पीड़ित व्यक्ति है, उसका नाम ले।

१४ वात-व्याधि दूर करने का मन्त्र—(१) ॐ नमो अजब कङ्कोल, गड़ीयो वाय किरङ्ग वाय, रगत वाय चेपियो वाय, अनन्त सर्वे वाय, नाशय-नाशय, दह-दह, पच-पच, भख-भख, हन्-हन् ॐ फट् स्वाहा।

विधि : पहले १२,५०० जप कर मन्त्र सिद्ध करे। बाद में पाँच रङ्ग के रेशम के धागे को लेकर एक धागा बनाए। उस पर

९-९ बार मन्त्र जपते हुए क्रमशः १२ गाँठ लगाए और रोगी के गले में पहना दे। वायु-रोग, वात-व्याधि शान्त होगी।

(२) समुद्रस्य परे पारे लङ्का नाम्नी महा-पुरी। राजा विभीषणो यत्र, तत्र वा यो प्रगच्छतात्।

विधि : पहले १० हजार जप कर मन्त्र को सिद्ध करे। फिर प्रयोग करे। दर्दी या उसके सहयोग करनेवाले या उसके साथ जाने-वाले लोग जब साधक के घर जायँ, तब 'बड़' (वट - वृक्ष) अथवा 'पीपणा' (पीपला) अथवा 'पीपर' के ७ पत्ते लेकर जाएँ। तीन वृक्षों में से किसी भी एक के ७ पत्ते लेकर मौन होकर जाए।

(१) साधक प्रत्येक पत्ते के ऊपर उक्त मन्त्र को लिखे। 'दर्भ' (कुश) की शलाका (कलम) और 'अष्ट-गन्ध' का उपयोग करे। बाद में प्रत्येक पत्ते को ७-७ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। प्रत्येक पत्ते को गुग्गुल की धूनी दे। बाद में सातों पत्तों को एक साथ बाँधकर दर्दी के हाथ में दे। दर्दी उन पत्तों को चूल्हे के ऊपर लटका दे। दर्दी के घर में चूल्हा न हो, तो उन पत्तों को किसी भी जगह में लटका दे। जैसे-जैसे वे पत्ते सूखेंगे, वैसे-वैसे दर्दी को रोग में आराम होगा। रवि, मङ्गल या गुरु को यह काम करना चाहिए। कुल मिलाकर ३ बार यह क्रम पूरा करने से दर्दी को पूरा आराम हो जायगा।

(२) रवि, मङ्गल, गुरु को दर्दी को बुलाए। साधक रोगी को मन्त्र से ७ बार झारे, तो रोग-शान्ति होगी। अथवा—

(३) ११ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित जल दर्दी को पिलाने से रोग में राहत होगी। अथवा—

(४) २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित गुग्गुल की धूनी देसे से आराम होता जायगा। उक्त चार में से किसी भी एक विधि का उपयोग किया जा सकता है। तीन क्रम या तीन दिन करने से आराम हो जायगा। पीड़ा फिर नहीं होगी।

सन्धि-वात या वात-व्याधि, लकवा, वायु के स्फोटक विकार से होनेवाले फोड़े-फुन्सी, करकिया वात, गैस वायु इत्यादि में यह प्रयोग विशेष रूप से काम करता है।

(३) ॐ रां रीं रूं रः स्वाहा।

विधि : ग्रहण - काल में १० हजार जप करे। बाद में वात-व्याधि - ग्रस्त व्यक्ति को सामने बिठाकर २१ बार मन्त्र जप कर फूंके या व्याधि-स्थान पर हाथ फिराए या झाड़े। ऐसा ७ दिनों तक करने से लाभ होता है।

१५ मोच या चोट का पीड़ा-निवारक मन्त्र—ॐ नमो आदेश श्रीराम को, देऊँ मचक उड़ाई। उसके तन से तुरत पीर (पीड़ा) भागि जाई। ना रही रोग-पीर, फूँक से सब हुई पानी। 'अमुक' की काया छोड़, भाग तू मचकानी। पिता ईश्वर महा-देव की दुहाई। आदेश सिया-राम-लखन गुसाईं।

विधि : एक बरतन में सरसों का थोड़ा तेल लेकर उसे गर्म करे। बाद में उसके ऊपर ३१ बार उक्त मन्त्र पढ़े। प्रत्येक मन्त्र के अन्त में तेल के ऊपर फूंके। इस प्रकार अभिमन्त्रित तेल चोट या मोच के स्थान पर लगाए या मले, तो लाभ होगा। एक दिन में २-३ बार इस तरह से तेल लगाए। 'अमुक' के स्थान में रोगी का नाम ले।

१६ चोट की पीड़ा दूर करने का मन्त्र—ॐ नमो खों खञ्जारन, कहाँ गइले ? नन्दन-वन। चन्दन-वन काटि के किसके सत्ताइस दुअरिया गढ़े। हूक काटो, फोड़ा काटो। फुटकी काटो, काशा काटो। बाँसा काटो, चङ्गा करो काट-कूट के। पिता ईश्वर महा-देव की शक्ति। गुरु की भक्ति से झारों। बलाई जाय, नहीं तो महा-देव की दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : २१ दिन में २१ हजार जप कर मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब किसी को चोट लगे, तब उक्त मन्त्र को पढ़कर फूंके। ३ या ७ दिन तक २१-२१ बार मन्त्र पढ़कर फंके।

१७ घाव मिटाने का मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह' भाग ६, पृष्ठ १२१, क्रम ८६ पर एक मन्त्र प्रकाशित है। यहाँ कुछ पाठ - भेद सहित दूसरा मन्त्र दिया जा रहा है।]

सार-सार विजय-सार, सार बाँधूँ सात बार। फटे अन्न न उपजे घाव। सीर राखे श्री गोरखनाथ। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पर्व-काल में मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मन्त्र को पढ़कर फूंके। इससे घाव शीघ्र भरता है और पीड़ा शान्त होती है। जब तक घाव पूरी तरह सूख न जाए, तब तक प्रयोग करता रहे।

१८ स्तन-पीड़ा-मन्त्र—ॐ वन में जाई बानरी, जिन जाया हनुमन्त। सज्जा खघा ठाकिया, हो गया भस्मी-भूत।

विधि : कण्डे या उपले की राख से मन्त्र पढ़ते हुए स्त्री का दायाँ स्तन दुखे, तो अपना बाँयाँ स्तन और स्त्री का बाँयाँ स्तन दुखे, तो अपना दायाँ स्तन ७ बार झाड़े।

१९ थनैली झारने का मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ६, पृष्ठ १२३, क्रम ९१ में विधि नहीं थी। अब मूल विधि-सहित यह मन्त्र प्राप्त हुआ है, अतः पूरा मन्त्र सविधि देखें।]

कम्प बिलारी, बघ थनैला। पाँच बान, मेहि भरा दैल। कश्च बिलारी, बघ थनेला। डावा पलटी, जाहु घर। अपने राजा मनेरी की दुहाई। जोड़ा पार, गुरु की दुहाई है।

विधि : उक्त मन्त्र से २१ बार झाड़ा देने से थनेली की पीड़ा दूर होती है।

२० डबका मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ६, पृष्ठ ६५-६६ में क्रमाङ्क ५४-५५-५६ के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न शीर्षक से तीन मन्त्र दिए गए हैं। यहाँ एक अन्य मन्त्र भिन्न विधि के साथ प्रस्तुत है।

ॐ नमो खाङ्गरी ! खङ्गारा कहाँ गया ? सवा लाख परवत गया। सवा लाख पर्वत जाय क्या किया ? कोयला कराया। कोयला कराया—क्या किया ? घूरा गढ़ाया। क्या किया ? ठबका हाड-गोड़ काटि, काली कामली में लपेट, खारे समुद्र में बहाया। शब्द साँचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शनिवार की रात्रि में आठ अंगुल का एक तीर का कुडा ले और उससे २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर झाड़े। फिर तीर को रास्ते में खड़ा गाड़ने से 'डबका रोग' दूर होता है।

२१ पसली का दर्द मिटाने का मन्त्र—राम रमेति राम-राम-राम।

विधि : (१) आटे का एक 'दीपक' बनाए। उसमें रुई की बत्ती रखे और घृत भर कर जलाए। 'दीपक' को एक लकड़ी के पट्टे के ऊपर रखे। फिर 'दीपक' के समक्ष उक्त मन्त्र का १०८ 'जप' करे। बाद में 'दीपक' को अपने हाथ से बुझाए। 'दीपक' की बत्ती निकाल ले और छाती में दर्दवाले स्थान पर मन्त्र पढ़ते हुए मले। इस प्रकार कई दिन करे। दर्द में कमी होते-होते मिट जाएगा।

(२) छाती की पसली में कभी-कभी दर्द होता है। बहुत लोग उसे 'शल' या 'शूल' भी कहते हैं। इसके लिए भी यह 'प्रयोग' किया जा सकता है। 'प्रयोग' हेतु आटे का एक 'दीपक' बनाए। 'दीपक' के समक्ष कम-से-कम १०८ बार मन्त्र का जप करे। कुल २ या ५ या १० माला जप करे। जप - काल में 'दीपक' का तेल या घृत समाप्त न होने दे। जप पूरा कर 'दीपक' को हाथ से बुझाए और रुई की बत्ती को निकाल कर उसे दुखती हुई पसली के ऊपर रगड़े। 'दीपक' में

शेष घृत या तेल को भी दर्दवाले भाग के ऊपर रगड़े। मन्त्र का स्मरण करता रहे। इससे 'शूल'--'पसली' के दर्द में लाभ होगा। जब तक पूरा लाभ न हो, तब तक 'प्रयोग' करे।

२२ डब्बा-पसली झाड़ने का मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ६, पृष्ठ ६५-६६, क्रमाङ्क ५४-५५ को देखिए। लगभग एक ही मन्त्र कुछ भिन्नता से प्रकाशित हैं। यहाँ एक दूसरा रूप प्रस्तुत किया जा रहा है। — लेखक]

सत्य नाम आदेश गुरु का। उखङ्कारी कहाँ गया? सवा लाख पर्वतो गया। सवा लाख पर्वतो जाय कहा करेगा? सवा भार कोइला करेगा। सवा भार कोइला कर कहा करेगा? हनुमन्त वीर नव चन्द्र-हास खड्ग गढ़ेगा। नव चन्द्र-हास खड्ग गढ़ कहा करेगा? जानबा डोरु पाँसली बाय काट-कूट खारी समुद्र नाखेगा। जगद्-गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़कर तिल के तेल और सिन्दूर से झाड़े।

२३ नेत्र - पीड़ा - निवारण——(१) ॐ हजार ज्वाला उज्जौहार घः घः।

(२) उत्तर दिशि फूल कामाख्या, सुन योगी की वाचा। इस्माइल योगी की दो बेटी, एक के सिर चूल्हा, दूसरी काटै माड़ी फूला। लोना चमारी दुहराय फूली का छा। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। रवि या मङ्गल को स्वच्छ हो रोगी को सामने बैठाए। पहले से सिद्ध किए उक्त मन्त्र को २७ बार जपे। प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आड़ी-सीधी रेखा एक दूसरे को

काटते हुए खींचे और रोगी की आँख के ऊपर फूंके। ऐसा २१ दिन तक करे, तो रोगी की आँख की फूली या फूला कट जाता है और आँख रोग-मुक्त हो जाती है।

विशेष——दूसरे मन्त्र से 'प्रयोग' करे तो आँखों और सिर दोनों के ऊपर फूंक मारे। साथ ही ज्योति-वृद्धि के लिए 'चक्षुषोपनिषद्' का नित्य ११ बार पाठ करे। पूर्ण फल - प्राप्ति के लिए १० हजार पाठ का विधान है। आँख के रोग से बचने के लिए यदि पहले से ही नित्य पाठ करता रहे, तो आँख के रोग नहीं होते।

(३) संयातिं च सुकन्यां च, यवनं शक्रमश्विनौ।
एतेषां स्मरणान्नृणा, नेत्र-रोगो विशाम्यति॥

विधि : पहले पर्व-काल, ग्रहण-काल अथवा दीपावली में दिन के समय उक्त मन्त्र का १० हजार 'जप' करे। जप के बाद घृत व शर्करा से दशांश 'होम' करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। बाद में जल पर ७ बार मन्त्र पढ़कर रोगी की आँख पर छिड़के। ऐसा ७ दिन तक करे। यदि ७ दिन के पहले ही आँख की पीड़ा शान्त हो जाए, तो भी यह 'प्रयोग' ७ दिन तक करे।

२४ आँख का फोला झाड़ने का मन्त्र——इन्द्र तारा की सात बेटी। सातों कांधे कुदारी। सातों चलीं फोला काटने। फोला काटो, आँखें राखो। दोहाई ईश्वर महादेव, नैना-योगिनी, कामरू-कामाक्ष्या, गौरा-पार्वती की।

विधि : साधक लोहे का चाकू लेकर उक्त मन्त्र पढ़े। चाकू से धरती पर सात लाइनें मन्त्र पढ़ते हुए खींचे। फिर मन्त्र पढ़कर एक-एक लाइन चाकू से काटे और मुख से आँख की ओर फूंक मारे। इस तरह सातों लाइनों को काटे। फिर चाकू को वहीं गाड़ कर उसके ऊपर टोकरा ढँक दे। इस प्रकार २१ दिन झाड़ने से नया फोला-जाला कटता चला जाएगा। २१ वें दिन आँखें बिलकुल ठीक हो जाएँगी।

२५ रतौंधी झारने का मन्त्र——ॐ नमो आदेश गुरु को–सत्य नाम श्रीराम को। काटे रतौंधी, जाय रतौंधी।

ईश्वर महादेव की दुहाई। दुहाई गुरु गोरखनाथ की, दुहाई कालका माई की। रतौंधी जाय, फिर न आय। आन महा-वीर की।

विधि : पहले मन्त्र सिद्ध करे, 'प्रयोग' हेतु रोगी को सामने बैठाकर २१ बार मन्त्र पढ़कर फूंके। इससे रतौंधी नष्ट होती है और आँखों का तेज बढ़ता है।

२६ नाभि-उखड़ने का मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग १, पृष्ठ ६०, क्रमाङ्क ५ देखिए। यह मन्त्र कुछ पाठ-भेद सहित यहाँ प्रस्तुत है।—लेखक]

(१) ॐ नमो नाड़ी-नाड़ी। नौ सौ नाड़ी, बहत्तर सौ कोण। चले अगाडी, डिगे न कोण। चले न नाड़ी, रक्षा करे जति (जती)। हनुमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : एक सूत के डोरे में नौ गाँठें लगाए। सूत को छल्ले की तरह बनाए। फिर उसे नाभि के ऊपर रखकर मन्त्र पढ़े और छल्ले के भीतर फूंक मारे। इससे नाभि थोड़ी ही देर में ठिकाने पर आ जाती है।

(२) ऊँची-नीची धरणी, श्रीमहादेव की सरनी। टलो धरत आनूँ ठौर। सत-सत भाखै श्री गोरख राव।

विधि : पहले मन्त्र सिद्ध करे, फिर 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' हेतु मन्त्र पढ़कर रोगी को झाड़े और उसे सवा तीन माशे की अँगूठी पहनाए। इससे धरन (नाभि) ठिकाने पर आ जाती है।

(३) ॐ चरणी-चरणी, मानस तेरी सरणी। मानस का आसा-पासा छांड रे। धरणी (नी) न छोड़े, तो चतुरङ्ग नाथ जी की आशा फुरै। ठः ठः स्वाहा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र का १२,५०० 'जप' कर सिद्ध करे। 'प्रयोग' हेतु मन्त्र पढ़कर पेट के ऊपर हाथ फिराए।

२७ ज्वर-नाशन-मन्त्र--(१) ॐ शान्ते शान्ते ! सर्वारिष्ट-नाशिनी स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़कर 'जल' को अभिमन्त्रित करे। उस अभिमन्त्रित जल को रोगी को पिलाए। ऐसा ३ दिनों तक नित्य एक बार अवश्य करे। ज्वर उतर जाएगा।

(२) ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्धि - छिन्धि ज्वरं ज्वराय ज्वरोज्वलित कपाल-पाणये हूँ फट् स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र को बरगद के बड़े पत्ते पर कोयले से लिख कर ज्वर-ग्रस्त व्यक्ति को दिखाए। इससे ज्वर उतर जाता है।

(३) ॐ नमो भगवते रुद्राय भूताधिपतये हूँ फट् स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र को 'भोज-पत्र' के ऊपर लिखकर दाएँ हाथ में बाँधे तथा प्रति-दिन १०८ बार जपे। इससे सब प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं। 'भोज-पत्र' पर लिखने के लिए 'अष्ट - गन्ध' या केशर-युक्त चन्दन की स्याही और 'अनार' की कलम का उपयोग करे। 'भोज-पत्र' को तावीज में भर कर रोगी को पहनाए।

(४) समुद्रस्योत्तरे कूले, कुमुदो नाम वानरः ।
तस्य स्मरण-मात्रेण, ज्वरो याति दिशो दशः ॥

विधि : १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर 'कुश' से झाड़े।

(५) समुद्रस्योत्तरे तीरे, कुमुदो नाम वानरः ।
तस्य संस्मरणादेव, ज्वरो याति दिशो दश ॥

विधि : पहले 'पर्व-काल' में या 'ग्रहण' में उक्त मन्त्रं का १० हजार 'जप' करे। बाद में जब फिर से 'ग्रहण' आए, तब काले रेशमी डोरे में मन्त्र पढ़ते हुए ५ गाँठ लगाए। फिर प्रत्येक गाँठ के ऊपर २१-२१ बार मन्त्र जपे। इस प्रकार एक डोरा तैयार हो जाएगा। ऐसे ही कुछ और धागे आवश्यकता के अनुसार तैयार कर 'पूजा-स्थान' में अथवा अन्य पवित्र स्थान में रखे। बाद में जब ज्वर-ग्रस्त रोगी आए, तब उन्हें ११ बार मन्त्र पढ़कर झाड़े और सिद्ध डोरा

पहनाए। आगे दो दिन और झारे। इससे ज्वर उतर जाता है। प्रयोग-कर्त्ता को लालच आदि से दूर रहना चाहिए तथा यथा - शक्ति परमार्थ करना चाहिए।

(६) श्रीकृष्ण बलभद्रश्च, प्रद्युम्न अनिरुद्धकः।
तस्य स्मरण-मात्रेण, ज्वरो याति दशो दिशः॥

विधि : उक्त मन्त्र को ज्वर-ग्रस्त रोगी स्वयं थोड़ी-थोड़ी देर में तीन-तीन बार जपे।

(७) ॐ मुं मुकटेश्वरी श्याम् नमः।

विधि : अति तीव्र ज्वर से ग्रसित व्यक्ति को एक कटोरी में जल रखकर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर पिलाए। इससे ज्वर उतर जाएगा।

(८) ॐ भैरव भूतनाथे, विकराल-काये, अग्निवर्णा-धाये ! सर्व-ज्वर-बन्ध मोचय—त्यम्बकेति हुँ।

विधि—'रविवार' या 'मङ्गलवार' को प्रातः-काल नित्य-कर्म से निवृत्त होकर 'सहदेवी' के पौधे के पास जाए। वहाँ मन्त्र का स्मरण कर उसकी जड़ खोदे और घर लाए। घर पर आकर जड़ को मन्त्र बोलते हुए धोए। फिर तीन बार मन्त्र पढ़कर उस पर फूँक मारे। इस तरह अभिमन्त्रित जड़ को ज्वर-ग्रस्त की दाहिनी भुजा पर मन्त्र पढ़ते हुए बाँधे। जड़ को एक धागे के सहारे बाँधा जा सकता है। इससे लगभग सभी प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।

२८. एकान्तर-ज्वर- निवारक मन्त्र

(१) ॐ वज्र-हस्तो महा-कायो, वज्र-पाणिर्महेश्वरः।
ताडितो वज्र - दण्डेन, भूम्यां गच्छ महा-ज्वरः॥

विधि : पान का एक बीड़ा लगाए। १०८ बार मन्त्र पढ़कर पान के बीड़े को अभिमन्त्रित करे। फिर मन्त्रोच्चारण - सहित वह पान का बीड़ा रोगी को खिलाए। इससे यदि 'एकान्तर ज्वर' आता है, तो वह रुक जाएगा अथवा ज्वर-निवृत्ति होगी।

(२) ॐ गङ्गाया उत्तरे तीरे, अपुत्रस्तापसो मृतः।
तस्मै तिलोदकं दद्यात्, मुञ्चत्वैकाहिको ज्वरः॥

विधि : उक्त मन्त्र का स-स्वर उच्चारण कर हाथ में तिल और पीपल का पत्ता रखकर 'तर्पण' करे। इससे 'एकान्तर ज्वर' रुक जाता है या एकान्तर ज्वर से निवृत्ति होती है।

२९. सीया - ज्वर का मन्त्र----ॐ नमो कामरू देश, कामाक्षी देवी—जहाँ बसे इस्मायल योगी। इस्मायल योगी की तीन पुत्री----एक तोड़े, एक पिछाड़ै, एक ताप तिजारी तोड़ै।

विधि : जिस व्यक्ति को 'सीया का ज्वर' आता हो, उसके ऊपर उक्त मन्त्र को पढ़कर सिर की चोटी से फूंक मारना आरम्भ करे। ज्यों-ज्यों ज्वर नीचे उतरता जाए, त्यों - त्यों अपने हाथ को भी नीचे सरकाता जाए। इस विधि से थोड़ी ही देर में ज्वर बिल्कुल उतर जाएगा।

३०. कँप-कपी बन्द करने का मन्त्र----ॐ ऐं ह्रीं रामदूताय नमः।

विधि : कभी भय से तो कभी शीत - ज्वर से रोगी को 'कँपकँपी' होती है। गर्म कपड़ों से ढांकने के बाद भी राहत नहीं होती। ऐसे समय में उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' कर लौंग को अभिमन्त्रित कर रोगी को खिलाए। इससे 'कँप-कंपी' बन्द हो जाएगी।

३१. तिजारी झारने का मन्त्र----कारी कुकरी सात पिल्ला ब्याई, सातों दूध पिआई। जिआई बाय—थनहलाकांश्चलाए के मन्त्रे तीनों जाई।

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़कर दाएँ हाथ से आँचल को मींजते हुए फूंके, तो रोगी का रोग दूर होता है।

३२. तिल्ली दूर करने का मन्त्र----ॐ नमो हुताश पर्वत, जहाँ सुरह गाय। सुरह गाय के पेट में बच्छा। बच्छा के पेट में तिल्ली। दबा-दबा कर तिल्ली कटे। सरकण्डा बठे, फीहा कटे, हरो-फुरो।

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए पृथ्वी पर पैनी छूरी से लकीर काटता जाए, तो तिल्ली कट जाती है।

३३. फोड़े - फुन्सी का मन्त्र : ॐ महतिल हलमिआ विभूती-प्रद हन ॐ ठः ठः।

विधि : 'मङ्गलवार' को साधक सूर्योदय के पूर्व स्नानादि से निवृत्त होकर चौराहे पर जाए और वहाँ की मिट्टी लेकर घर वापस आ जाए। रोगी को सामने बैठाकर उस मिट्टी (धूल) को मन्त्र से अभिमन्त्रित करते हुए उसके फोड़े-फुन्सी के स्थान पर लगाए। इससे धीरे-धीरे रोगी को लाभ हो जाता है।

विशेष : नीम की पत्तियों को रात्रि भर एक बर्तन में जल में डुबो कर रखे। प्रातः-काल उस जल को पत्तियों सहित गर्म करे और पत्तियों को अलग कर रोगी को उस जल से स्नान कराए, तो रोगी को विशेष लाभ होता है।

३४. अर्श-नाशक-मन्त्र----उटिष्टिङ्ग दुष्टङ्ग दुष्सुरा, सर्व-यक्ष, राक्षस, किन्नरा, पिशाच, गुह्यका चैवं मल-भूग, मनुष्याणां ममोदुषेन दीयते।

विधि : प्रति-दिन सायं - काल उक्त मन्त्र को पढ़कर शौच-क्रिया करे, तो 'बवासीर' दूर होती है।

३५. खूनी बवासीर से मुक्ति पाने का मन्त्र---तस्य तस्य देवाणां, भूत पिशाच पिचास। काम मल-मूत्र मनुष्या-णंभिभां दुष्टे न दीयते॥

विधि : प्रातः-काल शौच से निवृत्त होकर स्वच्छ जल से पुनः गुदा को ७ बार उक्त मन्त्र पढ़ते हुए धोए, तो खूनी बवासीर से मुक्ति मिलती है। यह क्रिया नित्य करे, जिससे रोग की रुकावट होगी।

३६. पागल कुत्ते का विष उतारने का मन्त्र----ॐ कुलकु स्वाहा।

विधि : पहले १० हजार 'जप' करे। बाद में सात सकोरों में जल भर कर १०८ बार मन्त्र पढ़कर जल को अभिमन्त्रित करे तथा कुत्ता काटे हुए व्यक्ति को वह जल पिलाए। इससे कुत्ते का विष उतर जाता है।

(२) ॐ नमो कामरू कामाक्षा देश। जहाँ बसे कमक्षा देवि, तहाँ इस्माइल योगी ने पाली कुत्ती। दश पीली, दश लाली। दश काली, दश काबरी। दश टीका दै भाल, रङ्ग-बिरङ्गी दश खड़ी। रक्षा करें गुरु गोरखनाथ। इनका विष हनुमन्त हरी।

विधि : पहले 'ग्रहण' की रात्रि में उक्त मन्त्र का १ हजार बार 'जप' कर मन्त्र को सिद्ध करे। 'जप' समय आटे का एक 'दीपक' बना कर उसमें सरसों का तेल जलाए। उसके बाद आटे का लड्डू बना कर भोग लगाए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जब कभी किसी को कुत्ता काटे, तो घाव के चारों तरफ 'अरन गोहरे' की राख लेकर ७ बार उक्त मन्त्र पढ़ते हुए लगाए। ऐसा करने से कुत्ते का विष उतर जाता है।

(३) अलकाधिपते यक्षस्तरमेय गणाधिप !
अलर्क जुष्टु मे तन्मे, निर्विषं कुरु माचिरात् ॥

विधि : जिस व्यक्ति को पागल कुत्ते ने काटा हो, उसे चौराहे पर अथवा नदी के तट पर स्नान कराए और स्वयं भी पवित्र होकर उक्त मन्त्र से १०० 'आहुतियाँ' दे। बाद में राख से उस व्यक्ति को झाड़े। इससे विष उतर जाता है। (अलर्क = एक राजा था)।

(४) नारसिंहाय वसिष्ठाय वामदेवाय युधिष्ठिराय कृष्ण-कृष्णाय वासुदेवाय नमः।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को शाबर-विधि से सिद्ध करे। बाद में कुत्ते या शृगाल द्वारा काटे हुए व्यक्ति को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म काटे हुए स्थान पर लगाने के लिए दे या स्वयं लगाए। ७ दिनों तक अभिमन्त्रित भस्म लगाने से कुत्ते या शृगाल का विष उतर जाता है।

विशेष : कुछ लोग लाल मिर्चे को पीसकर कुत्ते के काटे हुए स्थान पर लगाते हैं। इससे भी विष उतर जाता है।

३७. दन्त-रोग-निवारक मन्त्र----(१) ॐ ह्रीं क्लीं दन्त-रोग-निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : दातुन हाथ में लेकर उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़े। बाद में दातुन कर जल के ऊपर ७ बार उक्त मन्त्र पढ़े और उससे कुल्ला करे। इस प्रकार करने से दाँत के रोग दूर होते हैं।

(२) ॐ ह्रीं क्लीं दन्त - रोग - निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। फिर जब दाँतों में दर्द हो रहा हो, तब दाँतों को हाथ से स्पर्श करते हुए उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। ७ बार मंन्त्र पढ़कर कुल्ला करे। इससे दाँतों का रोग दूर होता है। ऐसा ३ से ७ दिन तक करे।

३८. शिर - दर्द - निवारक मन्त्र----हजार घर घाले, एक घर खाय। आगे चले, तो पीछे जाय। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन साँचा।

विधि : 'शनिवार' या 'मङ्गलवार' को साधक स्वयं हनुमान जी के मन्दिर में जाए और हनुमान जी के पैरों से थोड़ा - सा सिन्दूर लाए। घर में सिन्दूर को एक डिब्बी में रखे। डिब्बी के ऊपर प्रति-दिन मन्त्र पढ़े। फिर जब भी कोई शिर - दर्दवाला रोगी आए, तो उसके भाल-प्रदेश में मन्त्र पढ़ते हुए डिब्बी में रखे सिन्दूर से तिलक करे। इससे शीघ्र लाभ होता है।

३९. आधा-शीशी का मन्त्र----ॐ नमो दुघटा तो बन में बसे, तिजटा बसे कपाय। शीश पकडी करी चालिए, आधा-शीशी चल जाय। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करने के लिए ४१ दिन तक ११ माला 'जप' करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में 'रविवार'

को हाथ में थोड़ा चूना लेकर अभिमन्त्रित करे और रोगी के भाल-प्रदेश वा ललाट पर लगाए। इससे आधा शीशी उतर जाएगी। अथवा, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल मस्तक पर छिड़के।

४०. कण्ठ-माला झाड़ने का मन्त्र-- **-ॐ नमो कण्ठ-माला ! तू वृक्ष की डाली। तेरे शीश मारूँ, वज्र की ताली। गोरख मुच्छन्दर, डकरत आए। बढ़ती डाल को तुरन्त घटाए। जो कुछ बची, उसे मुरझाया। घट गई डाल, बढ़न नहीं पाया।**

विधि : 'कण्ठ-माला' के रोगी को, रविवार के दिन से शनिवार तक—७ दिनों तक लगातार, 'मोर-पङ्ख' के चँवर से उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए झाड़े।

४१. कखलाई का मन्त्र----**ॐ नमो कखलाई ! भरत लाई। यहाँ बैठा हनुमन्ता आई। पकै न फूटे, चल बाल जती ! रक्षा करे गुरु गोरख बाल। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा ! फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु को।**

विधि : नीम की डाली ले तीन दिनों तक २१ वार मन्त्र पढ़कर झाड़े। बाद में उस पर पृथ्वी की मिट्टी का लेप कर दे। 'कखलाई' बैठ जायगी।

४२. कर्ण-पीड़ा-निवारक मन्त्र---ॐ वासुदेवाय नमः।

विधि : कर्ण-पीड़ा जब हो, तब प्रातः-काल उठ कर सूर्य को नमस्कार करे। बाद में उत्तराभिमुख बैठकर प्राणायाम करे। श्वास लेते समय अँगुलियों से दोनों कान बन्द रखे। श्वास छोड़ते समय अँगुलियों को हटा ले। उस समय जोर से उक्त मन्त्र का उच्चारण करे। कुछ दिनों तक इसी प्रकार प्रति - दिन थोड़ी - थोड़ी देर करते रहने से कान के रोगों से मुक्ति मिलेगी।

४३. कमर-पीड़ा-निवारक मन्त्र--ॐ भैरवाय नमः।

विधि : पसली और कमर में दर्द हो, तो प्रत्येक शाम को सूर्यास्त के समय पश्चिम की ओर मुख कर बैठ जाय। दर्दवाले भाग के कपड़े निकाल कर—खुला कर नीम की टहनी से २१ बार मन्त्र पढ़े व उस भाग को झाड़ा दे या टहनी का स्पर्श कराए। बाद में टहनी को जलाशय या कुएँ में डाल दे। ७-१४-२१ दिनों तक प्रति-दिन नई टहनी नीम वृक्ष से लाए। उपयोग कर उस टहनी को जल में फेंक दे। धीरे-धीरे दर्द मिट जायगा।

विशेष---साधक या रोगी कोई भी करे। भैरव-शक्ति—महा-शक्ति है। सिर्फ साफ दिल से याद करे। वे आपकी सब प्रकार से सहायता करेंगे। जटिल कार्यों को सरलता से सिद्ध करने के लिए लोग उज्जैन के महा-काल भैरव की मानता रखते हैं, तो उनके सब काम पूरे हो जाते हैं।

४४. नहरुआ झाड़ने का मन्त्र----बने बिआई अञ्जनी, जायो हनुमन्त। नहरुआ जरि होई भस्मन्त। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़कर सात बार सीकटी से एक, तीन अथवा सात लेई झाड़ने से 'नहरुआ' ठीक होता है।

४५. मघवाय का मन्त्र----ॐ नमो आदेश गुरु का। बाल में कपाल, कपाल में भेजी। भेजों में कीड़ा, करे न पीड़ा। सोना का सलावा, रूपा का हथौड़ा। ईश्वर गाड़े, गौर्या तोड़े। इनको शाप श्रीमहा-देव तोड़े। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : मन्त्र को सिद्ध करने के बाद आवश्यकतानुसार मन्त्र को सात बार पढ़कर विभूति या भस्म से चाके अथवा भस्म को छोड़े।

४६. रींघन बाय का मन्त्र---ॐ नमो आदेश गुरु को। ॐ नमो कामरू देश, कामाक्षा देवी----जहाँ बसे इस्मायल जोगी। इसमायल जोगी के पुत्र तीन—एक तोड़े,

एक पिछोड़े, एक रींघन बाय तोड़े। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। मङ्गल और शनि को मनीहारी की मोगरी से उक्त मन्त्र द्वारा झाड़ने पर 'रींघन बाय' दूर हो जाती है।

४७. जँभुवे (जमोगा) का मन्त्र----सुन रे जमोगे! मति कर अभिमान, तेरा नहीं दुनिया में ठिकान। बालक दिया है श्रीभगवान्! बचोगे नहीं तू जमीं आसमान। दुहाई औघड़ की छू, खेद के मारता हूँ।

विधि : रामसर की तीर-कमान बनाकर, उक्त मन्त्र पढ़कर बालक के तीर मारे, तो वह 'जभुवे' की पीड़ा से छूट जायगा।

४८. मिर्गी-मूर्च्छा-नाशक मन्त्र----ॐ हलाहल सरगत मँडिया, पुरिया श्रीराम जी फूँकें। मिर्गी बाई सूखे, सुख होई। ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि : शाबर की विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में रविवार या मङ्गलवार को मन्त्र को २१ बार पढ़े। फिर 'भोज-पत्र' के ऊपर 'अनार' की ८ अंगुल की क़लम से 'अष्ट-गन्ध' की स्याही से इस मन्त्र को लिखे। उसे 'लोबान' के धुएँ में सेंककर 'ताबीज' में भरे और रोगी को पहना दे।

४९. अदीठ का मन्त्र----ॐ नमो सिर-कटा नख-कटा बिष-कटा अस्थि-भेद मज्जा-गत फोड़ा - फुन्सी अदीठ दुबत दुखना रंत्यावरोग रींघरवाय जाय। चौंसठ जोगिनी, बावन वीर, छप्पन भैरूँ, रक्षा कीजे आय। शब्द साँचा पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु को।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में आवश्यकता होने पर 'मोर-पङ्ख' से पृथ्वी को साफ कर एक बार मन्त्र पढ़े और एक

चुटकी भर धूल उठाकर फोड़े के चारों ओर लगा दे। इस प्रकार सात दिनों तक करे, तो 'अदीठ' नष्ट हो। धूल न ले, तो विभूति से भी काम चलेगा। धूल या विभूति—जो भी ले, मन्त्रोच्चारण के साथ उसे फोड़े के चारों ओर लगाना चाहिए।

(४)

भूत-विद्या-विषयक मन्त्र

(१) बलाओं को दूर करनेवाला

अथवा

त्रिविध-ताप-हर मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग २, पृष्ठ ६५, मन्त्र ७ को यहाँ पुनः पाठ-भेद व विधि-भेद के साथ दिया जा रहा है। दोनों मन्त्र ठीक हैं। किसी एक मन्त्र का प्रयोग करें।]

ॐ नमो आदेश गुरु को। घोर - घोर इन घोर, काजी की किताब घोर, मुल्ला की बाँग घोर, रैंगर की कुण्ड घोर, धोबी का कुण्ड घोर, पीपल का पात घोर, देव की दिवाल घोर। आपकी घोर बिखेरता चल, पर की घोर बैठता चल। वज्र का किवाड़ तोडता चल; सार का किंवाड तोडता चल। कुन-कुन सो बन्ध करता चल। भूते को, पलीत को, देव को, दानव को, दुष्ट को, मुष्ट को, चोट को, फेंट को, मेले को, धुएले को; उलके को, बुलके को, हींडके को, भींडके को; आपरी को, पराई को, भूतनी को, पलीतनी को, डङ्कनी को, स्यारी को, भूचरी को, खेचरी को, कलुवे को, मलुवे को, उतकी मथवाय को, ताप की तिजारी को, माथा की मथवाय को, मगश की पीड़ा

को, पेट की पीड़ा को, सांस को, कांस को, मरे की मुसाण को, कुण-कुण का मुसाण, कच्चिया मुसाण, भुकिया मुसाण, कीटिया मुसाण, चीडी-चौपरा का मुसाण, तुह्या मुसाण, ईन्हा को बन्ध करी, ऐडी की ऐडी बन्ध करी, पीड़ा की पीड़ी बन्ध करी, जाँघ की जाड़ी बन्ध करी, कटयां की कड़ी बन्ध करी, पेट की पीड़ा बन्ध करी, छाती की शूल बन्ध करी, सीर की सीस बन्ध करी, चोटी की चोट बन्ध करी। नव - नाडी, बहत्तर कोठा। रोम-रोम में धर, पिण्ड में दखल कर। देश बङ्गाल का, मनसाराम सेवड़ा। आकर मेरा कारज सिद्ध न करे, तो गुरु उस्ताद से लाजे। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ६५ में उक्त मन्त्र की 'विधि' व 'फल' ठीक-ठीक दिया है। दूसरी विधि संरक्षण हेतु यहाँ दी जा रही है। दोनों में से किसी भी एक विधि को करे। यथा— 'शिवालय' में एकान्त स्थान पर 'प्रयोग' करे। २१ रविवारों में उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। 'तेल का दीपक' जलाए व सुगन्धी-धूप करे। सुगन्ध-युक्त इत्र का उपयोग करे। नैवेद्य में 'मद्य' व 'मांस' चढ़ाए। ऐसा २१ रविवार तक करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में प्रत्येक रविवार को करते रहने से फल-प्राप्ति होती है।

शरीर में किसी भी प्रकार का दर्द हो, पीड़ा हो, बीमारी हो, तनाव हो, भूत-प्रेत की बुरी नजर हो या प्रेत-ग्रसित पीड़ा हो, देव या देवी के कोप से पीड़ा हो, तब उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर मोर के पङ्ख से झाड़े। ३ 'रविवार' झाड़ने से सब प्रकार की शान्ति होती है और स्वास्थ्य अच्छा हो जाता है।

विशेष : कोई भी सेवा-भावी साधक उक्त 'प्रयोग' कर 'लोक-कल्याण' का कार्य कर सकता है।

(२) डाकिनी - शाकिनी को बकुराने का मन्त्र—

ॐ नमो आदेश गुरु का। ॐ नमो जय नरसिंह। तीन लोक,

चौदह भुवन में हाथ चाबी, होठ चाबी, नयन लाल-लाल। सर्व बैरी पछाड मार, भगतन को प्राण राखि। आदेश आदि पुरुष को।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को 'ग्रहण' में सिद्ध करे। बाद में उक्त मन्त्र से स्वच्छ जल को अभिमन्त्रित कर डाकिनी-शाकिनी-ग्रस्त को पिलाए। जल पिलाने के बाद उससे जो-जो पूछा जाएगा, वह उसका उत्तर देगा। फिर उत्तर के आधार पर सूझ-बूझ से निवारण करना या करवाना चाहिए।

(३) डाकिनी-भक्षित का मन्त्र—ॐ डाकन - शाकन और सिहारी, भैरो यती के चक्र मारी। अन्न - पान खाय, पराया तके, तिस पापन का भण्डार फूटे—नरसा टूटे, पाप न छूटे। गुरु की शक्ति, चेले की भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : 'ग्रहण-काल' में सिद्ध करे। डाकिनी लग जाने से वह व्यक्ति को धीरे-धीरे निर्बल कर देती है, उसका शरीर सूख जाता है। ऐसे डाकिनी-ग्रस्त को उक्त मन्त्र का ७ बार उच्चारण कर झाड़ने से लाभ होता है। डाकिनी - भक्षित छूट जाता है। डाकिनी-भक्षित से उस व्यक्ति का अर्थ है, जिसे डाकिनी खाती है।

(४) भूत-प्रेत दूर करने का मन्त्र

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग २, पृष्ठ ३३ पर नजर उतारने का मन्त्र है। वही मन्त्र यहाँ 'भूत-प्रेत दूर करने'—शीर्षक से विधि-भेद सहित प्रस्तुत है।—लेखक]

ॐ नमो आदेश गुरु का। गिरह - बाज नटनी का जाया, चलती बेर कबूतर खाया। पीवे दारू—खाय जो मांस, रोग-दोष को लाए फांस। कहां - कहां से लाएगा, गुदगुद में सुवावेगा ? बोटी-बोटी में से लाएगा, चाम-चाम में से लाएगा, नौ-नाडी बहत्तर-कोण में से लाएगा, मार-

मार, बन्दी कर-कर लाएगा । न लाएगा, तो अपनी माता की सेज पर पग धरेगा । मेरा माई, मेरा दिखा-दिखलाय, तो मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : 'ग्रहण' के समय उक्त मन्त्र का 'जप' कर सिद्ध करे । बाद में भूत-प्रेत से बाधा-ग्रस्त को झाड़े ।

(५) प्रेतादि-बलाओं को दूर करने का मन्त्र और तन्त्र [डाकिनी-शाकिनी, ब्रह्म-राक्षस इत्यादि से बचने का मन्त्र और तन्त्र (उतारा करने की विधि)]—कुम्भ कलशे गुरु गोरखनाथ बिराजे । दीप में बिराजे महा-काल । अकाश में भैरव बिराजे । प्रेत-छाया की घोर मिटे । ईश्वरी शक्ति, मेरी भक्ति । चलो मन्त्र ! ईश्वरी वाचा ।

विधि : कुम्हार के यहाँ शनिवार की शाम को जाए । उससे उलटा चाक चलवाकर मिट्टी की '६४ कोड़ियाँ' बनवाए । उन कोड़ियों को घर लाए और सुखवाए । सब कोड़ियों में दीप जलाए । एक बड़ी कोड़िया और ले । उसमें दूध, चावल और शर्करा रखे । सबको एक थाली में रखकर प्रेतादि बला से ग्रस्त व्यक्ति के मस्तक के ऊपर से फिराकर उस थाली को शाम को चकले में या चौराहे में रख दे । उसके आस-पास जल की धारा दे और घर वापस आ जाय । पीछे मुड़कर न देखे । स्नानादि करे, तो उत्तम है । अन्यथा हाथ-पैर धो ले । ऐसा करने से प्रेतादि बलाओं--डाकिनी-शाकिनी, ब्रह्म-राक्षस इत्यादि की पीड़ा दूर होती है । मन्त्र को पहले सिद्ध कर ले । बाद में प्रयोग करे । मन्त्र का स्मरण सतत करता रहे ।

(६) डाकिनी को मूँडने का मन्त्र---ॐ नमो लोह सिंहासनी । लौह ल्याऊँ, सिंहाना बढ़े । नस्तर गढ़ा राम वीर ने, नस्तर गढ़ाया लक्ष्मण ने । तावदे बढ़िया, मूँड़ूँ तेरा डाकिनी माँई । जिन तोहि दिया जनमो, आई मूँड़ूँ तेरा गुरु पीर । जिन दिन मांस ननी, मूँड़ूँ तेरी मात अरु तात । मूँड़ूँ तेरा

भाई-भ्रात, घर बैठी डाकिनी को मूँड़ूँ, पीठ बैठी सिहरी, हनुमन्त यदि खबर लै आवै। जानै लङ्का मारि, मण्डिका तिरिया वीर। ध्वजा धीवती देख्यो, शिर मुंडिरे। छप्पन भैरों गाँव वाबरि सङ्ग लै हेरु, मूँडि मुडिरे हनुमन्त वीर। जाको हिया धरै न धीर, घर बैठा मैं गोडा मूँड़ूँ गाँव। वन काहे को ढूँढ़ूँ? या मन्त्र से मूँड़ूँ डाकिनी सिहारी, हनुमन्त यति आन तुम्हारी। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : नया उस्तरा बनवाकर अमावास्या के दिन उक्त मन्त्र से १०८ बार उसे अभिमन्त्रित करे। फिर उसके द्वारा अपना घुटना मूँड़ने से डाकिनी का सिर मुंड़ जाता है।

विशेष : विधि के विषय में किन्हीं के पास कुछ और विवरण हो, तो चण्डी-कार्यालय को भेजें।

(५)

कुटुम्बोपयोगी मन्त्र

१. पति - पत्नी के मेल का मन्त्र—यथा नकुलो विच्छिद्य, सदधात्यहि पुनः। एवा कामस्य विच्छिन्नं, सङ्धेहि वीर्यापति। अक्ष्यौ नौ मधु सङ्काशे, अनीक नौ समज्जनम्। अन्तः कृणुष्व मां हृदि, इन्नो महा-सति।

विधि : यदि किसी कारण-वश पति-पत्नी में विवाद उठ खड़ा होता हो, अथवा उन दोनों के बीच में मेल न रहता हो या कटुता हो, तो दोनों के बीच में पूर्व - वत् मधुरता बढ़ाने के लिए उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' प्रति-दिन करना चाहिए। सम्भव हो, तो 'जप' के समय गुग्गुल का धूप करे। इससे थोड़े ही समय में पति - पत्नी का आपस का विरोध शान्त हो जाता है और पुनः प्रेम-भाव स्थापित होता है।

२. गृह-कलह-नाशक मन्त्र

(१) धां धीं धूं धूर्जटे पत्नि ! वां वीं वूं वागधीश्वरि !
क्रां क्रीं क्रूं कालिका-देवि ! शां शीं शूं शुभं कुरु ॥

विधि : कभी-कभी परिवारों में कुछ कारण-वश अशान्ति बनी रहती है। ऐसी स्थिति में कोई भी एक पक्ष यदि उक्त मन्त्र का 'जप' करता है, तो क्रमश शान्ति होती है। पहले शुद्धावस्था में नित्य १०८ बार मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' के पूर्व भगवती काली को पुष्प, धूप-दीप अर्पित कर 'ध्यान' करे। फिर 'प्रयोग' करे। 'प्रयोग' हेतु २१ दिनों तक लगातार 'जप' करे। यदि शान्ति की स्थापना न हो, तो १०८ दिनों तक 'प्रयोग' करता रहे। ऐसा करने से गृह-क्लेश समाप्त हो जाता है।

(२) ॐ दमयन्ती-नलाभ्यां तु, नमस्कारं करोम्यहम्।
अभिवादो भवेदत्र, कलि - दोष - प्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्य भवेदेशां, ब्राह्मणानां पृथग्-धियाम्।
निर्वैरता च जायेत, सम्वादाग्ने ! प्रसीद मे ॥

विधि : पहले 'दीपावली' की रात्रि अथवा 'ग्रहण' के समय में उक्त मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए। घर के प्रमुख व्यक्ति को उक्त 'प्रयोग' स्वयं करना चाहिए। 'प्रयोग' हेतु ३३ दिनों तक नित्य ५०० बार 'जप' करना चाहिए। 'जप' के पूर्व धूप-दीप करना चाहिए। 'जप' के बाद 'तर्पण' और 'ब्रह्म - भोज' भी कराना चाहिए। 'जप' उत्तर की ओर मुंह कर और रात्रि में करना चाहिए। ३३ दिनों का एक क्रम पूरा करने के बाद मन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर अष्ट-गन्ध की स्याही और आठ अंगुल की अनार की कलम से लिखकर पूजा-स्थान में रखना चाहिए। फिर उसकी नित्य पूजा करे। इससे गृह-क्लेश की समाप्ति होती है।

३. विवाह और सन्तान-प्राप्ति का मन्त्र

सा देवी नित्यं परितप्यमान, तामेव सीतेत्यभि-भाषमाणः।
दृढ-व्रतो राज-सुतो महात्मा तवैव लाभाय कृत-प्रयत्नः ॥

विधि : सामान्यतः लड़के-लड़कियों के विवाह में अनावश्यक विलम्ब होता है। ऐसी स्थिति में माता या पिता के द्वारा उक्त मन्त्र के 'जप' से विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हो जाता है। 'प्रयोग' हेतु शुद्ध स्वच्छ होकर १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। ऐसा ४५ दिनों तक करे। मन्त्र का प्रभाव कुछ ही दिनों में होने लगता है।

ऐसे ही कभी-कभी पति-पत्नी में क्षमता होने पर भी सन्तान नहीं होती। ऐसे में पति अथवा पत्नी या दोनों उक्त विधि से 'जप' करेंगे, तो सन्तान की प्राप्ति होती है।

४. सन्तान-प्राप्ति के सरल मन्त्र

(१) ॐ हं ॐ सः।

विधि : उक्त मन्त्र का नित्य स्मरण करे। रात-दिन जब भी समय मिले, उक्त मन्त्र का 'जप' करता रहे, तो निःसन्तान को भी सन्तान की प्राप्ति होती है।

(२) ॐ देवकी - सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्-पते !
देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणागतः ॥

विधि : उक्त मन्त्र का एक लाख या सवा लाख 'जप' स्वयं करे या किसी कर्म-काण्डी से कराए। बाद में नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का जप स्वयं करे। इससे सन्तान-प्राप्ति का योग उत्पन्न होता है। जब तक सन्तान उत्पन्न न हो, तब तक 'जप' करता रहे। इससे उत्तम एवं धर्म-शील सन्तान होती है।

(३) ॐ क्लीं देवकी-सुत गोविन्द, वासुदेव जगत्पते !
देहि मे तनयं कृष्ण !, त्वामहं शरणागतः क्लीं ॐ ॥

विधि : पहले पति - पत्नी दोनों सात्त्विक आहार-विहार के साथ ब्रह्मचर्य-पूर्वक रहें। दुग्धाहार या फलाहार करते रहें, तो और भी अच्छा। फिर किसी भी शुभ दिन से प्रारम्भ कर उक्त मन्त्र का १ लाख बार जप करे। जब १ लाख 'जप' पूरा हो जाए, तब तिल व शहद में दशांश 'हवन' करे। इस अनुष्ठान के बाद प्रति-दिन १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करता रहे। 'जप' पूरी श्रद्धा व विश्वास से करे। ऐसा करने से पुत्र-लाभ होता है।

५. मृत-वत्सा दोष या रोग-निवारक मन्त्र—(१) ॐ पर-ब्रह्म परमात्मने 'अमुकी' के गर्भे दीर्घ-जीवि सुतं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : (१) पहले पर्व-काल में उक्त मन्त्र का 'जप' कर सिद्ध करे। बाद में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को १००८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। मन्त्र में 'अमुकी' के स्थान पर मृत-वत्सा दोष-युक्त स्त्री का नाम जोड़े। 'जप' के बाद मन्त्र को भोज-पत्र पर अनार की कलम व अष्ट-गन्ध से लिखकर ताबीज में भरे और उसे 'स्त्री' की भुजा पर बाँधने के लिए दे।

(२) 'मार्गशीर्ष' या 'ज्यैष्ठ' की पूर्णिमा के दिन घर को स्वच्छ कर तोरण आदि बाँधकर सजाए। 'अमुकी' के स्थान पर 'स्त्री' का नाम जोड़कर मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' के बाद ब्राह्मण को दान-दक्षिणा से सन्तुष्ट करे। यदि पुत्र - प्राप्ति न हो, तो प्रति-वर्ष उक्त क्रिया करे, जब तक पुत्र प्राप्त न हो।

विशेष : शुभ नक्षत्र में 'अपा-मार्ग' और 'लक्ष्मणा' की बूटी को खोदकर लाए। एक वर्णवाली गाय के दूध में इन जड़ों को पीस कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दोष-युक्त स्त्री को पिलाए। इससे दोष का निवारण शीघ्र होता है। अथवा, बिजोरा नींबू की जड़ को दूध में पीस कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर—ऋतु-काल में एक सप्ताह भर पिलाए। इससे दीर्घ-जीवी पुत्र की प्राप्ति होती है।

६. काक-वन्ध्या-दोष-शान्ति—ॐ नमः शक्ति - रूपाय अस्याः गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : जिस स्त्री को एक पुत्र या एक पुत्री होकर फिर दूसरी सन्तान नहीं होती है, उसे 'काक-वन्ध्या' कहा जाता है। एक सन्तान होने के बाद दूसरी सन्तान की प्राप्ति न होने पर यह 'प्रयोग' किया जाता है। पहले 'अस्याः' शब्द के स्थान पर काक-बन्ध्या-दोष-युक्त स्त्री का नाम जोड़े। मन्त्र के अनुष्ठान हेतु 'जप' - संख्या का उल्लेख प्राप्त नहीं है। यदि किसी को जानकारी हो, तो सूचित करने की कृपा करेंगे। आस-पास यदि कोई शुद्ध कर्म-काण्डी ब्राह्मण हों या 'कुल-गुरु' हों, तो उनके परामर्श से 'जप' करे।

विशेष : 'विष्णुक्रान्ता' की जड़ को भैंस के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ऋतु - काल में सात दिनों तक सेवन करे। इससे 'काक-वन्ध्या - दोष' की शान्ति होती है और स्त्री श्रेष्ठ गर्भ धारण करती है।

७. वन्ध्या गर्भ-धारण-मन्त्र—ॐ नमः सिद्धि - रूपाय अमुकीं सपुष्पां कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : 'अमुकी' के स्थान पर वन्ध्या स्त्री का नाम जोड़े। इस प्रयोग में भी 'जप'-संख्या का उल्लेख नहीं है। कुल-गुरु या कर्म-काण्डी ब्राह्मण से परामर्श कर 'जप' करे।

विशेष : 'पुत्र-जीवी' नामक वृक्ष के एक पत्ते को दूध में मिला कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ७ दिन तक नियम - पूर्वक सेवन करे और आठवें दिन पति-समागम करे, तो वन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करती है।

कभी-कभी गर्भ धारण करनेवाली स्त्री का गर्भ गिर जाता है। इस अवस्था में 'गर्भ न गिरे' का मन्त्र और उसके स्तम्भन का मन्त्र भी करना चाहिए। अथवा, प्रसूति के समय कष्ट होता है, तो 'सुख-प्रसव का मन्त्र' जपना चाहिए। उसके बाद आवश्यकता हो, तो 'शिशु - रक्षा के मन्त्र' भी हैं। सभी का सूझ-बूझ के साथ उपयोग करना चाहिए।

८. लड़के पैदा होने का मन्त्र----सुबहान अल्लास लम यलिद बलम यूलद वलम या कुल कहू कुफ़ी बन अहदइन्नी सम्मे तो इसमो हू मुहम्मद व अहमदा व महमूदन बिरह मतेका या अर हमर राहिमीन।

विधि : कभी-कभी कुछ माताओं को केवल लड़कियाँ ही होती हैं और लड़का नहीं होता। ऐसी माताओं के लिए उक्त मन्त्र उप-योगी होता है। पहले स्त्री के पेट के ऊपर उँगली से 'बिसमिल्लाह' लिखे। बाद में उक्त मन्त्र को भी लिखे। यदि उक्त मन्त्र को लिखने-वाला पिता पढ़ा - लिखा न हो, तो उसे किसी से लिखाकर ताबीज कमर में बाँधे।

९. बच्चों को लगी हुई नजर दूर करने का मन्त्र---- शुक्र, शनिश्चर, मङ्गलवार, टोनहिन चलो वीर दरबार। झार-झूर चङ्गा किया, टोनाहिन के मुँडवा पर पटक दिया।

विधि : शुक्रवार के दिन आटे की १२५० गोलियाँ उक्त मन्त्र पढ़ते-पढ़ते बनाए। रविवार को वे गोलियाँ मन्त्र पढ़ते-पढ़ते जल में डाल कर मछलियों को खिलाए। इस तरह एक बार करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में साधक हाथ में भस्म रखकर उसे २१ या २७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर बच्चे के सम्पूर्ण शरीर पर लगाए। अथवा, बच्चे की माँ को कहे कि बच्चे के शरीर पर दी गई भस्म को मसले। इस तरह करने से (१) बच्चा हर प्रकार की बुरी नजर से बच जाता है। (२) विविध बलाएँ, जो बच्चों को शोषती हैं, बन्द हो जाती हैं। (३) नजर-टोने-टोटके से जो बच्चा बीमार हो जाता है, वह निरोगी बनता है।

विशेष : (१) उक्त उपाय करने पर भी बच्चा स्वस्थ न रहे, तो विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा जाँच भी करवानी चाहिए।

(२) केवल पाँच वर्ष के बच्चों के लिए ही उक्त 'प्रयोग' करे।

१०. रूठी हुई स्त्री का वशोकरण—मोहिनी माता, भूत पिता, भूत सिर बेताल। उड़ ऐं काली 'नागिन' को जा लाग। ऐसी जा के लाग कि 'नागिन' को लग जावै हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख, न लेटे सुख, न सोते सुख। सिन्दूर चढ़ाऊँ मङ्गलवार, कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख, काया तड़प-तड़प मर जाए। चलो मन्त्र, फुरो वाचा। दिखाओ रे शब्द ! अपने गुरू के इल्म का तमाशा।

विधि : मन्त्र में 'नागिन'-शब्द के स्थान पर स्त्री का नाम जोड़े। शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से ८ दिन पहिले साधना प्रारम्भ करे ! एक शान्त - एकान्त कमरे में रात्रि में १० बजे शुद्ध वस्त्र धारण कर कम्बल के आसन पर बैठे। अपने पास जल भरा एक पात्र रखे तथा

'दीपक' व धूपबत्ती आदि से कमरे को सुवासित कर मन्त्र का 'जप' करे। 'जप' के समय अपना मुँह स्त्री के रहने की स्थान की ओर रखे। एकाग्र होकर घड़ी देखकर ठीक दो घण्टे तक 'जप' करे। जिस समय मन्त्र का 'जप' करे, उस समय स्त्री का स्मरण करता रहे। स्त्री का चित्र हो, तो कार्य अधिक सुगमता से होगा। साथ ही, मन्त्र को कण्ठस्थ कर जपने से ध्यान केन्द्रित होगा। इस प्रयोग में मन्त्र-जप की गिनती आवश्यक नहीं है। उत्साह-पूर्वक पूर्ण सङ्कल्प के साथ 'जप' करे।

११. भाग्योदय हेतु अनुभूत मन्त्र----ॐ गं नमः।

विधि : भगवान् गणेश की मूर्ति या चित्र सामने रखकर १५ दिनों तक नित्य ५१ माला 'जप' करे। 'जप' के पूर्व भगवान् गणेश की पूजा करे। 'जप' के बीच में उठे नहीं। 'जप' श्रद्धा से और पूर्ण व्यवस्थित होकर करे। कम बोले और कम भोजन करे। ब्रह्मचर्य का पालन करे। अच्छे लोगों के सत्सङ्ग में रहे। इससे 'भाग्योदय' होता है। नौकरी, विवाह आदि कार्य सरलता से सम्पन्न होते हैं। भगवान् गणेश को पक्का केला प्रिय है। 'नैवेद्य' में उसे अर्पित करना चाहिए।

१२. शरीर की कान्ति बढ़ाने का मन्त्र----ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं कङ्काली काली मधुमत्ता मातङ्गी मद - विह्वली मन-मोहिनी मकर-ध्वजे स्वाहा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को १०८ बार 'जप' कर जल को अभिमन्त्रित करे। फिर उस जल से मन्त्र का स्मरण करते हुए स्नान करे। इससे शरीर की कान्ति, तेज और ओजस बढ़ता है।

१३. सांसारिक कठिनाइयों को दूर करने का मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं चामुण्डायै नमः।

विधि : उक्त मन्त्र का ५१ दिनों तक नित्य १ हजार 'जप' करे। अनुष्ठान के समय खाने-पीने की वस्तुओं में से किसी भी एक प्रिय वस्तु को छोड़कर भोजन करे। इससे शीघ्र लाभ होता है।

१४. आपत्ति-निवारक मन्त्र---ॐ नमो हनुमन्ते भय-भञ्जनाय सुखं कुरु कुरु फट् स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का 'जप' १० दिन ३ मास तक नित्य ११-११ माला करे। कैसी भी आपत्ति होगी, वह दूर हो जाएगी। विश्वास - पूर्वक करे। 'जप' यदि हनुमान जी की मूर्ति या चित्र के सामने बैठकर करे, तो अति उत्तम। ब्रह्मचर्य का पालन करे। जब आपत्तियाँ दूर हो जाएँ, तब 'नारियल' चढ़ाए।

१५. चिन्ता दूर करने का मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं भगवती चिन्तामणी सर्वार्थ-सिद्धि देहि देहि स्वाहा।

विधि : पहले वासन्तिक व शारदीय 'नवरात्र' में विधि-सहित २१ हजार 'जप' करे। बाद में नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इससे मन की सभी चिन्ताएँ दूर होंगी। चिन्ता या तनाव आज के युग की विशेष देन है। उक्त मन्त्र के 'जप' के साथ - साथ युक्ति-पूर्वक निराशा छोड़कर सङ्कल्प-बल बढ़ाना चाहिए।

१६. मच्छर-विष-निवारक मन्त्र---पूर्वे ब्रह्मा मे बद्धः। पश्चिमे विष्णु मे बद्धः। उत्तरो रुद्रो मे बद्धः। दक्षिणे यमो मे बद्धः। पाताले वासुकी मे बद्धः। फणि-सहस्त्र मे बद्धः। हुँ अंगुष्ठाग्र मे बद्धः।

विधि : उक्त मन्त्र को तीन बार सस्वर बोले और तीन बार ताली बजाए। इससे मच्छरों के विष का निवारण होता है। मच्छर के डङ्क से शरीर में विष का प्रवेश होता है और 'ज्वर' आता है। इससे बचने के लिए मच्छरों के विष का निवारण करना बहुत आवश्यक है।

विशेष : (१) यदि मच्छरों का असह्य त्रास हो, तो 'अडाय' का धुआँ करे। उसमें थोड़ा-सा 'बहास' कपूर डाले। इससे मच्छर भाग जाते हैं और घर में सुवासित वातावरण होता है। बाद में निवास के बाहरी दरवाजे बन्द कर पङ्खा आदि चलाने से मच्छर के त्रास से विशेष रूप से रक्षा होती है।

(२) मच्छरों को भगाने का एक अन्य उपाय भी है। इसके अनुसार मिट्टी के एक छोटे बरतन में नारियल के छिलके सुलगाए। जब उसमें से धुआं निकलने लगे, तब उसे कमरे के एक कोने में रखे। इस समय कमरे में पङ्खा आदि न चलाए। कुछ देर बाद कमरे के दरवाजे खोले। धुएँ से त्रसित मच्छर बाहर भाग जाएँगे। फिर धुएँ को बुझा कर पङ्खा चालू करे, तो धुआँ भी चला जाएगा और मच्छर पुनः बहुत देर तक वापस नहीं आएँगे।

(३) गुड़, चन्दन, लाख, त्रिफला, बिडङ्ग और आक के पात का मिश्रण कर चूर्ण बनाए। फिर सोने से पहले उसका धूप कर सोए, तो मच्छर घण्टों तक वापस नहीं लौटेंगे। प्राचीन समय में जब जन्तु-नाशक दवाइयाँ नहीं थीं, तब इसी प्रकार के 'धूपों' का प्रचलन था।

(४) अशोक वृक्ष के पत्तों को एकत्र कर सुखवाए। पत्ते सूख जाने पर उसकी धूनी सायं-काल अपने निवास में करे। इससे मच्छर भाग जाएँगे। ऐसे ही नीम की पत्तियों की धूप भी काम देती है।

१७. मक्खी भगाने का मन्त्र---ॐ वज्र कष्टी वज्र की बारै, वज्र में बाँधो दस में धार। वज्र पानी में पियौ, तौ डाहनि डाकिनी ना छिवै। जाघचापो का लीसी शन्यत्र, ब्रह्मा की धीया। सिसुडाकिनी माकखो मोरै जीव भाँति करै चलै। पानी करै, ग्रहण करै। पानी करै, सुनै कै रहासी करै। नयन कटाक्ष करै, अपनी हथेरी बडै। सवारै किलनी, पोतली आनि। पतिया मोहे न लागै, मइ करै। ताकौ मरत कपरैहूँ, मो सिद्धि गुरु गुरु पाह। श्री महादेव की आग्या।

विधि : (१) 'हरताल' को खरल में कूट कर रखे। फिर लकड़ी की एक पुतली बनवा कर उसके ऊपर 'हरताल' का लेप करे। इस 'पुतली' को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर धूप दे, तो घर की सभी मक्खियाँ भाग जाती हैं।

(२) लकड़ी का एक टुकड़ा लेकर उससे एक बड़ा मक्ख या मक्खी बनाए। उसके ऊपर 'तगर' और 'हरताल' का मिश्रण लगाए। इस

मक्खे या मक्खी को घर में बीचो - बीच लटकाए। इसकी गन्ध से मक्खियाँ भाग जाती हैं।

१८. कीड़े-मकोड़ों का विष-निवारक मन्त्र----(१) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ॐ स्वाहा, ॐ गरुड सं हुँ फट्।

(२) ॐ नमो भगवते विष्णवे सर सर, हन हन, हुँ फट् स्वाहा।

विधि : पहले उक्त किसी मन्त्र का ग्रहण-काल में यथा-शक्ति 'जप' करे। बाद में 'भस्म' को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लगाए अथवा फूँके। ये मन्त्र सभी प्रकार के कीड़ों के विष को नष्ट करने में उत्तम है।

१९. बाजीकरण मन्त्र----(१) ॐ नमो ह्यमुकं बल-पराक्रमं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र को १०८ बार 'जप' कर सिद्ध करे। बाद में नित्य १०८ बार 'जप' करे, तो उत्तम बाजीकरण होता है।

(२) कां कां लिं लां यूं सः पुत्रं दापय दापय स्वाहा।

बिधि : भाद्रपद मास में जिस 'रविवार' को 'पुष्य नक्षत्र' हो, उस दिन 'सप्त-पर्ण वक्ष' का फल लाकर भुजा में बांधे तथा उक्त मन्त्र का १ लाख बार 'जप' करे। बाद में ६ वर्षों तक प्रति-दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार 'जप' करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। यह मन्त्र बाजीकरण हेतु बहुत उत्तम है। यह नष्ट - वीर्य पुरुष को भी पौरुष-दायक है।

२०. नपुंसकीकरण मन्त्र----ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय काम - प्रचण्डाय हन हन विनतेय मुखेन खण्डय खण्डय स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र को रात्रि में निर्जन स्थान में १० हजार बार जपे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के प्रभाव से पुरुष नपुंसक हो जाता है।

२१. **स्त्री-द्रावण मन्त्र----ॐ नमो भगवती----उगदामे-शुराह् द्रवै द्रवै स्त्रीणां---पातय स्वाहा ठः ठः ।**

विधि : 'गोरोचन' को पानी में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर हाथ के ऊपर लेपन करे। इससे पुरुष के स्पर्श मात्र से स्त्री द्रवित होती है।

२२. **शिश्न - दृढ़ीकरण मन्त्र----ॐ चिटी चिटी सा चिटी स्वा चिटी ठः ठः ।**

विधि : चिता के कपड़े को गाय के दूध से धोकर, उस पर चन्दन का लेप करे। बाद में उस कपड़े को १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शिश्न पर लपेटे। इससे शिश्न दृढ़ होता है।

२३. **योनि-दृढ़ीकरण मन्त्र----ॐ अमुक भग - बन्धनं विस्फुरण ध्रुव श्रोनितम् ।**

विधि : उक्त मन्त्र से पान के रस को ७ बार अभिमन्त्रित कर योनि में लगाने से वह दृढ़ होती है।

२४. **वीर्य-स्तम्भन मन्त्र----ॐ नमो भगवते महा-बल पराक्रमाय मनोभिलाषितं स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा ।**

विधि : उक्त मन्त्र को १०८ बार 'जप' कर दूध को अभिमन्त्रित कर पीने से वीर्य का स्तम्भन होता है।

▩ ▩ ▩

(६)

किसानोपयोगी मन्त्र

१. **खेत में उपज बढ़ाने का मन्त्र—ॐ नमः सुरभ्य बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा ।**

विधि : पहले उक्त मन्त्र का १० हजार 'जप' कर सिद्ध करे। फिर प्रयोग करे। प्रयोग हेतु 'पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र' में बहेड़े के वृक्ष का बांदा लेकर उक्त मन्त्र से १०० बार अभिमन्त्रित कर खेत में गाड़े।

इससे खेत में अधिक अन्न उत्पन्न होता है। साथ - साथ यदि चूहों या टिड्डी आदि से खेती में हानि होती है, तो वह हानि भी दूर होती है।

२. खेत की फसल नष्ट करने का मन्त्र—ॐ नमो वज्र-पाताय सुर-पतिराज्ञापयति हुँ फट् स्वाहा।

विधि : शुभ मुहूर्त में उक्त मन्त्र का १० हजार 'जप' करने से मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में 'प्रयोग' करे। जिस स्थान पर आकाश से बिजली गिरी हो, वहाँ की मिट्टी लाकर एक वज्र बनाए। वज्र को १०० बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। बाद में इस 'वज्र' को जिस खेत में गाड़ा जायगा, उसकी सब फसल नष्ट हो जाएगी।

३. खेत के कीड़े नष्ट करने का मन्त्र----ॐ नमः क्षुरभ्यौ बलाछन परि पति सिलि स्वाहा।

विधि : १० हजार 'जप' करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में 'प्रयोग' करे। सफेद सरसों पर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर खेत में छोड़े। इससे कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

४. अनाज में कीड़ा न पड़ने का मन्त्र----ॐ नमो भगवऊ रिद्ध (रिद्धि) करी, सिद्धि करी अणिमा महिमा ए धान सुले, तो गुरु गोरखनाथ बालिनाथ अच्चल गुसाई की आण।

विधि : २१ दिनों तक नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। फिर 'प्रयोग' हेतु नदी के किनारे २१ कङ्कड़ों को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अनाज में रखे। इससे अनाज में कीड़े नहीं पड़ेंगे।

५. औषधि फूलने-फलने का मन्त्र----ॐ नमो मञ्जनाथ पतद विथा हर-हर, सिलि - सिलि सर्वबासनाना तुण्ड बन्ध कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

ॐ उज्येन्नग्री भेरोवाले महा-देव भण्डार फल फल हो हनुमन्त साखी।

विधि : उक्त मन्त्र को पढ़कर उच्च स्वर से--'अस्ति-अस्ति' कह कर खेत में औषधि लगाए या बोए, तो वह अधिक फलती-फूलती है।

६. टिड्डी का मन्त्र----ॐ नमो पश्चिम देश में अस्ताचल हुआ, जहाँ अजयपाल खुदाया कुआँ। जा कुआँ में निकसा नीर, भेला हुआ बावन वीर। जिन्होंने मिल मता उपाय हाथ पकरि टीडी को ल्याया। सुन रे टीडी ! बाँधूँ तेरी डाढ़। जिमि असमान शिर लै बाँधूँ! तीजै तेरा जाया ल्याऊँ। बारह कोस मुकाम कराऊँ या विधि विचरे बावन वीर। जाय डारी समुद्र के तीर। मेरा किया सब कोई लाजै। मेरे शिर पर यती हनुमन्त गाजै। किसी की चलाई चलै नाँहि। मेरा डङ्का चारि खूँट में बाजै या विधि की चलाई न चले, तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लाजैं। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले तीन टिड्डियों को पकड़ कर उक्त मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे और उनके ऊपर अपनी कनिष्ठा अंगुली का रक्त छिड़के। बाद में एक साँस में दौड़ कर, जहाँ भी टिड्डियों को रखा जाएगा, वहीं टिड्डियों का पड़ाव होगा। वे उससे आगे नहीं बढ़ेंगी।

विशेष : खेत की फसल को बचाने के लिए किसान अपने खेत के चारों कोनों में मरे हुए ऊंट की हड्डियों को दबा देते हैं। इससे खेत में जो पशु-पक्षी नुकसान करते हैं, वे नहीं आते। इस टोटके को 'पशु-स्तम्भन' कहा जाता है।

▣ ▣ ▣

(७)

पशु-पालन हेतु उपयोगी मन्त्र

१. पशु - संरक्षण मन्त्र—अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः, किरीटी श्वेत-वाहनः । बीभत्सुः विजयी पार्थः, सव्य-साची धनञ्जयः ।। कपि-ध्वजो गुडाकेशो, गाण्डवी कृष्ण-सारथी । एतान्यर्जुन-नामानि, गवां गोष्ठे च यो लिखेत् ।। न तत्र पशु-रोगादि, शुभं शीघ्रं प्रजायते ।

विधि : भोज-पत्र के ऊपर अष्ट-गन्ध की स्याही से अनार की कलम से लिखकर धूप-दीप सहित चैतन्य करे । बाद में उसको लाल वस्त्र के टुकड़े में बाँध कर पशु-गृह में टाँगे । ऐसा करने से पशुओं पर कोई कष्ट नहीं आता ।

२. पशुओं के रोगों को भगाने का मन्त्र—ॐ नमो बैली देहली । बाँबी देहलीय राम सारी साटकी पशु नीको हो जाय । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : पशु-गृह के दरवाजे पर खड़े होकर चारों ओर क्रमशः चार-चार साटी मारने तथा उक्त मन्त्र पढ़ने से पशुओं के रोग दूर हो जाते हैं ।

३. पशु के कीड़ा झारने का मन्त्र—ॐ नमो कीड़ा रे, तू कुण्ड कुण्डाला । लाल पूँछ, तेरा मुँह काला । मैं तोहि पूछुँ, कहाँ ते आया ? तोडि मांस, तै सबकूँ खाया । अब तू जाए, भस्म हो जाए । गुरु गोरखनाथ करै सहाय । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : उक्त मन्त्र पढ़कर ७ बार नीम की डाली से झाड़े । इससे पशुओं के कीड़े मर जाते हैं ।

४. गाय-भैंस के कीड़े झारने का मन्त्र—सहत पटनारी अर्ज गतीव पाञ्जनी के पाँकडा जाए ।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में चौराहे पर जाए और वहाँ से ७ कङ्कड़ लाए। फिर जानवर का नाम लेकर मन्त्र पढ़कर झाड़े और 'कीड़े उड़ गए'– यह कह कर कङ्कड़ मारे।

५. गाय-भैंस का दूध न देना—(१) सुआ झार, कज्जल भार। तेल कड़ाही, दूधा धार। सारा भार, विष उतर। गङ्गा - यमुना, चले नीर। बालक छोडे, मातु शरीर। जो अटके, तो गौरा-पार्वती का अँचला फटे। दोहाय ईश्वर महा-देव गौरा-पार्वती। नैना योगिनी, कामरू कामाक्षा के दोहाय।

विधि : 'ग्रहण' या 'दिवाली' की रात में उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। जब आवश्यकता पड़े, तब उक्त मन्त्र को राख पर पढ़कर या पढ़वा कर पशु के स्तन एवं मस्तक पर लगाए, अथवा घास पर पढ़-कर खिलाए। इससे पशु ठीक ढङ्ग से दूध देने लगता है।

६. खोई हुई वस्तु, जानवर, व्यक्ति को पुनः प्राप्त करने का मन्त्र—कार्तवीर्यार्जुनो नाम, राजा बाहु-सहस्त्र वान्। तेन स्मरण-मात्रेण, गतं नष्टं च लभ्यते ॥

विधि : पहले उत्तम मुहूर्त्त में उक्त मन्त्र का १० हजार 'जप' करे। बाद में प्रयोग करे। एक लकड़ी के पटरे के ऊपर उक्त मन्त्र को कोयले से लिखे और वस्तु या प्राणी जिस स्थान से खोए हैं, वहीं उक्त पटरे को उलट कर रखे। इससे खोई हुई वस्तु, जानवर, व्यक्ति पुनः वापस आ जाते हैं।

(२) ॐ नमो हुङ्कारिणी प्रसव ॐ शीतलम्।

(३) ॐ ह्रीं करालिनि पुरुष सुखं मुखं ठं ठः।

विधि : पहले सिद्ध करे, फिर जब आवश्यकता पड़े, तब गाय-भैंस के चारे को १०८ बार उक्त किसी एक मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसे खिलाए। इससे दूध में वृद्धि होती है।

❋ ❋ ❋

(८)

सर्वोपयोगी मन्त्र

१. शूकर-चूहा भगाने के मन्त्र—(१) दुष्ट शूकर, मूस के घर और खेत से। इहाँ से जे उन्दूर आवति, वहाँ से हनिवत धावति। उन्दूरहि ल्यावे बाँधि, जब खेत खाय सूअर औ घरमां रहे मूस। खेत, घर छाँडि बाहर भूमि जाई। दुहाई हनुमान की, जो अब खेत मँह सूअर, घर मँह मूस जाई।

विधि : क्रमाङ्क १ में प्रकाशित मन्त्र में कुछ पाठ-भेद मिलते हैं। यहाँ पाठ-भेद सहित दूसरा मन्त्र दिया गया है। पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में थोड़ा चावल और हल्दी की पाँच गाँठें लेकर 'रवि' या 'मङ्गल' को सबको अभिमन्त्रित कर मन्त्र पढ़ते हुए घर में या खेत में रखे। इससे चूहे भाग जाते हैं।

(२) पीत-पीताम्बर मूषा गान्धी ले जाईहु। ए हनु-मन्त ! तू बाँधि हनुमन्त लङ्का के एऊ। यहि कौने पैसहु, नहि कोने जाऊ।

(३) पीत-पीताम्बर मूसा गान्धी, ले जावहु हनुमन्त ! तुँ बाँधि, ए हनुमन्त ! लङ्का के राउ, एहि कौणे पैसेहु, एणि कोणे जाहु।

(४) मूसा चूहा कुम्भ कराई। जब ही पठवौं, तब हो जाई। मूसा के ऊपर मूस के फेट। तू जाइ काटहु आने के खेत। गौरी-पार्वती की दुहाई, महा-देव की आज्ञा।

विधि : उक्त तीनों मन्त्रों की विधियाँ एक ही हैं। पर्व-काल में मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में जब आवश्यकता पड़े, तब स्नान कर हल्दी की पाँच गाँठों और थोड़े चावलों को उक्त मन्त्र से ७ बार अभि-

मन्त्रित कर खेत अथवा घर में डाले। इससे जङ्गली सुअर और चूहे खेत अथवा घर को छोड़कर भाग जाते हैं।

(५) मूसा चूहा कुम्भ कराई। जब ही पठवी, तब ही जाई। मूस के ऊपर मूस के फेट, तुँ जाई काटहु आन का खेत। गौरा-पार्वति की दुहाई, शङ्कर महा-देव की आज्ञा।

विधि : 'दीपावली' या 'ग्रहण' के समय उक्त मन्त्र का १००८ बार 'जप' करे। इससे मन्त्र की सिद्धि होगी। जब मन्त्र - सिद्धि हो जाए, तब दूसरे दिन श्रीगणपति जी को लड्डुओं का 'भोग' लगाए। बाद में 'प्रयोग' के समय पुनः श्रीगणपति जी को लड्डुओं का नैवेद्य लगाए। इससे श्रीगणेश जी व उनका 'वाहन' चूहा प्रसन्न होते हैं। चूहों का उपद्रव बन्द हो जाता है।

विशेष : हल्दी और चावल को पीस कर गोली बनाए। गोली बनाते समय स्वच्छ जल का उपयोग करे। फिर प्रत्येक गोली को उक्त मन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित करे। बाद में अभिमन्त्रित गोलियों को निवास-स्थान में प्रत्येक कोने में ५-५ गोलियाँ रखे। ऐसे जितने कमरे हों, उसके हिसाब से गोलियाँ बनाए। ऐसा करने से घर में छिपे हुए सभी चूहे घर छोड़कर चले जाएँगे।

२. चूहा विष-नाशक मन्त्र—ॐ गेरिठः।

विधि : पहले 'ग्रहण'-काल में उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मन्त्र से अभिमन्त्रित 'भस्म' चूहे के द्वारा काटे हुए स्थान पर छिड़के। इससे लाभ होगा।

३. चूहे के विष-निवारण हेतु टोटके

(१) चूहे की लेंडी में जल डालकर चूहे के द्वारा काटे गए स्थान पर दो-तीन बार लगाने से चूहे का विष नष्ट होता है।

(२) ऐरण्ड के तेल को दिन में बार-बार लगाने से भी चूहे का विष उतर जाता है।

४. चूहे को भगाने के लिए टोटके

(१) 'अर्जुन'-वृक्ष के फल - फूल, लाख, चन्दन या रक्त - चन्दन, गुग्गुल, श्वेत अपराजिता की जड़, भिलावा, वच की लकड़ी—इनको

एकत्रित कर चूर्ण बनाए। फिर इसकी धूनी अपने निवास में करे। इससे चूहे भाग जाते हैं।

(२) अपने बाएँ हाथ से ऊँट के नख को निवास-स्थान में जमीन में दबाने से चूहे घर में प्रवेश नहीं करते।

(३) ऊँट के दाहिने पैर के बाल की धूनी घर में बार - बार करने से घर के चूहे भाग जाते हैं।

(६)

आर्थिक उन्नति हेतु मन्त्र

१. वैभव-दायक मन्त्र

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ८८, क्रमाङ्क ६ का मन्त्र देखें। यही मन्त्र 'भूल-सुधार'-सहित भिन्न शीर्षक व विधि के साथ यहाँ दिया जा रहा है।]

ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्रीं श्रीं ॐ पूर्वाय, दक्षिणाय, पश्चिमाय, उत्तराय आण पूरय, सर्व - जन वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि : जब भी 'ग्रहण' हो, तब उक्त मन्त्र का यथा - शक्ति 'जप' करे। गिनती न भी करे, तो भी ठीक। इससे मन्त्र चैतन्य हो जाएगा। फिर सूर्योदय के पूर्व प्रति - दिन स्नानादि कर बिना कुछ खाए, बिना कुछ बोले उक्त मन्त्र को १० बार 'जपे' और दसों दिशाओं में फूंके। इससे धन-वैभव की प्राप्ति होगी अथवा उन्नति होगी। एक अन्य मत से निवास-स्थान के 'प्रवेश-द्वार' पर मन्त्र पढ़कर फूंकने से भी लाभ होता है। अतः दोनों प्रकार से करना चाहिए।

२. धन - प्राप्ति के मन्त्र—(१) ॐ सरस्वती भगवती माता ! क्रां श्रीं श्रीं श्रीं मम धन देहि फट् स्वाहा।

विधि : यदि व्यापार आदि में धन की कमी का अनुभव हो रहा हो, तो उक्त मन्त्र का नित्य ११०८ बार 'जप', ४० दिनों तक करे। इससे लक्ष्मी देवी प्रसन्न होती हैं और धन-प्राप्ति होती है।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महा-लक्ष्मी मम - गृहे आगच्छ-ऽागच्छ ह्रीं नमः ।

विधि : 'दीपावली' की रात्रि में काँसे (कांस्य) की थाली में 'अष्ट - गन्ध' की स्याही और 'अनार' की कलम से उक्त मन्त्र को लिखे। थाली को पूजा-स्थान में एक लकड़ी के पटरे के ऊपर लाल वस्त्र बिछा कर रखे। 'रात्रि' में ही 'मन्त्र' का 'जप करे। फिर प्रत्येक रात्रि को उक्त मन्त्र का कम-से-कम १० माला 'जप' करे। इस प्रकार कुल १२,५०० 'जप' करे। यदि लाभ हो, तो सवा लाख 'जप' करे।

३. व्यापारिक घाटे को दूर करने का मन्त्र--ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीमेव कुरु कुरु वाञ्छितमेव ह्रीं ह्रीं नमः।

विधि : कभी-कभी व्यापार में घाटा बढ़ता ही जाता है और व्यापार बन्द करने की स्थिति आ जाती है। ऐसी स्थिति में सुधार हेतु उक्त मन्त्र का 'जप' करना चाहिए। ४० दिनों तक नित्य २१ माला 'जप' करना चाहिए।

४. व्यापार - वर्धक मन्त्र—(१) ॐ श्रीं श्रीं परमां सिद्धि श्रीं श्रीं ॐ।

विधि : 'प्रदोष' का 'व्रत' रखे। सन्ध्या-समय में नागौरी के फूल अष्ट-गन्ध में मिलाकर रखे। उक्त मन्त्र का १००० जप कर १०८ आहुतियाँ उक्त वस्तुओं से दे। ऐसा ७ 'प्रदोषों' तक करे। इससे व्यापार में वृद्धि होती है।

(२) ॐ श्रीं श्रीं श्रीं परमाम् सिद्धि श्रीं श्रीं श्रीं ॐ।

विधि : आज के युग में कुछ व्यापारी बन्धुओं को बहुत कुछ करने पर भी व्यवसाय में इच्छित वृद्धि नहीं मिलती, प्रति - दिन आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उक्त मन्त्र का जप लाभ-दायक होता है। 'सोम-प्रदोष' को उपवास करे। 'अन्न' व 'नमक' का त्याग करे। फलाहार भी मर्यादा में ही करे। सायं-काल शिव जी का 'पूजन' कर उक्त मन्त्र का कम-से-कम ३ माला जप करे अथवा अधिक 'जप' करे। बाद में अगर, तगर, केशर, लाल-चन्दन, श्वेत-चन्दन, देवदारु, कपूर, गूगल और अस-गन्ध के फूलों को

घृत में मिलाकर १०८ आहुतियाँ अग्नि को दे। ऐसे '७ प्रदोष' बिना नागा करे। इससे व्यवसाय में वृद्धि होती है और सभी प्रकार की आर्थिक कमी भी दूर होती है। बाद में भी यदि ऐसा करता रहे, तो स्थायी लाभ की प्राप्ति होती है।

५. व्यापार द्वारा धन - प्राप्ति—ॐ ह्लीं श्रीं क्रों श्रीं क्लीं श्रीलक्ष्मी मम गृहे धनं पूरय पूरय चिन्तां दूरय दूरय स्वाहा।

विधि : व्यापारी बन्धुओं को प्रातः उठते ही उक्त मन्त्र का २१६ बार श्रद्धा से 'जप' करना चाहिए। साथ ही व्यापार में लाभ के लिए विशेष प्रयत्न भी करता रहे।

▩ ▩ ▩

(१०)

कुछ सरल मन्त्र-प्रयोग

१. नौकरी-प्राप्ति-साधना

विश्व भरण-पोषण कर जोई, ताकर नाम भरत जस होई॥

विधि : नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। ऐसा ४१ दिनों तक करे। मन्त्र - जप प्रातः - समय श्रद्धा व विश्वास से करे। इससे आजीविका की प्राप्ति होती है। जब तक ध्येय की पूर्ति न हो, तब तक साधना करता रहे। 'जस' के स्थान पर 'अस' का पाठ भी मिलता है।

२. परीक्षा में सफलता हेतु साधना

मोहि सुधारहि सो सब भाँती, जासु कृपा नहि कृपा अघाती॥

विधि : उक्त मन्त्र का जप दीर्घ अवधि तक करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। फिर परीक्षा हेतु जाना हो, तो उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर घर से बाहर निकले। इससे परीक्षा में सफलता मिलती है।

३. त्रिविध कष्ट-निवारक साधना

दैहिक-दैविक-भौतिक तापा, राम-राज नहि काहुइ व्यापा ॥

विधि : तीनों प्रकार के कष्टों को दूर करने के लिए उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिए। इससे सब प्रकार की शान्ति-सुख मिलता है।

४. जीविका-प्राप्ति साधना----ॐ नमो आदेश गुरु को। धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड, राख लगाता गुरु गोरख-नाथ। आवन्ता-जावन्ता-धावन्ता हाँक देत, धार - धार मार - मार। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : शुक्ल-पक्ष की द्वितीया से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। मृग-चर्मासन के ऊपर बैठकर मन्त्र का जप करे। नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का जप कर खीर से १० आहुतियाँ अग्नि में दे। इससे आजीविका में कमी, आर्थिक अभाव आदि धीरे - धीरें दूर होते हैं। आलस्य छोड़कर यदि उद्यम करे, तो शीघ्र लाभ होता है।

५. उन्नति हेतु साधना----ॐ नमो भगवती त्रिलोचनं त्रिपुरं देवि अञ्जनीं मे कल्याणं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : पहले अञ्जनी देवी की मूर्ति की स्थापना करे। अथवा, भगवती काली या दुर्गा के मन्दिर में या चित्र के सामने जप करे। जप पश्चिम की ओर मुख कर ऊनी या कुश के आसन पर बैठकर करे। नित्य देवी-पूजन कर ११ या २१ दिनों तक जप करे। इससे नौकरी आदि में उन्नति होती है। आगे आप अपनी सामर्थ्य के अनुसार जप करें।

६. धन-प्राप्ति-साधना---जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं, यद्यपि ताहि कामना नाहीं। तिहि सुख सम्पति बिन ही बोलाए, धरम-शील पहँ जाहि सुभाए॥

विधि : प्रति-दिन प्रातः-काल उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। इससे धन की प्राप्ति होती है।

७. दरिद्रता-निवारक साधना----अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के, कामद धन-दारिद्र दवारि के। जे सकाम नर सुनहि जे गावहि। सुख-सम्पति नाना विधि पावहि॥

विधि : प्रति-दिन प्रातः-काल उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। इससे दरिद्रता मिटती है। मन्त्र-जप के साथ - साथ दरिद्रता मिटाने के लिए कुछ-न-कुछ काम-काज अवश्य करे।

८. अनुकूल बनाने की साधना----ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ श्रीं श्रीं हुँ फट् स्वाहा।

विधि : प्रायः राजकीय अधिकारियों आदि को अनुकूल बनाने की आवश्यकता होती है। साध्य व्यक्ति का ध्यान कर उक्त मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करे। इससे साध्य व्यक्ति अनुकूल होता है। एक मत है कि इस मन्त्र का जप अपने निवास में न कर किसी मन्दिर आदि में कर साध्य व्यक्ति के पास जाना चाहिए।

९. जरा-मृत्यु-निवारक साधना----ॐ हंसः सर्व-लोच-नानि बन्धय बन्धय देवी आज्ञापयति स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र 'हंस-बद्ध चेटक' का मन्त्र है। इस मन्त्र का जप साधक स्वयं सावधानी-पूर्वक बिना प्रमाद के रात्रि में करे। जब तक देवी भगवती प्रसन्न होकर जरा-मृत्यु-निवारक योग को प्रदान न करें, तब तक जप करता रहे। इससे सभी प्रकार की आपत्तियाँ समाप्त होती हैं।

१०. अप-मृत्यु-योग-निवारक साधना----ॐ जूं सः।

विधि : (१) नित्य प्रातः, दोपहर और सायं त्रि-काल सन्ध्या के समय उक्त मन्त्र का हजार बार जप करे। इससे जप - कर्त्ता का अप-मृत्यु-योग टल जाता है।

(२) प्रति-दिन या केवल शनिवार को साय-काल पीपल के नीचे धूप दीप-नैवेद्य आदि रखकर उक्त मन्त्र का एक हजार बार जप करे। इससे सभी प्रकार की आपत्तियों का निवारण होता है। जप-कर्त्ता के शत्रुओं का भी क्षय होता है।

११. खोए हुए वैभव को प्राप्त करने की साधना— ॐ ह्लां भाजते प्रयच्छ मे धनं स्वाहा।

विधि : पहले 'घृत और 'सरसों से उक्त मन्त्र द्वारा १००० आहुतियाँ दे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। बाद में इक्ष्वाकु - शेरडी के रस से उक्त मन्त्र पढ़ते हुए एक लाख आहुतियाँ दे। इससे खोए हुए वैभव की पुनः प्राप्ति होती है।

१२. बन्धन - मुक्ति - साधना----ॐ नमो हटेले कुमारी स्वाहा।

विधि : बन्धन में रहा हुआ बन्दी यदि स्वयं नित्य २ हजार बार उक्त मन्त्र का जप ७ दिनों तक करे, तो शीघ्र ही बन्धन - मुक्ति होती है। बाद में दुग्ध व घृत से दशांश होम करे और एक कुमारी को पञ्च-खाद्य वस्तुओं का भोजन करा दक्षिण देकर सन्तुष्ट करे। इससे बन्दी देवी प्रसन्न होती हैं।

१३. विद्या-प्राप्ति-साधना--ॐ ह्रीं वेद-मातृभ्यः स्वाहा।

विधि : शुभ मुहूर्त में या विशिष्ट योग में या जब साधक का चन्द्रमा बलवान् हो, तब उक्त साधना का आरम्भ करे। साधना हेतु कुल जप-संख्या २५ हजार कही गई है। यदि इससे ज्यादा जप किया जाए, तो कोई हानि नहीं। बाद में 'पञ्च-मेवा' से दशांश 'हवन' करे। इससे मन्त्र-सिद्धि होती है। विद्या-प्राप्ति के सभी विघ्न दूर होते हैं।

१४. त्रिकाल - ज्ञान - प्राप्ति - साधना—ॐ ह्रीं भानसे स्वप्नेश्वरी विचार्य विद्ये वषट वषट स्वाहा।

विधि : पवित्रावस्था में 'हविष्यान्न' ग्रहण करते हुए तथा यम-नियम का ध्यान रखते हुए उक्त मन्त्र का १०,००० जप करे। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। बाद में जब भूत-भविष्य-वर्तमान की शुभा-शुभ बातों को जानना हो, तब सायं इष्ट-देव की पूजा कर उक्त मन्त्र का यथा-शक्ति जप करे। इससे रात्रि में भूत - भविष्य और बर्तमान की सभी शुभाशुभ बातें सुविदित हो जाती हैं। यह साधना सूझ-बूझ से करनी चाहिए। अन्यथा स्वयं को भी हानि हो सकती है।

१५. कवित्व-शक्ति-प्राप्ति-साधना—ॐ ऐं हं ऐं हं वद् वद् स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का दस हजार या उससे अधिक जप करने से जप-कर्त्ता को काव्य-शक्ति प्राप्त होती है।

१६. स्वप्न द्वारा भविष्य जानने की साधना—ॐ स्वप्नावलोकिनी सिद्धि-लोचिनी स्वप्ने कथय-कथय स्वाहा।

विधि : पहले शाबर - विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में २७ बार उक्त मन्त्र का जप कर सो जाए। स्वप्न में देवी साधक को भविष्य की बातें बताती हैं। यह साधना भी पूर्ण मर्यादा में रहकर ही करनी चाहिए।

१७. वचन-सिद्धि साधना—(१) ॐ नमो लिगोंद भव रुद्र देहि मे वाचा सिद्धि पिता पर्वत-गते द्रां द्रीं द्रूं द्रं द्रौं द्रः।

विधि : अपना बाँयाँ हाथ अपने सिर पर रखकर उक्त मन्त्र का १ लाख जप करे। इससे वचन-सिद्धि होती है। 'वचन - सिद्धि' प्राप्त होने के बाद किसी को भी कटु वचन नहीं बोलना चाहिए। अन्यथा सिद्धि कार्य नहीं करती। साथ ही साधक को आवश्यकता से अधिक बोलना नहीं चाहिए।

(२) ॐ क्लीं खेचर्यै नमः।

विधि : उक्त मन्त्र का ६ लाख जप करने से वाक्-सिद्धि प्राप्त होती है। जप एकान्त में करना चाहिए।

(३) ॐ अन्तरीक्षाय स्वाहा।

विध : 'स्वाती - नक्षत्र' में बोरडी के वृक्ष की एक लकड़ी लाए। लकड़ी से अपने हाथ में रखने लायक एक टुकड़ा निकाले। उस टुकड़े को हाथ में रखकर उक्त मन्त्र का जप करे। इस प्रकार सतत जप करने से बचन-सिद्धि होती है। ध्यान रहे कि वचनों द्वारा अनुचित माँग न करे। माँगने के लिए सक्षम व्यक्ति के पास ही जाना चाहिए।

१८. विजय-प्राप्ति साधना—ॐ हुँ फट्।

विधि : उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर वाद - विवाद में पराजित कर जिसको अपने अनुकूल बनाना हो, उसके सामने जाए। इससे साध्य न केवल कार्यों में सहायता करता है, अपितु बातें भी मानता है। साध्य का नाम व चित्र अपने मन में अङ्कित कर जप करना चाहिए। बाद में उसके पास जाना चाहिए। इससे विरोध का तो शमन होता ही है, साथ ही इच्छानुसार कार्य पूर्ण होता है। अन्य मत के अनुसार उक्त मन्त्र का जप घर से बाहर कहीं अन्यत्र कर जाना चाहिए।

(११)

स्वप्न-विषयक मन्त्र

१. स्वप्न में उत्तर - प्राप्ति हेतु मन्त्र—(१) ॐ नमो मामाडे मछरे चिटकाय सस्वार्थ सिद्ध गिरे तरे मम सुपने दर्शाया कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : 'रात' में कनेर के फूल के ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार जप कर तकिए के नीचे रखकर सोए। ७ दिनों तक ऐसा करने पर स्वप्न में प्रश्नों का सही उत्तर मिलता है।

(२) ॐ नमो स्वप्न-मातङ्गिनी सत्य - भाषिणी स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा।

विधि : दिन में निराहार-निर्जल रहकर रात्रि में उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। रात्रि में भी न कुछ खाए, न पिए। मन्त्र-जप कर भूमि के ऊपर ही शयन करे। साधक के मन में जो प्रश्न होगा, उनका उत्तर उसे स्वप्न में मिल जाएगा।

(३) ॐ ह्लीं श्रीं ह्लां स्वप्नेश्वरी स्वप्ने कथय-कथय ह्लौं स्वाहा।

विधि : रात्रि में शयन करने से पहले उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। स्वप्न में यदि उत्तर पहली बार में न मिले, तब नित्य

उक्त मन्त्र की एक माला जप कर सोए। इससे कुछ ही दिनों में भविष्य की बातों का ज्ञान हो जाता है।

(४) ॐ नमः स्वप्न, चक्रेश्वरी स्वप्ने अवतर - अवतर गतं वर्तमानं कथय-कथय स्वाहा।

विधि : रात्रि के समय कम्बल के आसन पर उत्तराभिमुख बैठे। अपने सम्मुख कड़ुए तेल का दीपक जलाए और बताशे का भोग लगाए। प्रातः-काल भोग को बच्चों में बाँटे। इस प्रकार कुल २१ हजार जप करे। जब २१,००० जप हो जाएगा, तब स्वप्न में आश्चर्य-जनक रूप से भूत एवं वर्तमान का ज्ञान होने लगेगा। कभी - कभी भविष्य का ज्ञान भी होगा। स्वप्न में प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे।

(५) ॐ नमो भगवति श्रुत-देवी हंस-वाहिनी, त्रिकाल-निमित्त-प्रकाशिनी, सर्व-कार्य-प्रकाशिनी। सत् भावे सत् भाषे, असत् का प्रहार करे। ॐ नमो श्रुत देवी स्वाहा।

विधि : 'नवरात्र' में उक्त मन्त्र का नित्य एक माला जप करे। इससे साधक के कान में प्रश्नों के उत्तर स्वतः सुनाई देते हैं।

(६) ॐ ह्रीं स्व-पुरावाहित कालि स्वप्ने कथयामुक-स्यामुकं देहि क्रीं स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का १०८ बार जप ४ वर्ष तक निरन्तर करे। इससे स्वप्न में साधक को कार्य-सिद्धि दिखती है। प्रश्नों, शुभा-शुभ का कथन-उत्तर मिलता है।

(७) ॐ ह्रीं पदमावति देवी त्रैलोक्य वार्ता कथय कथय स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का २ वर्ष तक जप करने से सभी गुप्त वार्ताओं और गुप्त धनादि का ज्ञान होता है। जप-विधि सरल है। मन्त्र को रात्रि में सोने से पहले एक माला प्रति-दिन जपे।

विशेष : उक्त मन्त्रों के विधि-वत् जप द्वारा सभी शुभ कार्यों को सम्पन्न किया जा सकता है। बाजार के आंकड़े या अङ्क आदि का उत्तर इन मन्त्रों द्वारा नहीं मिलता और इसके लिए इन मन्त्रों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

२. दुःस्वप्न - निवारक मन्त्र—

(१) ॐ वाराणस्यां दक्षिण-कोणें, कुक्कुटो-नाम ब्राह्मणः ।
तस्य स्मरण मात्रेण, दुःस्वप्नो शुभं भवेत् ।।

विधि : रात्रि में बुरा या अशुभ स्वप्न आया हो, तो प्रातः-काल उक्त मन्त्र का यथा-शक्ति जप कर अपनी हथेली के ऊपर फूंक मारे और हथेली को अपने मुँह पर फिराए। इससे शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गति - नाशिन्यै महा - मायायै स्वाहा ।

विधि : स्नानादि कर अपने इष्ट-देव के सामने धूप-दीप रख-कर उक्त मन्त्र का १० बार जप करने से अशुभ स्वप्न का भी शुभ फल मिलता है। यह मन्त्र मेरे द्वारा अनुभूत है।

विशेष : दुःस्वप्नों की निवृत्ति हेतु 'गजेन्द्र - मोक्ष' जैसे सिद्ध स्तोत्रों का पाठ भी लाभ-दायक होता है।

(१२)

विविध देवी-देवता मन्त्र

१. श्रीकालिका मन्त्र—श्रीकालिका एलक मेलक। अढन्त देव देवाने संयद मसाने। ऐते बाँध बश कर हाथ हथकड़ी। पाँव पै कड़ी सवा मन का तङ्ग। ऊपर वज्र पयान। तेरी शक्ति, -गुरू की भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : 'सोमवार' से साधना प्रारम्भ करे। ३० दिनों तक नित्य १००० जप करे। साधना भगवती काली के मन्दिर में अथवा घर में भगवती काली के चित्र के सामने करे। ऊन का 'आसन' रखे। रात्रि १० बजे के बाद जप प्रारम्भ करे। दक्षिण की ओर मुँह कर

बैठे। तेल का दीपक जलाए और सुगन्ध-मय धूप करे। 'मद्य' भी रखे। जप के बाद दशांश 'होम' करे और 'मद्य' अर्पित करे। इस प्रकार ३० दिन करे। इससे मन्त्र की सिद्धि हो जाएगी। माता जी की कृपा का अनुभव होगा। बाद में जब कोई कार्य करना या करवाना हो, तब घर से बाहर निकलने से पहले उक्त मन्त्र द्वारा जल को अभिमन्त्रित कर जल के छींटे अपने शरीर के ऊपर मारे और उक्त 'होम' की भस्म का 'तिलक' लगा कर घर से बाहर जाए। इससे मन में चिन्तित कार्य पूरे हो जाते हैं।

२. श्रीहनुमान-मन्त्र—(१) ऐ हनुमान की मूरत ! जल्द हाजिर बहक रामचन्द्र जी महाराजा !

विधि : धरती पर एक घेरा बनाए। स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन कर सुखासन-पूर्वक बैठे। सिन्दूर का 'तिलक' लगाए। धूप-दीप अर्पित कर नैवेद्य चढ़ाए। नैवेद्य में 'इलायची' और 'लौंग' चढ़ाए। ऐसा ४० दिनों तक नित्य करे। नित्य अर्ध-रात्रि के बाद १ हजार जप करे। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। फिर जब कोई कार्य सिद्ध करना हो, तो हनुमान जी की सहायता - प्राप्ति हेतु प्रार्थना कर ब्रह्मचर्य-व्रत के साथ जप प्रारम्भ करे। इससे थोड़े ही दिनों में मन-चाहा कार्य पूरा होगा। प्रति - दिन हनुमान जी का दर्शन करता रहे और गुलाब के लाल फूल, आक के फूल की माला चढ़ाए। तिल के तेल का 'दीप' जलाए और 'धूप' करे।

(२) श्री हनुमते नमः।

विधि : 'ग्रहण'-काल में उक्त मन्त्र का १२५ माला जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध होगा। फिर नित्य घर से बाहर निकलते समय पहले १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। रास्ते में भी कार्य का चिन्तन करते हुए मन्त्र का स्मरण करे। इससे मन्त्र-कर्ता जहाँ भी जाएगा, वहाँ उसको सभी प्रकार की सानुकूलताएँ मिलेंगी और कार्य सिद्ध होगा। अन्य मत से 'ॐ हं हनुमते नमः।'—ऐसा मन्त्र भी है। दोनों की विधि एक ही है।

(३) ॐ नमो हनुमते भय - भञ्जनाय सुखं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन आवश्यक है। १० दिनों तक नित्य ११ माला उक्त मन्त्र का जप करे। धूप-दीप और यथा-शक्ति नैवेद्य चढ़ाकर जप करे। एक बार ही भोजन करे। किसी मन्दिर में हनुमान जी का दर्शन नित्य करे। मन्दिर की भी सेवा करे। इस प्रकार सतत जप करने से जप-कर्त्ता की सभी आपत्तियाँ दूर होंगी। जप-कर्त्ता को यदि किसी भी प्रकार का भय या डर होगा, तो वह दूर होगा। जप - कर्त्ता की सभी शुभ कामनाएँ पूरी होंगी।

३. श्रीगणेश मन्त्र—ॐ नमो सिद्ध - विनाग्रकाय सर्व-कार्य - कर्त्ते सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य - करणाय सर्व-जन-सर्व-स्त्री-पुरुष-आकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा।

विधि : नित्य - कर्म से निवृत्त होकर उक्त मन्त्र का निश्चित संख्या में नित्य १ से १० माला 'जप' करे। बाद में जब घर से निकले, तब अपने अभीष्ट कार्य का चिन्तन करे। इससे अभीष्ट कार्य सुगमता से पूरे हो जाते हैं।

४. मनोकामना-पूरक मन्त्र—(१) ॐ ह्रीं पूर्वदया ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि : 'ग्रहण' समय उक्त मन्त्र का १२,५०० 'जप' करे। बाद में जब समय मिले, तब रक्त कनेर के पुष्प, घृत और मधु से दशांश 'होम', तर्पण, मार्जन ब्रह्म-भोज इत्यादि करे। इससे प्रयोग-कर्त्ता की सभी शुभ मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धि-करी ह्रीं नमः।

विधि : किसी भी रक्त पुष्प को हाथ में लेकर उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और जल में पधराए। इस तरह १ लाख फूल को एक-एक कर अभिमन्त्रित कर जल में पधराए। इससे प्रयोग-कर्त्ता की सभी शुभ मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। यह प्रयोग फूलों की पूरी व्यवस्था करके करे। कम-से-कम १० हजार पुष्पों द्वारा भी 'प्रयोग' कर लाभ देखा जा सकता है।

(३) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं प्लं कमल - सौन्दर्यं नमः विस्तर विस्तर स्वाहा ।

विधि : धूप-दीप के साथ उक्त मन्त्र का १ लाख 'जप' करे। इससे सभी प्रकार की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

(४) ॐ आं अं स्वाहा ।

विधि : (१) नित्य उक्त मन्त्र का १० माला 'जप' करे या १००० बार 'जप' करे। इससे मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं और धन-धान्य की वृद्धि होती है। जब १ लाख 'जप' पूरा हो जाए, तब दशांश 'होम' करे। बाद में फिर इसी प्रकार करे। जप - काल में पवित्रता से रहे।

(२) पहले पाँच लाख 'जप' करे। बाद में नित्य १ से १० माला 'जप' करता रहे। इससे सभी प्रकार की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

(५) हे माँ काली ! कलकत्तेवाली, तेरे द्वार खड़ा एक स्वाली। मेरी माँ ! ज्योताबाली, मेरी अधूरी अभिलाषा, तेरे बिन नहीं पूरी होनेवाली। कृपा - दृष्टि करो—आशा पूरी करो। तेरा पुजारी करे वन्दना— सच्चे मन से। सब दुःख हरो, सब सङ्कट हरो। इच्छाएँ मेरी सब पूरी करो तुम। हे माँ ज्योतावाली—माँ कलकत्तावाली।

विधि : प्रति-दिन १ माला 'जप' करे। अथवा, १२५ दिन तक नित्य १०८ बार 'जप' करे। एक अनपढ़ कव्वाल ने बताया था कि उक्त मन्त्र का पाठ कर कार्य पर जाने से कार्य पूरे होते हैं।

(६) ॐ नमो भगवती रक्त-पीठं नमः ।

विधि : 'नवरात्र' में एक लकड़ी के पटरे के ऊपर एक नया रक्त वस्त्र बिछाए। रक्त वस्त्र बहुत बड़ा या छोटा नहीं होना चाहिए। बाद में पूजा-स्थान में धूप-दीप कर 'नवरात्र' के नौ दिनों तक नित्य १० माला 'जप' करे। 'जप' के समय रक्त वस्त्र पर अपना ध्यान केन्द्रित करे। 'जप' पूरा कर १०८ आहुतियाँ दे। हवन-कार्य में प्रचलित होम-द्रव्य का उपयोग करे। नौ दिनों तक नित्य एक ब्राह्मण को

फलाहार कराए और दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे। इससे मन्त्र-सिद्धि होती है। रक्त वस्त्र को सुरक्षित रखे और दैनिक पूजा में उसके ऊपर नित्य १०८ बार मन्त्र 'जप' कर उसे मस्तक और हृदय से लगाए। इससे सभी सात्त्विक मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। 'होम' करते समय 'नमः' के स्थान पर 'स्वाहा' शब्द बोले। नौ दिन यम-नियम से रहे।

(७) ॐ हर त्रिपुर हर, भवानी बाला, राजा मोहिनी, सर्व-शत्रु-विध्वंसिनी ! मम चिन्तित फलं देहि-देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।

विधि : शुभ-योग या दीपावली, दशहरा, नवरात्र में भगवती दुर्गा का पूजन कर उक्त मन्त्र का अनुष्ठान प्रारम्भ करे। नित्य १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे।

(८) अन्तरीक्षाय स्वाहा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को सवा लाख 'जप' कर सिद्ध करे। बाद में स्वाति नक्षत्र में बेर की जड़ को लाकर उसे १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर धारण करे। एक दूसरे मत से सवा लाख 'जप' किए बिना ही उक्त 'प्रयोग' को किया जा सकता है।

(९) स्फ्रें स्फ्रें ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रीं क्लीं हूँ हुँ सां सीं सूं सैं सौं सः छां छीं छूं छैं छौं छः ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि : एक वर्ष तक सङ्कल्प कर प्रति - दिन १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इससे जप-कर्त्ता की सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

५. धन - धान्य की वृद्धि का मन्त्र—ॐ नमो अनादि-पुरुष ! अन्न ही राखो ठाम, कोठार-भण्डार की ताला-कुञ्जी खोल, तो अन्न दो, रिचक दो, चून दो, अन्न-चूनरी पूरन करो। चौक दे उन मेल सुहाली आग मेल।

विधि : पहले पर्व-काल में उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में शुभ-योग से २७ दिनों तक नित्य उक्त मन्त्र को १०८ बार जपे, तो धन-धान्य की वृद्धि होती है। ध्येय - प्राप्ति तक मन्त्र का 'जप' करता रहे।

६. अक्षय भण्डार का मन्त्र—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वामे नमः ।

विधि : 'दीपावली' की रात्रि में देवी को सिन्दूर लगाकर धूप-दीप-नैवेद्य चढ़ाए । फिर उक्त मन्त्र का २०२८ बार 'जप' करे । अच्छे-अच्छे फूलों से देवी का पूजन करे । इससे देवी प्रसन्न होती हैं और उनकी कृपा से भण्डार अक्षय रहता है ।

७. अन्न - वस्त्रादि प्राप्त करने हेतु, उच्छिष्ट - यक्षिणी का मन्त्र—ॐ जगत्-त्रय-मातृके पद्मिनि ! मे स्वाहा ।

विधि : उच्छिष्ट अर्थात् जूठी अवस्था में उक्त मन्त्र का २० हजार 'जप' करने से वामा देवी प्रसन्न होती हैं और प्रयोग-कर्त्ता को अन्न-वस्त्र इत्यादि से परिपूर्ण करती हैं ।

८. मन-चाही वस्तु प्राप्त करने का मन्त्र—ॐ ह्रूं ह्रां काली-करालिनी ! ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट् ।

विधि : पहले साधक रात्रि में श्मशान में जाए और वहाँ उक्त मन्त्र को १०८ बार जपे । 'जप' के बाद अजा - मांस और लाल फूल की 'बलि' दे । इस तरह ७ दिनों तक करे और 'बलि' दे । इससे कपालिनी देवी सिद्ध होती हैं और साधक को इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है । शर्त यह है कि साधक को सभी वस्तुएँ गुरु - जनों, ब्राह्मण, अग्नि को दे देनी चाहिए । अथवा, जो मिले, उस सबको बाँट देना चाहिए । यदि साधक वस्तुओं का सञ्चय करेगा या छिपाएगा, तो देवी की कृपा बन्द हो जाती है ।

९. ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ६५; भाग २, पृष्ठ ४०; भाग ४, पृष्ठ ५८ पर यह मन्त्र प्रकाशित हुआ है । यहाँ यह मन्त्र पाठ व विधि-भेद सहित प्रस्तुत है—

ॐ नमो आदेश गुरु को, गणपति वीर बसे मसान । जो-जो माँगूँ, सो-सो आन । पाँच लाडू, सिर सिन्दूर । हाटी की माटी, मसान की खेप । ऋद्धि - सिद्धि मेरे पास

लाओ। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। यथा—'काल-रात्रि' या 'काली चौदस' या 'रूप-चौदस' की रात्रि में साधक अपने हाथ से बनाए हुए पाँच लड्डू और थोड़ा-सा सिन्दूर लेकर गाँव के बाहर कुएँ के पास जाए। कुएँ के जल को देखते हुए उक्त मन्त्र का १००० 'जप' करे। 'जप' के बाद सिन्दूर को लड्डू के ऊपर लगा कर कुएँ के जल में विसर्जित करे। इससे मन्त्र की सिद्धि होगी।

फिर आवश्यकता पड़ने पर 'प्रयोग' करे। यथा—जिस भोज-सामग्री को अक्षय रखना हो, उसमें से ५ लड्डू लेकर, उसमें सिन्दूर लगाकर और एक छोटा 'कलश' एवं उचित माप की 'रस्सी' लेकर साधक कुएँ के पास जाए। एक लड्डू को 'कलश' में डालकर रस्सी बाँधकर 'कलश' को धीरे-धीरे कुएँ में उतारे। फिर 'कलश' को जल भर कर बाहर निकाले। ऐसी सावधानी रखे कि 'कलश' में रखा हुआ लड्डू 'कलश' में ही रहे और 'कलश' को कुएँ के अन्दर डाले। तब लड्डू व जल भरा 'कलश' को जहाँ भोज हो रहा हो, वहाँ लेकर जाए और स्वच्छ स्थान में विधि-वत् पूजन कर रखे। शेष बचे लड्डुओं को चढ़ाए। भोज-सामग्री की सभी चीजें एक थैली में रखकर ऊपर नई धोती या वस्त्र से ढाँके। पहली पंक्ति में ब्राह्मणों को बिठाकर भोजन-कार्य चालू करे। बाद में आमन्त्रितों को भाजन के लिए बुलाए। आवश्यकतानुसार सामग्री निकालता रहे और खिलाता रहे। सामग्री अक्षय रहेगी। शङ्का न करे और सामग्री के ऊपर जो कपड़ा बिछाया है, उसे न हटाए। युक्ति से सामग्री निकाल-निकाल कर प्रसन्न-मन से खिलाए। यदि जो मिष्ठान्न बनाया है, उसमें लड्डू न हो, तो जो मिष्ठान्न हो, उसी को पाँच संख्या में लेना चाहिए।

(१३)

विशेष मन्त्र-प्रयोग

१. हमजाद अथवा छाया-पुरुष की साधना

आगम - निगम की खबर लगावे, सोऽहं पारब्रह्म को नमस्कार ।

विधि : ४० दिनों तक नित्य २५० बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इससे मन्त्र की सिद्धि होगी। बाद में नित्य निश्चित संख्या में 'जप' करे। इससे साधक को सभी बातों का पूर्व-ज्ञान होगा। दूर की घटनाओं का ज्ञान भी साधक को पहले से हो जाता है।

विशेष : 'ॐ ब्रह्मणे नमः' अथवा **'ॐ पर-ब्रह्मणे नमः'**— ऐसे मन्त्रों से 'छाया - पुरुष' की साधना की जाती है। इसमें 'सूर्य-प्रकाश' या 'चन्द्र-प्रकाश' के नीचे खड़े होकर या चलते-चलते अपनी ही छाया को देखने से साधक को भूत-वर्तमान-भविष्य का ज्ञान हो जाता है। 'मन्त्र' में 'आगम' - शब्द के स्थान पर 'अगम' - शब्द भी देखने को मिलता है। उपर्युक्त 'हमजाद का प्रयोग' सरल व निर्दोष हैं, फिर भी इसकी साधना योग्य व्यक्ति से परामर्श लेकर ही करनी चाहिए।

२. अल्लाह की मेहरबानी अथवा हजरत रसूलिल्लाह को ख्वाब में देखने का मन्त्र—अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदीं व अला आले मुहम्मदीं नबी यील उम्मी !

विधि : उक्त मन्त्र की साधना हेतु प्रत्येक समय पाक - साफ रहे। झूठ न बोले। हुक्का-बीड़ी से परहेज करे। स्त्री-समागम से बचे। किसी का भी न तो बुरा करे न सोचे। ४० दिनों तक नित्य ३१२५ बार उक्त मन्त्र का और 'दरुद शरीफ' का पाठ कर पाठ करनेवाले स्थान पर ही सो जाए। इससे इन्सा अल्वाह्न की जियारत ख्वाब में होती है। 'हजरत मुहम्मद स्वल्लाहो अलैहे वसल्लम' का प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए प्रबल भक्ति करनी चाहिए। एक बार स्वप्न में दर्शन न हो, तो दुबारा-तिबारा उक्त प्रयोग करना चाहिए। कुछ लोगों के

अनुसार उक्त प्रयोग यदि मस्जिद में करे, तो अति उत्तम परिणाम होते हैं। मन्त्र-जप रात्रि में ही करे।

३. योजन-गन्धा योगिनी का मन्त्र

जोजन गन्धा जोगिनी, ऋद्धि-सिद्धि में भरपूर।
मैं आयो तोय जाँचणे, करजो कारज जरूर॥

विधि : पहले सवा किलो गेहूँ का आटा, अढ़ाई पाव घी एवं अढ़ाई पाव खाण्ड या मिश्री या शर्करा लेकर एक कंसार बनाए। वहाँ उक्त मन्त्र को बोलते हुए कंसार चींटियों को खिलाए। मन्त्र का स्मरण करते हुए और कंसार खिलाते हुए यथा-शक्ति परिभ्रमण करे। जब थक जाए, तो वृक्ष के नीचे विश्राम करे। वहाँ निद्रावस्था प्राप्त होने पर स्वप्न में एकाकी पुरुष अथवा स्त्री दिखेगी। स्वप्न में जो स्त्री या पुरुष उपस्थित होगी, वह प्रश्नों का उत्तर देगी। प्रयोग-काल में निराहार व्रत रखे। इस तरह कई दिनों तक लगातार करे, तो प्रयोगकार को मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति अवश्य होती है।

४. झोटिङ्ग का मन्त्र—ॐ नमो देवी दे दे खिलियाँ अस मासा सजल सेन्हे जाउती बोटिङ्गा पुढ़े साङ्गतिले तें घे मजदेनें देसि तरि थारी बहनीची आनही देवा गुरुची सिद्धि स्वाहा।

विधि : धोबी-कन्या को पूजा-स्थान में बिंठाए तथा बकरे के चर्म से बने आसन के ऊपर बैठे और १००० बार उक्त मन्त्र का जप करे। बाद में दशांश पञ्च-खाद्य से हवन करे। इस तरह सात दिनों तक करे। हवन की 'विभूति' को सुरक्षित रखे। विभूति को जिसके ऊपर डाला जाएगा, उसका 'वशीकरण' होगा। विभूति को ताबीज में भर कर गले में धारण करने से साधक को विविध प्रकार की वस्तुएँ मिलती हैं।

५. वीरु चेटक का मन्त्र—ॐ श्रीं काक-कमल-वर्धनं सर्व-कार्य सर्व-अर्थान् देहि देहि सर्व-कार्य कुरु परिचर्य्य सर्व-

सिद्धि पादुकाया हं क्षं श्रीं द्वादशान्न - दायिने सर्व-सिद्धि-प्रदाय स्वाहा ।

विधि : पहले उक्त मन्त्र का एक लाख जप करे । बाद में गेहूँ-चने से दशांश हवन करे । इससे वीरु-चेटक प्रसन्न होते हैं । बाद में साधक जब उन्हें बुलाएगा, तब वे आएँगे और साधक को उसकी इच्छानुसार अनेक वस्तुएं प्रदान करते हैं ।

६. धान्य-चेटक का मन्त्र—ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ।

विधि : पहले उक्त मन्त्र का ४० हजार जप करे। बाद में गेहूँ से दशांश होम करे । इससे धान्य-वृद्धि होती है ।

७. धनदा-साधना—ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः ।

विधि : साधक का चन्द्र जब बलवान हो, तब प्रयोग प्रारम्भ करे। कुल एक लाख पचीस हजार जप करे। इससे धन - प्राप्ति होती है ।

८. वैताल-साधना—ॐ क्षां क्षां ह्रीं ह्रीं फट् ।

विधि : श्मशान में जाकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से वैताल-सिद्धि होती है ।

९. रुद्र - साधना----ॐ नमो भगवते रुद्राय हुं फट् स्वाहा ।

विधि . धतूरा, घृत और कसुम्बा—तीनों को मिला कर दस हजार बार उक्त मन्त्र से होम करे। इससे भगवान् रुद्र प्रसन्न होते हैं और वरदान देते हैं ।

१०. गणेश-साधना----ॐ गं नमः ।

विधि : उन्नति हेतु युवा - वर्ग को उक्त त्र्यक्षर मन्त्र का जप करना चाहिए । तीन लाख जप विधि-वत् करने से तीन प्रकार के विशेष कार्य बिना विघ्न-बाधा के सम्पन्न होते हैं। यथा—(१) अविवाहित को पत्नी-लाभ, (२) बुद्धि का विकास और (३) अर्थ-लाभ ।

कुम्हार के यहाँ से मिट्टी लाए । मिट्टी से भगवान् श्रीगणेश की मूर्ति बनाए । फिर पूजा-स्थान में एक लकड़ी के पटरे के ऊपर नया

लाल वस्त्र बिछा कर उक्त मूर्ति को स्थापित करे। मूर्ति का पञ्चोपचारों से पूजन कर उक्त मन्त्र का १००० बार जप करे। ऐसा ७ दिनों तक करे। इससे जप-कर्त्ता को शान्ति, पत्नी-लाभ, धन-लाभ व बुद्धि-लाभ होता है।

११. कर्ण - पिशाच की साधना----(१) ॐ अरविन्दे स्वाहा।

विधि : देवालय या शिवालय में बैठकर उक्त मन्त्र का १०० बार या दस माला जप करे। इस प्रकार नित्य जप करने से बाद में मन्त्र-सिद्धि होने पर साधक को मन - चाहे प्रश्नों के उत्तर कानों में सुनाई देते हैं।

(२) ॐ नमो भगवते रुद्राय कर्ण-पिशाचाय स्वाहा।

विधि : पुष्य-नक्षत्र में कड़वी तुम्बड़ी और सर्पाक्षी की जड़ ग्रहण करे। दोनों को रक्त सूत के डोरे में बाँध कर मस्तक पर रखे और उक्त मन्त्र का सतत जप करे। इस तरह कुल १२,५०० जप करे। इससे साधक को मन-चाहे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते हैं।

१२. कर्ण-पिशाच्चिनी की साधना---ॐ ह्लीं कर्ण-पिशाचिनी मे कर्णे कथय-कथय हूँ फट् स्वाहा।

विधि : सूर्यास्त के बाद एक लकड़ी के पटरे पर रक्त वस्त्र बिछा कर उसके ऊपर सरसों के तेल का अखण्ड दीपक जलाकर अगर-बत्ती या धूप करे। फिर उक्त मन्त्र का १२,५०० जप करे। जप हेतु स्फटिक की माला व ऊन का आसन रखे। ऊनी धोती या कम्बल पहने। इससे शरीर में कुछ चटपटी होगी। इसके लिए जलते दिए में से ही थोड़ा-सा गरम तेल लेकर उसे लगाए। चटपटी बन्द हो जाएगी। यदि कमरे की दीवालों के ऊपर अच्छे या बुरे दृश्य देखने को मिलें, तो उनकी ओर ध्यान न दे। मन्त्र का जप पूरा होने पर कुमारियों को यथा - शक्ति वस्त्रादि मिष्ठ - भोजन देकर सन्तुष्ट करे। इस साधना से साधक के मन में जो भी प्रश्न होते हैं, उनके उत्तर मन में ही मिलते हैं। कभी-कभी कान में भी उत्तर सुनाई देते

हैं। आनेवाले दिनों में क्या-क्या होगा आदि बातें साधक को ज्ञात होती हैं।

विशेष सूचना : उक्त साधनाएँ वैसे तो निर्दोष हैं, किन्तु यदि कोई इन साधनाओं का दुरुपयोग करता है, तो उसे कष्ट उठाना पड़ता है। संक्षेप में सदुपयोग करनेवालों को ही उक्त साधनाएँ लाभ-दायक हैं। इन साधनाओं के दुरुपयोग से साधक का कुल-नाश, ऋद्धि-सिद्धि का नाश होता है। दुरुपयोग होने पर क्षमा - प्रार्थना का भी कोई असर नहीं होता। अतः उक्त साधनाएँ दुर्भावना से कदापि न करे।

(१४)

श्रीभैरव-मन्त्र

१. श्रीभैरव-जञ्जीरा

शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग २, पृष्ठ ८७; भाग ५, पृष्ठ ७३; भाग ६, पृष्ठ २३; भाग ७, पृष्ठ १०३; भाग ८, पृष्ठ ८७ में यह जञ्जीरा प्रकाशित हुआ है। पाठ व विधि-भेद-सहित वही यहाँ पुनः प्रस्तुत है।—लेखक]

ॐ गुरु जी ! काला भैरूँ कपिला केश, काना मदरा भगवाँ भेष। मार-मार काली-पुत्र ! बारह कोष की मार। भूतां हात कलेजी खूँहा गेडिया, जहाँ जाऊँ भैरूँ साथ। बारह कोष की रिद्धि ल्यावो, चोबीस कोष की सिद्धि ल्यावो। सूती होय तो जगाय ल्यावो, बैठा होय तो उठाय ल्यावो। अनन्त केसर की भारी ल्यावो, गौरा-पार्वती की बिछिया ल्यावो। गेल्याँ की रस्तान मोह, कुवे की पणिहारी मोह। दुकान बैठा बाणिया मोह, घर बैठी बणियानी मोह। राजा की रजवाड़ मोह, महिला बैठी रानी मोह। डाकिनी को, शाकिनी को, भूतिनी को, पलीतनी को, ओपरी को, पंराई

को, लाग कूँ, लपट कूँ, धूम कूँ, धक्का कूँ, पलीया कूँ, चौड कूँ, चौगट कूँ, काचा कूँ, कलवा कूँ, भूत कूँ, पलीत कूँ, जिन कूँ, राक्षस कूँ, बैरियों से बरी कर दे। नजरा जड़ दे ताला। इत्ता भैरव नहीं करे, तो पिता महा-देव की जटा तोड़ तागड़ी करे। माता पार्वती की चीर फाड़ लँगोट करे। चल डाकिनी-शाकिनी, चौडूँ मैला बाकरा, देस्यु मद की धार। भरी सभा में द्यूँ आने में कहा लगाई बार। खप्पर में खाय, मसान में लोटे। ऐसे काला भैरूँ की कुण पूजा मेटें ? राजा मेटे राज से जाय। प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय। जोगी मेटे ध्यान से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र का अनुष्ठान शनि या रवि से प्रारम्भ करे। पत्थर का तीन कोनेवाला एक टुकड़ा लेकर उसको अपने सामने स्थापित करे। उसके ऊपर तेल व सिन्दूर का लेपन करे। पान और नारियल भेट में चढ़ाए। नित्य सरसों के तेल का 'दीपक जलाए। अखण्ड दीपक रखे तो उत्तम। नित्य २१ बार उक्त मन्त्र का जप करे। ऐसा २१ या ४१ दिनों तक करे। इससे मन्त्र - सिद्धि होगी। जप के बाद प्रति-दिन छार, छबीला, कपूर, केशर और लौंग की आहुति दे। बाकला-बाटी का भोग दे। पान - सुपारी भी दे। जब भैरव जी दर्शन दें, तो भयभीत न होए। भक्ति-भाव से उन्हें प्रणाम कर मांस-मद्य की बलि देनी चाहिए। यदि मांस - मद्य की बलि देना सम्भव न हो, तो उड़द के बने पकौड़े, बेसन के लड्डू तथा गुड़ मिला हुआ दूध अर्पित करे। इस मन्त्र द्वारा मन्त्र में वर्णित सभी कार्य पूरे होते हैं।

२. भैरव-कृपा-प्राप्ति मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग १, पृष्ठ ५५; भाग ४, पृष्ठ ७५, भाग ७, पृष्ठ ९० में प्रस्तुत मन्त्र प्रकाशित हो चुका है। विधि - भेद, पाठ-भेद सहित यह यहाँ पुनः प्रस्तुत है।— लेखक]

ॐ काली, कङ्काली, महा - काली के पुत्र कङ्काल-भैरव ! हुक्मे हाजिर रहे। मेरा भेजा काल करै, मेरा भेजा रक्षा करै। आन बाँधूँ, बान बाधूँ। चलते फूल में जाए, कोठे जी पडै। थर-थर काँपै, हल-हल हलै। गिरि-गिरि परै, उठ-उठ भगै, बक-बक बकै। मेरा भेजा सवा घडी, सवा पहर, सवा दिन, सवा मास, सवा बरस को बावला न करै, तौ माता काली की शैया पै पग धरै। वाचा चूकै, तो उमा सूखै। वाचा छोड़, कुवाचा करै, धोबी की नाद चमार के कूंड में परै। मेरा भेजा बावला न करै, तो रुद्र के नेत्र के आग की ज्वाला कठै। सिर की लटा टूट भूमि में गिरै, माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े। बिना हुकुम नहीं मारना हो काली के पुत्र कङ्काल-भैरव ! फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच। सत्य नाम, आदेश गुरु को !

विधि : 'काल-रात्रि' या 'सूर्य-ग्रहण' की रात्रि में सिद्ध करे। त्रि-खूंटा चौका लगा कर दक्षिण की ओर मुँह कर बैठे तथा एक सहस्र जप करे। बाद में लाल कनेर के पुष्प, रक्त सिन्दूर, लौंग का जोड़ा और चौ-मुखा दीपक जला कर १०० आहुतियों से हवन करे। यदि भयङ्कर-रूप में भैरव जी आएँ, तो उनसे डरे नहीं और उनको लाल पुष्पों की माला पहनाए तथा लड्डू रखे। ऐसा करने से भैरव जी प्रसन्न होते हैं और वर माँगने के लिए कहेंगे। ऐसे समय में साधक को उनसे उनकी कृपा-प्राप्ति का वर माँगना चाहिए। भैरव जी की कृपा से साधक की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं। भैरव-साधना में अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए, साथ ही साधना का अहङ्कार भी नहीं करना चाहिए।

३. श्रीभैरव-सिद्धि मन्त्र—ॐ नमो काला-गोरा क्षेत्र-पाल ! बामं हाथं कान्ति, जीवन हाथ कृपाल। ॐ गन्ती सूरज थम्भ प्रातः-सायं रथभं जलतो विसार शर थम्भ।

कुसी चाल, पाषान चाल, शिला चाल हो चाली, न चले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिए। चोखा मन्त्र, ऐसा कुनी अब नार हसही।

विधि : उक्त मन्त्र का एक लाख जप तथा दशांश होम करने से मन्त्र सिद्ध होता है। प्रति-दिन प्रातः-काल पवित्रावस्था में यथा-विधि पूजन इत्यादि कर यथा-शक्ति जप करना चाहिए। जप के बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए भैरव जी को नमस्कार करना चाहिए। यथा—**ह्रीं ह्रों नमः**। इस प्रकार साधना करने से भैरव जी सिद्ध होते हैं और साधक की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।

४. श्रीभैरव-चेटक मन्त्र—ॐ नमो भैरवाय स्वाहा।

विधि : उक्त नवाक्षर मन्त्र का कुल ४० हजार जप कर गो-धूल से दशांश हवन करे। १८ दिनों तक इस तरह हवन करने से भैरव जी प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा से सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

५. भैरव जी की चौकी मूकने का मन्त्र—चेत सूना ज्ञान, औधी खोपडी मरघटियां मसान, बाँध दे बाबा भैरों की आन।

विधि : उक्त चौकी मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर एक घेरा खींचे, तो किसी भी प्रकार का डर नहीं रहता। स्व-रक्षा और दूसरों द्वारा किए गए अभिचार कर्म के लिए यह उपयोगी मन्त्र है।

६. अरिष्ट-निवारक-भैरव मन्त्र—ॐ क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र का दस हजार जप करने से अरिष्टों की शान्ति होती है। शान्ति-करन सम्बन्धी यह उत्तम मन्त्र है।

७. भय-निवारक भैरव मन्त्र—ॐ ह्रीं भैरव - भैरव भयकर-हर मां, रक्ष-रक्ष हुँ फट् स्वाहा।

विधि : ५ हजार जप से उक्त मन्त्र की सिद्धि होती है। बाद में जब किसी भी प्रकार का भय हो, तब उक्त मन्त्र का जप करे। इससे भय दूर होता है।

८. शिशु-बाधा-निवारक भैरव मन्त्र—श्रीभैरवाय वं वं वं ह्रां क्षरौं नमः।

विधि : ५ वर्ष से कम उम्रवाले बच्चों की सुरक्षा के लिए उक्त मन्त्र अमोघ है। रोग, बाधा, टोना या टोटका आदि से पीड़ित बच्चों को बलाओं से बचाने के लिए बच्चे की माँ के बाँएँ पैर के अँगूठे को एक छोटे ताम्र-पत्र में रखवाकर धोए। धोए हुए जल के ऊपर ११० बार उक्त मन्त्र का जप कर उसे अभिमन्त्रित करे। इस अभिमन्त्रित जल से उक्त मन्त्र का जप करते हुए बच्चे को कुश या पान के पत्ते से छींटें मारे। इससे बच्चा स्वस्थ हो जाता है। यदि एक बार में लाभ न हो, तो ऐसा ३ या ७ या ६ दिनों तक नित्य करे। बच्चे को आराम अवश्य होगा।

६. सर्व-विघ्न-निवारक मन्त्र—ॐ हूँ खों जं रं लं बं क्रों ऐं ह्रीं महा-काल भैरव सर्व-विघ्न-नाशय नाशय ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि : पहले श्रीकाल - भैरव जी के पास धूप-दीप-फल-फूल-नैवेद्य आदि यथा-शक्ति चढ़ाए। फिर उक्त मन्त्र का एक माला जप करे। ऐसा तब तक करे, जब तक ध्येय-सिद्धि न हो। यह मन्त्र मुझे गिरनार के एक नाथ-पन्थी साधु के सत्सङ्ग से मिला था। मन्त्र को एक कागज के ऊपर लिख कर पूजा - स्थान में रख लेना चाहिए। जिससे मन्त्र-जप में भूल न हो।

१०: सिद्धि-प्रदायक महा-काल भैरव जी का मन्त्र—ॐ हं ष लं ग फ सं ख महा-काल भैरवाय नमः।

विधि : शुभ मुहूर्त में अथवा जब आपकी राशि का चन्द्र बली हो, तब उक्त मन्त्र का २१ हजार जप करे। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। बाद में नित्य १ माला जप करता रहे, तो श्री महा - काल भैरव जी प्रसन्न होकर अभीष्ट-सिद्धि प्रदान करते हैं। जप के साथ कामनानुसार ध्यान भी करना चाहिए।

(१५)

विविध मन्त्र-प्रयोग

१. शस्युत्थापन - चेटक—ॐ नमो हुङ्कालूं, चौसठ योगिनी हुङ्कालूं। बावन वीर कार्तिक अर्जुन-वीर बुलाऊँ। आगे चौंसठ वीर। जल बन्ध, बल बन्ध। आकाश बन्ध, पौन बन्ध। दीन देश की दिशा बन्ध। उत्तरे तो अर्जुन राजा, दक्षिण तो कार्तवीर्य राजा। आसमान में बावन वीर गाजै, नीचे तो चौंसठ योगिनी विराजै, परि तो राशि चलावै छवन्यॉं मेरूँ राशि उडावै। एक बन्ध आसमान में लगाया, दूजा बन्ध राशि घर में ल्याया। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा ! फुरो मन्त्र, ईश्बरी वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु को।

विधि : पहले शावर-विधि से सिद्ध करे। फिर प्रयोग हेतु दीपावली की रात्रि को वन में जाए और बकरे की मेंगनी लाए। उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अन्न की जिस राशि के ऊपर रखेगा, वह राशि उसके घर में आ जाएगी।

पाठ-भेद—उक्त मन्त्र में परि=पीर और पौन=पवन पाठ-भेद मिलता है।

२: अन्न की राशि उड़ाने का मन्त्र—(१) ॐ नमो हङ्कालो ! चौसठ योगिनी, बावन वीर, कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊँ, आगे चौसठ वीर। जल बाँधूँ आकाश बाँधूँ, बाँधूँ तारा-चन्द। ज्योति बाँध, सूरज को लाऊँ, करूँ अग्नि को मन्द। चारों दिशा का वीर बोलाऊँ, चौसठ जोगिनी आवें। राशि नाज की फिर रहीं, पावै मेरे घर सब आवें।

सत्य-नाम आदेश गुरु को । मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच ।

विधि : पहले शाबर-विधि से उक्त मन्त्र को सिद्ध करे । बाद में प्रयोग करे । जिस खेत से अन्न की राशि उड़ानी हो, उस खेत की राशि में उक्त मन्त्र को पढ़कर बकरे की मेंगनी रख आए, तो पीछे से सब राशि घर में चली आएगी ।

(२) ॐ नमो हड्कालौं, चौसठि योगिनी हड्कालौं । बावन वीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊँ, आगे चौसठि वीर । जल बन्धि, बल बन्धि । आकाश बन्धि, तीन देश की दिशा बन्धि । उत्तर तो अर्जुन राजा, दक्षिण तो कार्तिक बिराजै, आसमान लौं वीर गाजै, नीचे चौसठि योगिनी बिराजै । पीर तो पास चली (चलि) आवै, छप्पन भैरों राशि उड़ावै । एक बन्ध आसमान में लगाया, दूजै बाँधि राशि घर में लाया । शब्द साँचा, पिण्ड काँचा । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे । फिर प्रयोग में लाए । 'दीपावली' की रात्रि में वन जाकर मूसा की मींगनी लाए । उसे ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर राशि के ऊपर रख आए । पीछे से राशि उड़ कर चली आएगी । इसमें से आधी राशि 'दान' कर देना चाहिए ।

(३) ॐ नमो आदेश गुरु को हड्कालो । चौसठ योगिनी बुलाए, बावन पीर (वीर), कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊँ, आनि चोसठि वीर । जल बाँधि, जल बाँधि । उत्तर बिराजे अर्जुन राजा, दक्षिण बिराजे कार्तिक । विराजे आसमान सौं वीर गाजे, नीचे चौसठ योगिनी विराजे । पीर तो पास चलि छप्पन भैरो राशि उडाए । एक बाँधि

आसमान उडायै, दूजे बाँधि मेरे घर में लाए। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : दिवाली की रात को जङ्गल या खेत में चूहे की मँगनी लाए और ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर राशि पर रखे। पीछे न देखे। राशि उड़ती हुई घर में चली आएगी। आधी राशि धार्मिक कार्यों में खर्च करे। यह मन्त्र क्रमाङ्क (२) की भाँति ही है। पाठ-भेद व विधि-भेद होने के कारण अलग से दिया गया है।

३. पैसा उड़ाने का मन्त्र—ॐ हनुमन्त ! वीर हुआ हुलासा, चल रे पैसा। रुखा बिरखा तेरा वासा। सबकी दृष्टि बाँध दे, मोहि मेरा मुख जोवै। सब कोय बाद करता, बादि रोवें भरी सभा में मोहि बिगोय।

विधि: पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में धूलि को अभिमन्त्रित कर पैसे पर मारने से पैसा अदृश्य हो जाता है।

४. पैसा रोपने का मन्त्र—ॐ नमो काली देवी ! किलकिला भैरो, चौंसठ योगिनी, बावन वीर। ताँबा का पैसा, वज्र की लाठि। मेरा कीला चले न साथी तले, भैरों किलकिल उपर हनुमन्त गाजै। मेरा कीला पैसा चले, तो गुरु गोरखनाथ लाजै। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में कङ्कड़ी को उक्त मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित कर पैसे पर मारने से पैसा जम जाता है।

५. ढाल रोपने का मन्त्र—ॐ नमो चौंसठ योगिनी-बावन वीर। छप्पन छत्तर पीर आय, बैठो ढाल के तीर। हाली हले, न चाली चले। बाठ शत्रु को मिले यह ढाल। चले हले न, जाहर पीर की दुहाई।

विधि : पहले उपयुक्त काल में मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में स्वच्छ जल को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मन्त्र पढ़ते हुए ढाल के ऊपर डाले, तो ढाल हिलेगी पर चलेगी नहीं।

६. तलवार की धार बाँधने का मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ८, पृष्ठ ६२, मन्त्र २७ देखिए। ऐसा ही एक दूसरा मन्त्र है, जो यहाँ प्रस्तुत है।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

ॐ नमो धार-धार, अधर कषार बाँधो सात बार। आग बाँधो तीन बार, कटे बार न भीगे जोर। खाण्डा की धार में ले गया दुश्मन बीर।

विधि : पहले मन्त्र को सिद्ध करे। बाद में मन्त्र पढ़ते हुए रास्ते की धूल लेकर उसे उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और तलवार की धार के ऊपर डाले। इससे तलवार की धार बंध जाती है।

७. कड़ाही बाँधने का मन्त्र

[शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ३, पृष्ठ ४१, क्रमाङ्क ५० और भाग ५, पृष्ठ १३, मन्त्र १० देखिए। यहाँ दूसरा नया 'शाबर - प्रयोग, प्रस्तुत है।]

ॐ नमो जल बाँधूँ, जलवाई बाँधूँ, बाँधूँ कुवा वाही। नौ सौ गाँव का वीर बोलाऊँ, बाँधे तेल कड़ाही। जती हनुमन्त की दुहाई। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य-नाम आदेश गुरु को।

विधि : रास्ते में से ७ कङ्कड़ लाकर एक - एक पर उक्त मन्त्र सात-सात बार पढ़कर कड़ाही में मारे, तो चाहे जितनी अग्नि जलाए, कड़ाही गर्म न होगी।

८. हाँडी बाँधने का मन्त्र—खनाह की माटी, चरी का पानी। गध चढि, भीष यलानी। काची हाँडी, काची थाली। ऊपर जडी वज्र की ताली। तुले भैरों किलकिलें, ऊपर नरसिंह गाजे। मेरी बाँधे हांडी उकल, तो गुरु

गोरखनाथ की लाज। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उपर्युक्त मन्त्र ७ के समान।

९. कागज की कड़ाही में पुआँ उतारने का मन्त्र—ॐ नमो धनी का तेल, कागज की कड़ाई जल बलै, तो यती हनुमन्त की दुहाई। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : चलती घानी का तेल लाकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कागज की कड़ाही में भरे। फिर उसे चूल्हे पर चढ़ा कर उसमें पुआँ सेके, तो कागज की कड़ाही नहीं जलेगी।

१०. तुरही बांधने का मन्त्र—ॐ नमो बादी आया, बाद करता कूँ बैठा ? बड़-पीपल की छाया रहु रे ! बादी बाद न कीजै, बाँधूँ तेरा कण्ठ। अरु काया बाँधूँ, पुङ्गी अरु नांद बाँधूँ। योगी अर साधु बाँधूँ। कण्ठ की पुङ्गी, अरु मसान की बानी। अब तो रह रे पुङ्गी सुजान। तलै बांधै नरसिंह, उपर हनुमन्त गाजै। मेरी बांधि पुङ्गी बाजै, तो गोरखनाथ लाजै। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : एक लाख 'जप' से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। फिर खेल करने के समय २१ दानें उड़द के मँगाकर उस पर २१ बार मन्त्र पढ़े और एक-एक उड़द पर मन्त्र पढ़कर तुरही में मारे, तो तुरही बँध जाएगी और बजेगी नहीं।

११. क्षुधा-नाशन मन्त्र—(१) ॐ गणपति, वीर बसै मसान। जो मैं मांगौ, सो तुम आनु। पांच लडुवां, सिर सिन्दूर। त्रिभुवन मांगे, चम्पे के फूल। अष्टकुलि नाग मोहुँ, नौ नारि बहुतरी (बहुतरि) कोठा मोहुँ। इन्द्र की

सभा मोहुँ, आवती - आवती इस्त्री मोहुँ। जाता - जाता पुरुष मोहुँ। डांवा अङ्ग बसै नरसिंह जी वने क्षेत्रपाल। जै आवै मारमर करतो, सो जाह हमारे पाऊँ परन्ता। गुरु की शक्ति, हमारी भक्ति। चलो मन्त्र, आदेश गुरु को।

विधि : उक्त मन्त्र पढ़ते हुए वन-कपास की समिधा में घृत, खाण्ड और गुग्गुल से ३५१ आहुतियाँ दे, तो भूख-प्यास का कष्ट दूर होता है।

(२) ॐ सां सं शरीरं अमृतमावाय स्वाहा।

विधि : १० हजार 'जप' से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है। प्रयोग हेतु 'केकर' के तथा 'अपा-मार्ग' के बीज बराबर मात्रा में लेकर पीस कर चूर्ण बनाए। फिर उसे मिठाई में मिला कर गोली बनाए। इन गोलियों को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। बाद में तांबे या लोहे के ताबीज में इन गोलियों को भर कर मुँह में धारण करने से भूख-प्यास नहीं लगती।

विशेष : उक्त प्रयोगों को मात्र पढ़कर 'प्रयोग' न करे। वन-स्पति व मन्त्र के जानकार का परामर्श आवश्यक है। 'केकरे के बीज' से क्या तात्पर्य है, ज्ञात नहीं है। यदि किसी को ज्ञात हो, तो सूचित करेंगे।

१२. जुआ जीतने का मन्त्र व तन्त्र

[जुआ खेलना या खेलवाना कानूनी अपराध है। मात्र संरक्षण एवं शोध हेतु यहाँ मन्त्र दिए जा रहे हैं।]

(१) ॐ नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं बानरी विजयापति स्वाहा।

विधि : 'दीपावली' की आधी रात को पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर १ से १० माला उक्त मन्त्र का 'जप' करे। बाद में उक्त मन्त्रोच्चार सहित—कादम्बरी के फूल से 'हवन' करे। फिर एक फूल और लेकर उसको ७ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दाएँ हाथ में बांधे और जुआं खेलने को जाए।

(२) श्री सूर्याय नमः ।

विधि : पहले 'सूर्य'-ग्रहण के समय उक्त मन्त्र का १०,००० 'जप' कर मन्त्र सिद्ध करे। फिर मन्त्र पढ़कर जुआ खेलने जाए। जीती हुई धन-राशि का कुछ निश्चित भाग शुभ-कार्य में व्यय करे।

१३ः अचानक द्रव्य-प्राप्ति का मन्त्र

श्रीमहा-लक्ष्मीभ्यो नमः ।

विधि : श्रद्धा-पूर्वक यम-नियम-सहित एकान्त मन्दिर में या जल से भरी नदी के तट पर बैठकर प्रति-दिन ११ माला उक्त मन्त्र का 'जप' करे। इससे महा-लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और अचानक द्रव्य-प्राप्ति होती है। द्रव्य-प्राप्ति हेतु साधक को क्रिया - शील भी रहना चाहिए।

विशेष : 'श्रीमहा-लक्ष्म्यै नमः' ऐसा मन्त्र भी मिलता है।

ज्योतिष-क्षेत्र में नजर लगना

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अरविन्द जोशी
१५ बी, प्रेमनगर कालोनी, इन्दौर (म. प्र.)

'ज्योतिष' - विज्ञान पर आधारित दर्शन है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक ज्योतिष उसकी दैनिक गति - विधियों का निर्णायक आकलन करता आया है। 'नजर लगना' सामान्यतः ज्योतिष के क्षेत्र में नहीं माना जाता, किन्तु ऐसा है नहीं। 'नजर लगने' के सम्बन्ध में भी 'ज्योतिष' के स्पष्ट वैज्ञानिक सिद्धान्त और दर्शन हैं।

'नजर' है क्या ? बच्चों, जवान, बूढ़ों को ही नजर लगती है, ऐसा नहीं है। पशुओं, पेड़ - पौधों, मकान, दूकान, मशीनरी, वाहन आदि पर भी 'नजर' लगती है।

'नजर' कैसे लगती है ? लगने के बाद उसका क्या प्रभाव होता है ? 'भारतीय ज्योतिष' इस सम्बन्ध में क्या कहता है ?

पहले देखें, 'नजर' किन्हें अधिक लगती है :

१. जिसका लग्न कमजोर हो।

२. जिसका शनि, राहु, गुरु, मङ्गल कमजोर हो या किसी शत्रु ग्रह से पीड़ित हो।

३. जिसकी राशि कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ हो।

४. जिसके दूसरे, चतुर्थ, ७ वें, ८ वें, ६ वें और १२ वें स्थान पर शनि हो। किसी ग्रह की चौथी, ८ वीं अथवा १२ वीं दृष्टि पड़ रही हो।

५. जिसका शुक्र पीड़ित हो या शत्रु ग्रह से द्रष्ट हो।

६. राहु और केतु केन्द्र में, अथवा दूसरे या ८ वें स्थान पर हों।

सामान्यतः भारतीय परिवार में किसी भी व्यक्ति या बच्चे का स्वास्थ्य खराब हो, तो पहले देशी अर्थात् घरेलू उपचार किया जाता है। स्वास्थ्य में सुधार न होने पर 'नजर उतारी जाती है।' फिर भी स्वास्थ्य में लाभ नहीं हो पाता, तो डाक्टर या वैद्य की शरण में जाते हैं।

मैंने कई ट्रकों के पीछे लिखा हुआ देखा—"बुरी नजरवाले तेरा मुँह काला।" 'पुराना जूता लटकते हुए' अथवा ऐसी 'डरावनी आकृति' भी ट्रक के पीछे बनाई जाती है, जिस पर एकाएक 'नजर जाए।'

'नजर' कैसे लगती है ?

१. 'नजर' उन व्यक्तियों की अधिक लगती है, जो अन्दर-ही-अन्दर ईर्षा करते हैं और ऊपरी रूप से प्रेम का नाटक करते हैं। आपकी मौज-मस्ती, रहन-सहन, पहनावा, खान - पान सामनेवाले को अच्छा नहीं लगता, लेकिन वे अपनी प्रतिक्रिया छिपाए रहते हैं।

२. बच्चा चञ्चल प्रकृति का है, देखने में सुन्दर है। सदा साफ-सुथरा रहता है। यदि कोई स्त्री या व्यक्ति ऐसे बच्चे को टोंक दे या टकटकी लगाकर देखे– खाते-पीते, खेलते समय भी कोई इस प्रकार देखे, तो समझो—'नजर लग गई !'

३. भोजन करते समय, भोजन की थाली पर किसी अतृप्त या भूखे व्यक्ति की 'नजर' पड़ने पर 'नजर लगने की आशङ्का' बनी रहती है। कभी भोजन करते समय कोई टोंक दे या कह दे—'दिन भर खाता ही रहेगा !' या 'थाली में ढेर सारा क्यों ले रखा है ?'

४. नए कपड़े पहनने पर कोई टकटकी लगाकर देखे या टोंक दे– 'यार, बहुत जँच रहे हो !' यह 'कपड़े आपके व्यक्तित्व को चार चाँद लगा रहे हैं !' अथवा 'आज किस पे बिजली गिराओगे ?'

५. कोई वृक्ष अधिक फल दे रहा हो और कोई बारम्बार कहे कि—'हमारे वृक्ष की अपेक्षा आपके वृक्ष पर ज्यादा फल लगे हैं' या 'बहुत अच्छे फल दे रहा है !' आप अनुभव करेंगे कि अगले मौसम से वृक्ष कम फल देगा अथवा सूखने लगेगा।

६. इसी प्रकार दूकान, मशीनरी, वाहन इत्यादि औसत से अधिक अच्छी स्थिति में है और ऐसा व्यक्ति जिसका व्यापार, मशीनरी, वाहन ठीक से नहीं चल रहा है, 'टोंके या खराब नजर से देखे।'

७. आपका मकान सर्व-सुविधा-युक्त है, साफ - सुथरा है, अच्छा दिखता है, बाहर और अन्दर लुभावना लगता है। कोई व्यक्ति सदा टकटकी लगाकर, बुरी भावना से अथवा जलन के साथ देखे या देखता

हो, तो समझो 'मकान को नजर लग गई' और परिवार के सदस्ज या तो बीमार रहने लगेंगे अथवा कोई-न-कोई कष्ट बना ही रहेगा।

८. कभी-कभी 'नजर' अपने माता-पिता या निकट-तम सम्बन्धियों की भी लग जाती है।

'नजर' से बचाव के उपाय :

१. माँ द्वारा बच्चे को 'काला टीका' या 'काजल' माथे के एक तरफ या गाल पर लगाना अथवा 'आँखों में काजल' लगाना।

२. नए कपड़े पहनते समय 'एक तार' या 'धागा' निकाल कर 'अग्नि में जलाना' या कपड़े पर 'काला दाग' लगा देना।

३. नए कपड़े पहनने के बाद अपने 'इष्ट-देवता को नमस्कार' कर कहें कि –'आपकी कृपा से नए कपड़े धारण कर रहा हूँ।'

४. आँखों पर 'काली फ्रेम' का चशमा पहनना।

५. प्रति-दिन प्रातः उठने पर बड़े-बूढ़ों के आशीर्वाद लेना।

६. किसी से अधिक समय तक 'नजर न मिलाना।'

७. भोजन करते समय परिवार के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति यदि उपस्थित हो या आ जाए, तो उसे भी भोजन पर आमन्त्रित करना या उसे 'खाने के लिए कुछ-न-कुछ अवश्य देना।' ऐसी भी मान्यता है कि अन्य व्यक्तियों के सामने 'खाना-पीना नहीं चाहिए।'

८. जब कोई नई वस्तु बनाई जाती है, जैसे अचार, पापड़ इत्यादि, तो परिवार के सदस्यों को खिलाने से पूर्व 'पास - पड़ोस या मन्दिर' में जाकर देना।

९. मकान पूर्ण रूप से बन जाए, तब 'मुख्य द्वार' की तरफ या 'सामने का थोड़ा-सा भाग अपूर्ण' रख दे, अथवा छत के आगे की तरफ एक 'काला मटका' आड़ा या कोई 'डरावनी आकृति' अथवा नक्काशी बनाकर रख दे, जिससे प्रथम दृष्टि उसी पर पडे।

१०. कारखाने में नई मशीन पर 'सिन्दूर का त्रिशूल' बनाना या ऐसी 'भद्दी आकृति' बनाना, जिससे प्रथम दृष्टि उसी पर पड़े।

११. दूकान पर 'काले घोड़े की नाल' उल्टी मुख्य दरवाजे पर बीचो - बीच लगा दे। अथवा एक धागे में सात हरे मिर्च और नींबू

पिरोकर मुख्य दरवाजे पर लटका दे या काला कपड़ा अथवा डरावनी आकृति लगा दे।

१२. अपनी वस्तु या दूकान अथवा मशीनरी की प्रशंसा बार-बार कभी किसी के सामने न करे।

१३. फल-दार वृक्ष पर 'काला कपड़ा' या 'पुराना फटा जूता' लटका दे।

१४. नए वाहन के बोनेट पर या पीछे 'काला कपड़ा, फटा पुराना जूता, खाली डिब्बा' अथवा डरावनी आकृति लगा दे।

१५. भारतीय संस्कृति के अनुसार घर में भोजन तैयार हो जाने के बाद इष्ट-देव को नैवेद्य लगाते हैं। फिर गाय, कुत्ते, पक्षी, भिखारी को भोजन देकर ही परिवार को भोजन परोसा जाता है। इससे भोजन सुरुचि-पूर्ण, स्वास्थ्य-वर्धक हो जाता है।

'नजर' उतारने के उपाय :

'नजर' उतारने के अनेक उपाय हैं। यथा—

१. बच्चे ने दूध पीना या खाना छोड़ दिया हो, तो रोटी या दूध को बच्चे पर से 'आठ बार उतार कर' कुत्ते या गाय को खिला दे।

२. नमक, राई के दाने, पीली सरसों, मिर्च, पुरानी झाड़ू का एक टुकड़ा लेकर 'नजर' लगे व्यक्ति पर से 'आठ बार उतार कर अग्नि में जला' दे। 'नजर' लगी होगी, तो मिर्चों की धाँस नहीं आएगी।

३. जिस व्यक्ति पर शङ्का हो, उसे बुला कर 'नजर' लगे व्यक्ति पर उससे हाथ फिरवाने से लाभ होता है।

४. पश्चिमी देशों में ऐसा देखा गया है कि जब कोई व्यक्ति अपनी बहुत प्रशंसा करने लगता है और उसे डर लगने लगता है कि 'नजर न लग जाए' तो वह 'टच वुड' कह कर लकड़ी के फर्नीचर को छू लेता है। ऐसी मान्यता है कि उसे 'नजर' नहीं लगेगी।

५. गिरजा-घर से पवित्र जल लाकर पिलाने का भी चलन है।

६. इस्लाम धर्म के अनुसार 'नजर' वाले पर से 'अण्डा' या 'जानवर की कलेजी' उतार कर 'बीच चौराहे' पर रख दे। ऊपर से पानी डाल दे। दरगाह या कब्र से फूल और अगर-बत्ती की राख लाकर 'नजर' वाले के सिरहाने रख दे या खिला दे।

७. एक लोटे में पानी लेकर उसमें नमक, खड़ी लाल मिर्च डालकर आठ बार उतारे। फिर एक थाली में दो आकृतियाँ– एक काजल से, दूसरी कुमकुम से बनाए। लोटे का पानी थाली में डाल दे। एक लम्बी काली या लाल रङ्ग की बिन्दी लेकर उसे तेल में भिगोकर 'नजर'-वाले पर उतार कर उसका एक कोना चिमटे या सँड़सी से पकड़ कर नीचे से जला दे। उसे थाली के बीचो-बीच ऊपर रखे। गरम-गरम काला तेल पानीवाली थाली में गिरेगा। यदि नजर लगी है, तो छन-छन आवाज आएगी, अन्यथा नहीं।

८. एक नीम्बू लेकर आठ बार उतार कर, काट कर, फेंक दे।

९. चाकू से जमीन पर एक आकृति बनाए। फिर चाकू से 'नजर-वाले' व्यक्ति पर से एक-एक कर आठ बार उतारता जाए और आठों बार जमीन पर बनी आकृति को काटता जाए।

१०. गो-मूत्र पानी में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाए और उसके आस-पास पानी में मिलाकर छिड़क दे। यदि स्नान करना हो, तो थोड़ा स्नान के पानी में भी डाल दे।

उक्त उपायों से 'नजर' से पीड़ित व्यक्ति को आश्चर्य-जनक रूप से लाभ होता है।

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६